

तेरह महीने वाला एक देश इथियोपिया



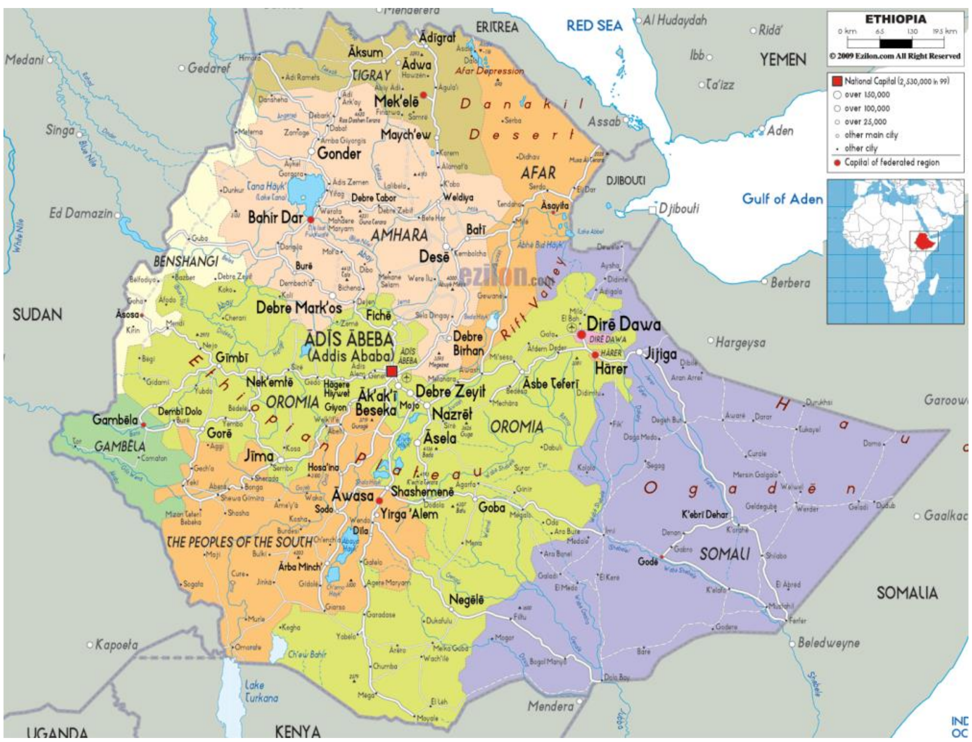
चयन सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Terah Maheene Wala Ek Desh Ethiopia (Lone country of Thirteen Months)
Cover Page picture: Obelisk of Axum, Ethiopia
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Map of Ethiopia



विंडसर, कैनेडा

जून 2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका.. **Error! Bookmark not defined.**
तेरह महीने वाला एक देश इथियोपिया 7
इस पुस्तक के पाठकों से.. 9
1 इथियोपिया का इतिहास.. 12
2 इथियोपिया–जहाँ सूरज तेरह महीने चमकता है 41
3 अविसीनिया.. 61
इथियोपिया के बारे में कुछ विशेष बातें 85
4 ऐनसैटः अवीसीनियन केला.. 87
5 गुरागे – अफ्रीका के पर्वतीय प्रदेशों के मज़दूर.. 91
6 इथियोपिया के टूकास की कहानी 94
7 इथियोपिया के टूकास की कहानी–2.. 97
8 लूसी इन द स्काइ... 115
9 इथियोपिया के हस्तलेख.. 127
10 इथियोपिया में डाक टिकिटों का जन्म 139
11 फालाशा साहित्य में मोसेस की मृत्यु 148

इतिहास सीरीज़

प्रारम्भ में हमने एक सीरीज़ प्रारम्भ की थी "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिसके अन्दर हमने संसार के कई देशों की लोक कथाऐं और दंत कथाऐं प्रकाशित की थीं। ऐसा करते समय देखा गया कि एक तरह की कहानी कई देशों में कही जा रही है तो एक और सीरीज़ बनायी गयी "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कहानियाँ शामिल की गयी थीं जिनकी तरह की कहानियाँ और दूसरे देशों में भी उपलब्ध थीं। इस सीरीज़ में **20** से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। इसके बाद लोक कथाओं की कुछ क्लासिक पुस्तकों का भी अनुवाद किया गया। इनकी संख्या भी **30** से ऊपर पहुँच गयी।

अब यह एक नयी सीरीज़ प्रारम्भ की जा रही है "इतिहास" नाम की सीरीज़। यह बहुत ही मजेदार सीरीज़ है। इस पुस्तक में दी गयी कहानियाँ लोक कथाऐं नहीं हैं और न ही कहानियाँ हैं बल्कि सच्ची घटनाऐं हैं। इतिहास हमारे उस आधुनिक जीवन शैली की नींव डालता है जिस पर आज हम खड़े हुए हैं और जिस पर हमारा भविष्य बनता है। इतिहास हमारी पृथ्वी का भूगोल बनाता है। इतिहास हमारा समाज बनाता है। इतिहास हमारी भाषा बनाता है। इतिहास हमारी सभ्यता और संस्कृति बनाता है।

पर यह पुस्तकें इतिहास की भी नहीं है क्योंकि इसमें ऐसी एतिहासिक घटनाऐं भी नहीं दी गयीं हैं जो आपको इतिहास की पुस्तकों में मिलें। यहाँ केवल वही विषय सामग्री दी गयी है जो इधर उधर मिलनी कठिन है या नहीं भी मिल सकती है।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब पुस्तकें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो इसलिये ये कहानियाँ यहाँ सरल बोलचाल की हिन्दी भाषा में लिखी गयी है। कहीं कहीं विदेशी विषय सामग्री भी है तो उनमें उनके चरित्रों और स्थानों के नाम सही उच्चारण जानने के लिये अंग्रेजी में फुटनोट्स में दिये गये हैं। इसके अलावा भी बहुत सारे शब्द भारतीयों के लिये नये होंगे वे भी चित्रों द्वारा समझाये गये हैं।

ये सब पुस्तकें "इतिहास सीरीज़ं" के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में आप सबके ज्ञान के घेरे को बढ़ायेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
जून **2022**

तेरह महीने वाला एक देश इथियोपिया

कुछ समय पहले हमने इथियोपिया की लोक कथाऐं नाम से तीन पुस्तकें प्रकाशित की थीं – "इथियोपिया की लोक कथाऐं–1" और "इथियोपिया की लोक कथाऐं–2" और "इथियोपिया की लोक कथाऐं–3"।[1] क्योंकि अफ्रीका के कुछ देशों को छोड़ कर उनके दूसरे देशों का लिखा हुआ और उनके बारे में लिखा हुआ साहित्य तो अंग्रेजी में भी बहुत कम मिलता है तो हिन्दी में मिलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता इसलिये यह निश्चय किया गया कि उसके बारे में हिन्दी में कुछ लिखा जाये।

सो सबसे पहले इथियोपिया की लोक कथाओं के बारे में तीन पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। हमें यह जान कर बहुत प्रसन्नता हुई कि उन तीनों ही पुस्तकों का बड़े ज़ोर शोर से स्वागत हुआ और वे बहुत पसन्द की गयीं। इसके बाद इथियोपिया की रानी मकेडा और सोलोमन के बारे में दो पुस्तकें लिखी गयी। वे भी बहुत लोकप्रिय हुईं।

इथियोपिया की अब हम यह छठी पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं। यह पुस्तक इथियोपिया देश के बारे में लिखी हुई है। यह पुस्तक उन पाचों पुस्तकों की पृष्ठभूमि तैयार करती है और इथियोपिया के बारे में बताती है। अगर यह पुस्तक उन कहानियों के पढ़ने से पहले पढ़ ली जाये तो वे कहानियॉ ज़्यादा अच्छी तरह से समझ में आयेंगी।

वैसे तो इथियोपिया के बारे में आजकल इन्टरनैट पर ही बहुत जगह और बहुत कुछ मिल जायेगा पर इस पुस्तक में उसके बारे में वह सब बातें बताने का उद्देश्य नहीं है। इस पुस्तक में बहुत सारी बातें ऐसी बतायी गयी हैं जो केवल खुद वहॉ जाने, रहने, वहॉ के स्थानीय लोगों से बात करके तथा उन लोगों के लेखों को पढ़ कर ही पता चल सकती हैं जो वहॉ पर रह कर आये हैं।

इस पुस्तक में पहले दो लेख इथियोपिया देश और उसकी संस्कृति के बारे में हैं जिनसे वहॉ के लोगों और उनके रहन सहन के बारे में पता चलता है। क्योंकि ये दोनों लेख वहॉ आये हुए यात्रियों के लिखे हुए वर्णनों से लिये गये हैं ये कुछ पुराने अवश्य हैं पर वहॉ के लोगों से बात करने पर पता चला कि केवल कुछ आधुनिक शहरों को छोड़ कर वहॉ की बहुत सारी जगह अभी भी ऐसा ही होता है। आधुनिक सभ्यता का असर वहॉ अभी भी बहुत कम है पर धीरे धीरे वह बढ़ रहा है।

उनके बाद कुछ और लेख ऐसे हैं जो वहॉ के बारे में अजीबो ग़रीब खबर देते हैं।

---

[1] "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1", "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2", "Ethiopia Ki Lok Kathayen-3", and "Sheba Ki Raanee Makeda Aur Raja Solomon" – all written by Sushma Gupta in Hindi Language. Both "Ethiopia Ki Lok Kathayen-1" and "Ethiopia Ki Lok Kathayen-2" have been published by Prabhat Prakashan, India in 2016. The third book "Sheba Ki Rani Makeda Aur Raja Solomon" and "Raja Solomon" have also been published by Prabhat Prakashan in 2018.

इस पुस्तक के पाठकों से

वैसे तो इथियोपिया के बारे में इन्टरनेट पर बहुत कुछ मिल जायेगा पर इस पुस्तक को छापने का उद्देश्य उस सामान्य रूप से मिलने वाली सामग्री को दोबारा लिखने का नहीं है। उस देश के बारे में एनसाइक्लोपीडिक विवरण देना भी इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है।

इस पुस्तक का उद्देश्य लोगों को इथियोपिया के बारे में उन बातों को बताना है जो केवल वहाँ जा कर या उन क्षेत्रों में जा कर रहने से ही पता लग सकती हैं जहाँ की वे हैं।

पिछली एक दो शताब्दियों में कई लोगों ने इथियोपिया की यात्रा की है जो न केवल वहाँ की राजधानी एडिस अबाबा[2] या एक दो बड़े जाने पहचाने शहरों में ही हो कर आये हैं बल्कि उन्होंने अन्दर के गाँवों की भी यात्राएँ की है।

उन्होंने अपनी यात्राओं के अनुभव लिखे हैं। ये लेख इथियोपिया के अन्दर की वे बातें बताते हैं जो व्यक्तिगत रूप से अनुभव की गयी हैं और जिनका कहीं और मिलना कठिन है।

क्योंकि वे विवरण छपे हुए नहीं हैं इसलिये संसार की जनता को सामान्य रूप से उपलब्ध नहीं हैं और लोग ये बातें तब तक नहीं जान सकते हैं जब तक कि वे उनकी यात्रा के विवरण न पढ़ें।

---

[2] Addis Ababa – means New Flower. Present capital of Ethiopia.

इसलिये ये विवरण संसार के लोगों के लिये उनकी पहुँच से बाहर हैं।

यहाँ का विवरण उन्हीं यात्राओं के विवरणों से लिया गया है। वे विवरण सामान्य जनता को अंग्रेजी भाषा में भी मिलने में बहुत कठिनाई है फिर हिन्दी भाषा में मिलने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

आजकल के समय में, यानी **2010** के बाद में, इनमें से कुछ बातें शत प्रतिशत सही नहीं भी हो सकती हैं पर कुछ बड़े शहरों को छोड़ कर जहाँ शिक्षा और आधुनिक समय का प्रभाव बढ़ रहा है, गाँवों में ये रीति रिवाज अभी भी प्रचलन में हैं।

मैं इथियोपिया में **1989** से **1992** तक थी और वहाँ मैं ऐडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ इथियोपियन स्टडीज़[3] के पुस्तकालय में काम करती थी।

अपने उसी कार्य काल में मैं वहाँ के कुछ ऐसे डाक्यूमेन्ट्स के सम्पर्क में आयी जो इथियोपिया की अन्दरूनी तस्वीर दिखाते थे। उनमें से कुछ को मैं हिन्दी में लिखे बिना न रह सकी।

उस समय मैंने ये विवरण केवल अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये लिखे थे पर आज मुझे उनको छाप कर साधारण जनता तक पहुँचाने में बहुत अच्छा लग रहा है। आशा है कि आप सबको भी इन्हें पढ़ कर अच्छा लगेगा।

[3] Institute of Ethiopian Studies Library, Addis Ababa University, Addis Ababa, Ethiopia

एक बार हम लोग अपनी एक मित्र मंडली में बैठे थे तो इथियोपिया की बात छिड़ गयी। उस समय मैंने उनको इथियोपिया के बारे में कुछ ऐसी बातें बतायीं जिनको सुन कर वे हैरान रह गये और कहने लगे कि यद्यपि उनको इथियोपिया के बारे में काफी कुछ मालूम था पर ऐसी बातें तो इथियोपिया के बारे में उन्होंने कभी सुनी ही नहीं थीं।

फिर उन्होंने पूछा कि क्या वह सब मेरे पास लिखा हुआ है? मैंने जवाब दिया "हाँ" तो उन्होंने मुझे सलाह दी कि मुझे यह सब जनता का ज्ञान बढ़ाने के लिये प्रकाशित करवा देना चाहिये।

क्योंकि जिस समय यह सब लिखा गया था उस समय इन लेखों को प्रकाशित करवाने का कोई विचार नहीं था इसलिये इन लेखों में से हर लेख का प्रसंग और सन्दर्भ लिखना आवश्यक नहीं समझा गया पर प्रसंग और सन्दर्भ न होने के कारण ये लेख झूठे नहीं समझे जाने चाहिये।

इस पुस्तक में कई अजीबोगरीब लेख हैं जो आरम्भ में इथियोपिया से सम्बन्धित न भी लगें पर वे सभी किसी न किसी तरह से उससे सम्बन्धित हैं।

सो यह पुस्तक उसी सलाह का परिणाम है। आशा है कि यह पुस्तक आप सबको इथियोपिया को और अधिक गहरायी से समझने में सहायता प्रदान करेगी।

1 इथियोपिया का इतिहास[4]

सबसे पहले हम इथियोपिया के इतिहास से शुरू करते हैं।

इस देश का पुराना नाम अबिसीनिया है। इस देश का नाम अबिसीनिया कैसे पड़ा? यहॉ के प्राचीन लोग तो अफ्रीका के मूल निवासी ही लगते हैं परन्तु ईसा से लगभग **800–900** वर्ष पूर्व यमन देश से अरब की कुछ जनजातियॉ लाल सागर पार करके अफ्रीका के पूर्वी तट पर आयीं और धीरे धीरे उन्होंने उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में अपना अधिकार जमा लिया।

इनमें से एक जनजाति जिसका नाम हबशत[5] था उसने इस देश को हबीश[6] का नाम दे दिया और इससे सारे यूरोप के लोगों ने इसे अबिसीनिया[7] का नाम दे दिया। अरब देश में यह देश अभी भी इसी नाम से जाना जाता है।

एक दूसरी जनजाति जिसका नाम अगाज़ी[8] था उसने इनको अपनी भाषा गीज़ दी जो यहॉ की प्राचीन भाषा थी पर इनकी धार्मिक भाषा अभी भी यही है। इनका सारा प्राचीन साहित्य इसी भाषा में लिखा हुआ है और यही भाषा आज भी चर्च में प्रयोग की

[4] Ethiopia
[5] Habashat – maybe “Habshee” is the corrupted form of Habshat
[6] Habesh – pronounced as “Habeesh” perhaps these people got known as “Habshee” from the same word.
[7] Abyssinia
[8] Agazi tribe taught them their own language Geez.

जाती है। पर यह भाषा केवल चर्च तक ही सीमित है बोलचाल में नहीं। आजकल इनकी बोलचाल की भाषा अम्हारिक[9] है।

इन जनजातियों ने यहॅा के मूल निवासियों को धीरे धीरे जीत लिया। उनसे विवाह भी किये तथा उनको अपनी भाषा व संस्कृति सिखायी। यहीं से अबिसीनिया के लोगों का प्रारम्भ हुआ जिनकी संस्कृति पर तो अरब की छाप है परन्तु रक्त अधिकतर अफ्रीका का ही है।

चाहे इनकी भाषा और संस्कृति भले ही अरब के लोगों जैसी है परन्तु अरब के लोगों के में ये लोग अभी भी काले[10] के नाम से ही जाने जाते हैं।

अबिसीनिया के ये लोग सब फिर धीरे धीरे एक राज्य – अक्सुम[11] राज्य में संगठित हो गये। यही राज्य आजकल का टिगरे[12] राज्य है। पहली बार यह राज्य संसार की निगाह में ईसा के बाद की पहली शताब्दी में आया।

यह रक्त मिश्रण केवल उत्तरी तथा मध्य भाग के पहाड़ी क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। शेष क्षेत्र अगम्य होने के कारण न तो उनके रक्त मिश्रण से ही प्रभावित हुए और न ही उनकी भाषा और संस्कृति से।

---

[9] Amharic

[10] Black race

[11] Axum or Aksum – a Province of Ethiopia

[12] Tigre or Tigray

इस बीच भाषा में भी काफी परिवर्तन आये। धीरे धीरे वह मूल भाषा यानी गीज़ नहीं रही और बदली हुई भाषा, यानी अम्हारिक भाषा जो आजकल मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में बोली और समझी जाती है, यहाँ की राष्ट्रीय भाषा बन गयी।

सोलहवीं शताब्दी में यहाँ एक और नयी घटना घटी। इस शताब्दी के प्रारम्भ में ही यहाँ गाला या ओरोमो[13] लोग आये। ये गाला लोग सोमाली प्रजाति के निकट के सम्बन्धी हैं। ये मूल रूप से कहाँ के रहने वाले हैं यह तो पता नहीं है परन्तु ऐसा लगता है कि वे अबिसीनिया के मुख्य पठार और सोमाली मैदान के बीच के रहने वाले थे।

तब से ये अबिसीनिया के मुख्य पठार तथा दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्रों में फैल गये और इन स्थानों के मूल निवासी इनके भय से इधर उधर फैल गये और उनके इधर उधर फैलने से उनका आपस का सम्बन्ध टूट गया।

गाला लोग पागन[14] थे इसलिये वे जहाँ भी बसे वहाँ पागन ही रहे। बाद में कुछ मुसलमान बन गये और कुछ ने ईसाई धर्म अपना लिया।

---

[13] Gala or Oromo

[14] Pagan is a person who does not observe Christianity.

धीरे धीरे इस देश की राजधानी दक्षिण की ओर बढ़ती गयी। सबसे पहले वह अक्सुम थी, फिर कुछ समय के लिये गोंडर रही और अब **1887** से एडिस अबाबा[15] है।

इथियोपिया के राजा लोग अपने देश को यूरोपियन और अरबी नामों से पुकारा जाना पसन्द नहीं करते थे। वे अपने आपको इथियोपियन कहलाना ही अधिक पसन्द करते हैं। ये अपने आपको राजा सोलोमन का वंशज बताते हैं। इनकी यह बहुचर्चित कहानी संक्षेप में कुछ इस प्रकार है —

रानी मकेडा और राजा सोलोमन की कहानी[16]

"जब राजा सोलोमन[17] अपने भगवान जाहवेह का मन्दिर बनवा रहा था तो उसने संसार की चारों दिशाओं में जो भी वस्तुएँ उसे चाहिये थीं उनको लाने के लिये सन्देश भेजे और कहा कि जो भी उनको ला कर उसे देगा वह उन वस्तुओं का सोने और चाँदी में मूल्य देगा।

उस सामान को लाने वालों में इथियोपिया की तत्कालीन रानी मकेडा[18] का सौदागर टामरिन[19] भी था। वह यहाँ से लाल सोना,

[15] Gondar and Addis Ababa – Gondar was the capital of Ethiopia after Axum, and after Gondar its capital is Addis Ababa till today.

[16] Read this story in detail in "Sheba kI Rani Makeda" by Sushma Gupta in Hindi language, Delhi : Prabhat Prakashan. 2019.

[17] King of Israel and the son of David. Jerusalem was Israel's capital.

[18] Maqeda, or Makeda, or Queen of Sheba.

[19] Tamrin – Makeda's merchant – he took red gold, sapphire and ebony wood. Ebony wood is black hardwood and dense enough to sink in water. It is finely textured and has a very smooth finish when polished making it an ornamental wood. Worms do not eat it.

नीलम और आबनूस की काली लकड़ी ले गया था। आबनूस की लकड़ी बिल्कुल काली और सख्त होती है और उसको कीड़े नहीं खाते।

वह जब सोलोमन के देश में पहुँचा तो उसके राज्य के वैभव और उसकी बुद्धिमानी से बहुत प्रभावित हुआ। यह सब उसने वापस आ कर रानी को बताया। रानी मकेडा ने जब उसके विषय में सब कुछ सुना तो उसने राजा सोलोमन को स्वयं देखने का फैसला किया।

रानी मकेडा **797** ऊँटों**,** खच्चरों और गधों**,** जो बहुत सारी भेंटों से लदे हुए थे जैसे बड़े कारवाँ के साथ जेरुसलम पहुँची। सोलोमन ने उसका बहुत आदर सत्कार किया**,** बहुत सारा भोजन दिया और जितने दिन भी वह वहाँ रही उसने उसको रोज एक से सुन्दर एक **11** जोड़े कपड़े दिये।

सोलोमन की बुद्धिमत्ता की सराहना करते हुए रानी वहाँ कई महीने ठहरी। सोलोमन के साथ उसकी कई विषयों पर बातचीत हुई। उसके धर्म के विषय में जान कर उसने स्वयं सूर्य**,** चन्द्र और तारों की पूजा करनी छोड़ दी और इज़रायल के भगवान जाहवेह की पूजा करनी शुरू कर दी।

छह महीने बाद उसने सोलोमन से अपने राज्य लौट जाने की प्रार्थना की। जब राजा सोलोमन ने यह सुना तो उसने अपने मन में सोचा – "यह इतनी सुन्दर स्त्री संसार के दूसरे कोने से चल कर मेरे

पास आयी है तो क्या भगवान इसको ऐसे ही खाली हाथ जाने देगा? क्या वह इसमें मेरा बीज नहीं डालेगा?"

यहाँ कहानीकार उसकी बहुत सारी रानियाँ और रखैलें रखने की आदत को दिखाना नहीं चाहता था इसलिये उसको यह कह कर छिपा देता है कि वह यह कार्य इसलिये करना चाहता था ताकि उसके बहुत सारे पुत्र हों और वे ऐसे बहुत सारे शहरों में जायें जहाँ के लोग ज्यू धर्म का पालन नहीं करते और उनकी मूर्त्ति पूजा भंग करके वहाँ ज्यू धर्म फैलायें।[20]

"ऐसा सोच कर सोलोमन ने रानी को एक दावत दी जिसमें उसने रानी को काफी मिर्च मसाले वाला खाना खिलाया और सिरके वाली शराब पिलायी ताकि रात को उसको प्यास लगे।

खाना समाप्त होने पर, क्योंकि काफी देर हो गयी थी, उसने रानी को अपने महल में ही सुला लिया। रानी पहले तो हिचकिचायी पर फिर बाद में राजी हो गयी, इस शर्त पर कि सोलोमन उसके साथ कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं करेगा क्योंकि वह अपने राज्य के नियमों के अनुसार कुँआरी थी और उसको कुँआरी ही रहना था।

राजा भी राजी हो गया पर वह भी इस शर्त पर कि वह उसके महल से कोई भी चीज़ चोरी नहीं करेगी।

रानी इस बात पर यह सोचते हुए तुरन्त ही राजी हो गयी कि वह कोई चोर तो थी नहीं सो वह ऐसा कोई काम करेगी ही क्यों।

---

[20] According to Bible Solomon had 700 wives and 300 concubines.

सो दो बराबर के कमरों में दो पलंग लगा दिये गये और वे लोग सोने के लिये लेट गये।

रानी थोड़ी देर तो सोयी पर फिर जाग गयी क्योंकि उसका गला सूख रहा था और उसको प्यास लग आयी थी।

राजा ने रात को ही अपने नौकरों को दोनों के कमरे में पानी का एक एक जग रखने के लिये कह दिया था सो प्यास लगने पर जब रानी ने पानी ढूँढा तो उसने अपना जग देखा तो वह खाली पड़ा था। तो उसकी नजर सोलोमन के कमरे में रखे जग पर पड़ी और उसने उस जग में से पानी पीने की सोची।

उसने जब यह निश्चय कर लिया कि सोलोमन सो रहा था तो वह उठी और पानी पीने के लिये उस जग को उठाने के लिये उस जग पर अपना हाथ रखा।

लेकिन सोलोमन की ऑखों में नींद कहॉ? वह तो सोया ही नहीं था। वह तो इसी मौके की इन्तजार में था कि कब मकेडा को प्यास लगे और कब वह उस जग में से पानी पिये और कब वह उसे पकड़ ले।

सो जैसे ही रानी ने उसके जग पर अपना हाथ रखा, सोलोमन अपने बिस्तर से उठा और उसने रानी की बॉह पकड़ ली और बोला — "तुमने अपनी कसम कि तुम मेरे महल की किसी वस्तु को नहीं चुराओगी तोड़ दी है।"

रानी ने कहा भी कि ऐसी कसम कोई पानी जैसी चीज़ के लिये थोड़े ही होती है पर राजा बोला कि पृथ्वी पर पानी से अधिक मूल्यवान वस्तु तो कोई हो ही नहीं सकती और उसकी चोरी तो सबसे बड़ी चोरी है।

इस पर रानी ने अपनी गलती स्वीकार कर ली लेकिन उससे पानी पिलाने की प्रार्थना की। इस प्रकार सोलोमन अपनी कसम से मुक्त हो गया और उसने रानी से अपनी इच्छा पूरी की।

पर उसी रात जब वह सो रहा था तो उसने एक स्वप्न देखा कि सूर्य उसके देश में नीचे उतर आया है और उसने उसके देश को खूब चमका दिया है परन्तु फिर वह इथियोपिया चला गया है और उसने वहॉ और भी अधिक चमक के साथ चमकना शुरू कर दिया है।

उसके बाद सूर्य दोबारा जूडा देश आया है पर ज्यू लोगों ने उसको घृणा की नजर से देखा है और उसको नष्ट करना चाहा है तो वह फिर रोम और इथियोपिया देश चला गया है।

अगले दिन राजा सोलोमन ने रानी मकेडा को एक ॲगूठी दी और कहा — "यदि तुम्हारे पुत्र हो तो यह ॲगूठी उसको दे देना और उसे मेरे पास भेजना।"

और रानी इथियोपिया चली आयी। समय आने पर उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम उसने मिनीलिक[21] रखा।

[21] Menelik or Minilik or Menilik

जब मिनीलिक बड़ा हुआ तो उसने अपने पिता से मिलने की इच्छा प्रगट की। रानी ने उसको सोलोमन की दी हुई अँगूठी दी और अपने जहाज़ों के मालिक टामरिन के साथ उसको जूडा देश भेज दिया।

टामरिन से उसने कहा कि वह सोलोमन से कहे कि सोलोमन मिनीलिक का राज्याभिषेक करदे और यह कानून बना दे कि भविष्य में मिनीलिक के पुत्र पौत्र ही इथियोपिया के ऊपर राज करें, कोई स्त्री नहीं।

ऐसा उसने इसलिये कहा क्योंकि अभी तक यहाँ केवल कुँआरी रानियाँ ही राज करती चली आयी थीं।

इस प्रकार मिनीलिक जूडा देश गया। जब वह गाज़ा पहुँचा तो वहाँ कुछ लोग चिल्लाये "राजा की जय हो, राजा की जय हो।" कुछ दूसरे बोले — "पर राजा तो जेरुसलम में मन्दिर बनवा रहा है वह यहाँ कैसे आ सकता है?"

यह सुन कर सब लोग बड़े पशोपेश में पड़ गये कि वह राजा को देख भी रहे थे और वह राजा हो भी नहीं सकता था। उन्होंने तुरन्त ही दूत जेरुसलम भेजे। दूतों ने वहाँ जब सोलोमन को देखा तो भौंचक्के रह गये।

दूत जब सँभले तो बोले — "एक आदमी हमारे देश में आया है जिसकी शक्ल आपसे हूबहू मिलती है।"

राजा ने पूछा कि वह आदमी कहाँ से आया है तो उन्होंने कहा — "यह तो हमने नहीं पूछा क्योंकि वह तो बहुत बड़ा आदमी लगता है परन्तु उसके साथ आने वाले आदमियों ने बताया कि वे लोग इथियोपिया से आ रहे हैं।"

यह सुन कर राजा का मन ख़ुशी से भर गया क्योंकि यद्यपि उसने कई विवाह किये थे परन्तु भगवान ने उसके उद्देश्यों को पूरा नहीं होने दिया था। उसके अभी तक एक ही पुत्र था सात वर्ष का। उसका नाम था रेहोबोम[22]।

उसने तुरन्त ही मिनीलिक को जेरुसलम बुलवाया। मिनीलिक ने उसे अपनी अँगूठी दिखायी तो वह बोला — "पुत्र, इसको दिखाने की तो तुमको आवश्यकता ही नहीं थी। बिना किसी निशानी के ही तुम मेरे पुत्र लगते हो।"

टामरिन ने राजा को रानी का भेजा सन्देश दिया। सोलोमन ने मिनीलिक को इज़रायल में रोके रखने और उसको इज़रायल का राज्य देने की काफी कोशिश की क्योंकि वह उसका ज्येष्ठ पुत्र था परन्तु मिनीलिक नहीं रुका।

सो राजा सोलोमन ने पवित्र तेल से उसका राज्याभिषेक किया और उसको डेविड नाम दिया। उसने यह कानून भी बना दिया कि उसके बाद केवल उसका पुत्र और उसके पुत्र पौत्र ही इथियोपिया पर राज करेंगे।

---

[22] Rehoboam – name of Solomon's younger son

उसके बड़े पुजारी ज़ाडोक[23] ने उसे इज़रायल के कानून बताये और कहा कि यदि वह उनका पालन करेगा तो उसके ऊपर भगवान की कृपा रहेगी नहीं तो जाहवेह का शाप पड़ेगा।

मिनीलिक ने फिर अपनी माँ की प्रार्थना के अनुसार "आर्क औफ द कौवेनेन्ट"[24] को ढकने वाले कपड़े का एक टुकड़ा माँगा ताकि इथियोपिया के लोग उसकी पूजा कर सकें। सोलोमन ने कहा कि वह उसको मिल जायेगा।

फिर उसने अपने दरबारियों से कहा — "मैं अपने ज्येष्ठ पुत्र को इथियोपिया का राजा बना कर भेज रहा हूँ सो आप लोग भी अपने अपने ज्येष्ठ पुत्रों को उसके सलाहकारों की हैसियत से वहाँ भेजें ताकि वे भी इसी प्रकार मेरे पुत्र के दाँये बाँये बैठ कर राज्य संचालन में उसकी सहायता कर सकें जैसे आप लोग मेरी सहायता करते हैं।"

जब जाने का समय आया तो सभी बच्चे अपना देश छोड़ने पर बहुत दुखी थे और मन ही मन सोलोमन को कोस रहे थे। उनका असली दुख यह था कि वे अपनी "आवर लेडी औफ ज़ियोन"[25] या "आर्क औफ़ द कौवेनेन्ट" को छोड़ कर जा रहे थे।

---

[23] Zadok – the chief priest of Solomon
[24] Ark of the Covenant
[25] Our Lady of Zion

अज़ारियास[26] जो ज़ाडोक का ज्येष्ठ पुत्र था और मिनीलिक के साथ उसका बड़ा पुजारी बन कर जा रहा था, उसके मस्तिष्क में एक चाल आयी।

दूसरों से उस चाल के विषय में किसी को न बताने की कसम ले कर जब उसने उन सब बच्चों को वह चाल बतायी तो वे सब बहुत खुश हुए। उन्होंने हर एक ने अज़ारियास को दस दस डिड्राश्म[27] चाँदी दी।

इस धन से उसने एक बढ़ई से यह कहते हुए एक राफ्ट बनवायी कि वे समुद्री यात्रा पर जा रहे हैं और वहाँ उनको उसकी कभी भी जरूरत पड़ सकती है। उसने उस बढ़ई को राफ्ट बनाने के लिये आर्क औफ द कौवेनेन्ट का नाप दे दिया।

जाने से पहली रात को वह राफ्ट ले आया जो आर्क की शक्ल की थी। उसे वह मन्दिर ले गया, आर्क वाले कमरे के दरवाजे खोले, वहाँ से असली आर्क उठायी, उसके स्थान पर नकली आर्क रखी और उस नकली आर्क को आर्क के ढकने वाले कपड़े की तीन तहों से ढका ताकि इस झूठ का किसी को पता न चल सके और चला आया।

अगले दिन सोलोमन ने मिनीलिक को देने के लिये ज़ाडोक से आर्क को ढकने वाला कपड़ा लाने के लिये कहा। ज़ाडोक वह

[26] Azarias – son of Solomon's chief priest Zadok
[27] Didrachms – currency of Greece and of some other countries

कपड़ा ले आया और सोलोमन ने वह कपड़ा मिनीलिक को दे दिया और मिनीलिक खुशी खुशी इथियोपिया की ओर चल पड़ा।

उस समय उनकी गाड़ियाँ भूमि से एक क्यूबिट[28] ऊँची चल रही थीं और उनकी गति चील की गति से भी तेज़ थी।

उन्होंने **13** दिन की यात्रा एक ही दिन में पूरी कर ली थी और जब वे मिश्र[29] आये तब उन ज्येष्ठ पुत्रों ने मिनीलिक को बताया कि किस प्रकार वे आर्क अपने साथ ले आये थे।

मिनीलिक यह सुन कर बहुत खुश हुआ और आर्क के सामने मेमने की भाँति कूदने लगा।

वे अपनी यात्रा पर फिर चले और इथियोपिया पहुँच गये। वहाँ जा कर मिनीलिक इथियोपिया का राजा बना और उसके बाद उसका पुत्र। और राजा सोलोमन के दरबारियों के ज्येष्ठ पुत्र और उनके बाद उनके पुत्र उस राज्य के सलाहकार और आफीसर बनते रहे।

इधर जब मिनीलिक जेरुसलम से चला गया तो सोलोमन बहुत दुखी हुआ और उसने ज़ाडोक को अपने उस स्वप्न के विषय में बताया जो उसने इथियोपिया की रानी की उपस्थिति में उस रात सोते समय देखा था।

ज़ाडोक तो उस स्वप्न को सुन कर काँप उठा और बोला — "राजन, आपको मुझे यह स्वप्न मुझे पहले बताना था अब तो मुझे

[28] One Cubit = approximately 18" or 21".
[29] Egypt

डर है कि हमारी "आवर लेडी औफ़ ज़ियोन" हमको छोड़ कर चली गयी है।"

कहने के तुरन्त बाद ही वह आर्क वाले कमरे में दौड़ा गया और आर्क के अन्दर वाले दो कपड़े हटा कर देखा तो उसे अपने पुत्र अज़ारियास द्वारा बनवायी गयी राफ्ट दिखायी दी। वह बहुत रोया और बहुत दुखी हुआ।

सोलोमन को यह सब जान कर बहुत क्रोध आया और क्रोध में भर कर वह मिश्र की ओर चल दिया। मिश्र में लोगों से पूछने पर पता चला कि कुछ दिन पहले ही वे लोग उधर से गुजरे थे।

यह सुन कर सोलोमन और भी अधिक दुखी हुआ पर उसको भविष्यवाणी हुई कि "आवर लेडी औफ ज़ियोन" किसी विदेशी के पास नहीं गयी है बल्कि स्वयं तुम्हारे पुत्र के पास ही है।" यह सुन कर उसे थोड़ा सन्तोष हुआ और वह जेरुसलम लौट गया।

इधर रोम के राजा बालथज़ार[30] के केई पुत्र नहीं था, केवल तीन पुत्रियॉ थीं। उसने सोलोमन के पास सन्देश भेजा कि वह अपने एक पुत्र से उसकी पुत्री का विवाह कर ले और रोम पर राज करे। सो सोलोमन ने अपना सबसे छोटा पुत्र ऐड्रैमिस[31] को रोम भेज दिया

[30] Balthazar – King of Rome
[31] Adramis – the youngest son of Solomon. Thus Solomon's eldest son Menelik (David) was ruling in Ethiopia, his youngest son Adramis went to Rome to rule, and his middle son Rehoboam ruled Juda country.

और उसके साथ अपने सलाहकारों व आफीसरों के सबसे छोटे पुत्र भी भेज दिये।

इस तरह सोलोमन के बीच वाले पुत्र रेहोबोम ने जूडा देश पर राज किया। मिनीलिक ने उन सारे देशों पर राज किया जो दक्षिण में थे और पूर्व में थे और एड्रैमिस ने उन सारे देशों पर राज किया जो उत्तर में थे और पश्चिम में थे।

एक और भविष्यवाणी भी थी कि रोम के राजा तथा इथियोपिया के राजा को सारे संसार पर राज्य करना है और उनके राज्यों की सीमा जेरुसलम होगी।

यह भविष्यवाणी बाद में पूरी हुई। जब ज्यू लोगों का जन्म अधिकार खो गया अर्थात जब उन्होंने "सन औफ़ गौड" यानी जीसस को मार डाला और रोम के राजा जस्टिन तथा इथियोपिया के राजा कलेब[32] ने उनका राज्य नष्ट कर दिया – यह एक ऐतिहासिक सत्य है।

उसके पश्चात रोम के राजाओं ने भी अपने जन्म अधिकार खो दिये क्योंकि उनको एरियस और नैस्टोरियस[33] ने सच्चा धर्म छोड़ने पर मजबूर कर दिया था जो कि अलेक्ज़ेन्ड्रिया[34] का धर्म था इसलिये इथियोपिया के राजा यानी कि सोलोमन के ज्येष्ठ पुत्र मिनीलिक की

---

[32] King Justin of Rome, and King Kaleb of Ethiopia

[33] Arius and Nestorius

[34] Alexandria, a well-known sea port of Egypt at Mediterranean Sea. It is famous for its library also.

सन्तानें ही भगवान के साथ किये गये वायदों की सच्ची उत्तराधिकारिणी रहीं।”

यह कहना तो कठिन है कि यह कहानी सम्पूर्ण रूप से काल्पनिक है परन्तु इस बात के कई प्रमाण हैं कि अक्सुम[35] के राजा चौथी शताब्दी तक तो पागन[36] ही थे और अपने आपको युद्ध के देवता मैहरैम[37] की सन्तान मानते थे।

इसके अलावा शेबा की रानी मकेडा इथियोपिया की थी या अरब की इस पर भी विद्वान एकमत नहीं हैं।

कहानी की आलोचना

कुछ लोगों का कहना है कि यह कहानी सच नहीं है बल्कि रची गयी मनगढ़न्त कहानी है। इसके लिये वे कुछ तर्क प्रस्तुत करते हैं।

पहला तर्क तो वे यह देते हैं कि इस कहानी के द्वारा अबिसीनिया के लोग अपना प्राचीन होना सिद्ध करना चाहते थे इसलिये उन्होंने यह कहानी रची।

जिस प्रकार रोम के लोग जब अपने से पुरानी सभ्यता वाले लोगों, यानी ग्रीस के लोगों, से मिले तो उन्हें अपने नये होने का बहुत दुख हुआ।

---

[35] Aksum or Axum, one of the several states of Ethipia and its former capital.

[36] Pagan – people who are not Christian, Jew or Muslim. Or who observe polytheism.

[37] God of War Mahrem

और इसके लिये उन्होंने ऐसे महाकाव्य खोजे जिसमें ट्रौय[38] के पतन और वहाँ के वीरों के इधर उधर घूमने का वर्णन था। उनसे उन्होंने अपने लिये कहानी बनायी कि ट्रोजन का ऐनीस[39] जो इटली में आ कर बस गया था उसकी सन्तानों ने रोम बसाया।

इसी प्रकार जब अबिसीनिया के लोग ईसाई धर्म का पालन करने वाले पूर्व के लोगों के सम्पर्क में आये तो उनको भी कुछ ऐसा ही लगा।

पर उस समय उनके पास केवल एक ही ऐतिहासिक सत्य था और वह थी बाइबिल। उसी में उन्होंने अपने लिये कुछ ढूँढा। उनकी शुरू की कोशिशें अधिक सफल नहीं हुईं पर उनको यह मालूम था कि ग्रीक लोग अपने देश को इथियोपिया कह कर पुकारते थे।

बाइबिल में उनको केवल यह मिला कि हाम का पुत्र एथियौप्स[40] था और सैपचुआजिन कुश[41] एथियौप्स ने लिखा था। इसलिये उन्होंने बड़े गर्व से इथियोपिया नाम ले लिया। और आज तक वे इसी नाम से पुकारा जाना पसन्द करते हैं और अपने आपको नोआ[42] से सम्बन्धित मानते हैं।

---

[38] Troy

[39] Aeneas of Trojan

[40] Noah's son was Ham. Ham's son was Cush and Cush's son was Aethiops who wrote Septuagin Cush

[41] Septuagin Cush

[42] Noah

दुर्भाग्यवश उनका अपने पूर्वजों का यह चयन उनके लिये कोई बहुत सौभाग्य की बात नहीं रही क्योंकि यद्यपि बाइबिल में इथियोपिया के विषय में कुछ सन्दर्भ अवश्य हैं, जैसे — "इथियोपिया शीघ्र ही अपने हाथ भगवान के आगे फैलायेगा।"

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि एथियौप्स हाम की सारी सन्तानों के साथ नोआ के शाप से शापित हुआ कि वे सब दास हो जायेंगे। पर इसकी बजाय उनका शैम[43] से सम्बन्ध जोड़ना शायद ज़्यादा उचित रहता।

दूसरा उद्देश्य था इथियोपिया राज्य को ऊँचा रखना और भगवान से किये गये वायदों के द्वारा अपने आपको उत्तराधिकारी साबित करना। क्योंकि ज्यू लोगों ने तो अपने जन्म अधिकार ईसा मसीह को न मान कर ही खो दिये थे।

इस कड़ी जोड़ने के लिये वे शेबा की रानी को लाते हैं जो सोलोमन की बुद्धिमानी भरी बातें सुनने के लिये धरती के एक कोने से आती है और जिसके विषय में जीसस ने भी कहा है "कि दक्षिण की रानी फैसले के दिन इस वंश के साथ उठेगी और उनको सजा देगी।"

इस विषय को केन्द्र मान कर कई कहानियाँ लिखी गयीं है। इस विषय की कुछ कहानियाँ कुरान में भी पायी जाती हैं।

---

[43] Shem – one of the sons of Noah

इथियोपिया और मिश्र में रानी के राज्य का संकेत जोसेफ़स[44] ने भी दिया है। रानी मकेडा को तो केवल एक पुत्र की आवश्यकता थी जिसका पिता सोलोमन हो ताकि इथियोपिया के शाही वंश को डेविड के घराने से जोड़ा जा सके।

मकेडा की इस कहानी के अनुसार इथियोपिया का राज्य इज़रायल के राज्य के साथ जुड़ जाता है।

इथियोपिया को ऊँचा बनाने के लिये मिनीलिक को उसका ज्येष्ठ पुत्र बना दिया गया और इथियोपिया के लोगों को कुलीन बनाने के लिये इज़रायल के दरबारियों के सब ज्येष्ठ पुत्र यहाँ लाये गये तथा अन्त में आर्क को भी वे वहीं ले आये।

क्योंकि भगवान की उपस्थिति को दिखाने वाला वही आर्क एक साधन थी इसलिये उसको अक्सुम में ला कर रख दिया गया।

इथियोपिया को यह भी मालूम था कि सारे ईसाई राजाओं का भगवान की दिलायी आशाओं पर समान अधिकार था इसलिये उन्होंने अपना वंश केवल उन्हीं लोगों से जोड़ा जिनको वे जानते थे, जैसे रोम का राजा या सोलोमन और उसका छोटा बेटा ऐड्रैमिस।

तीसरा उद्देश्य जो इस कहानी की रचना में हो सकता है वह है इथियोपिया की राजगद्दी को दैवीय अधिकार देना, सोलोमन से अपने

[44] Josephus – first century Romano-Jewish scholar, historian and hagiographer, born in Jerusalem—then part of Roman Judea.

राजाओं की वंशावली ढूँढना, और उसके वंश के किसी आदमी को यहाँ का पहला राजा बनाना आदि।

सो इन सब बातों को इस कहानी में ला कर इथियोपिया के सब राजाओं को दैवीय बना दिया गया है। ऐसे राजा के प्रति जो दैवीय वंश से सम्बन्धित हो किसी प्रकार का भी विद्रोह खड़ा करना पाप था क्योंकि वे सब जीसस के भाई थे।

यह कहानी मनगढ़न्त रचना इसलिये भी अधिक लगती है क्योंकि इसका समय निश्चित नहीं किया जा सकता। इसका अधिकृत स्रोत है कैब्रा नैगास्ट[45] जो 14वीं शताब्दी के प्रारम्भ में रचा गया था और उस राज्य की प्रशंसा तथा शान में लिखा गया था।

वह राजा लगभग 1270 में गद्दी पर बैठा था और वह यह दावा करता था कि वह ही सोलोमन के वंश का अगला राजा था।

यद्यपि यह कहानी केवल इसी वंश के लाभ के लिये नहीं रची गयी होगी जैसा कि विश्वास किया जाता रहा है इसके पीछे कुछ और भी अवश्य ही रहा होगा।

---

[45] Kebra Negast or Glory of Kings is a 14th century account, written in Geez language, of the origin of Solomonic line of the Emperor of Ethiopia. First it was written in Coptic in 1225, then was translated in Arabic, and finally in Geez. It contains 117 chapters, an account of how the Queen of Sheba, Queen Makeda of Ethiopia met King Solomon and about how the Ark of the Covenant came to Ethiopia with Menelik I (Menyelek). It also discusses the conversion of the Ethiopians from the worship of the Sun, Moon and stars to that of the "Lord God of Israel". As the Ethiopianist Edwar Ullendorff explained in the 1967 Schweich Lectures, "The Kebra Nagast is not merely a literary work, but it is the repository of Ethiopian national and religious feelings."

कैब्रा नैगास्ट पुस्तक के एक कोलोफ़न[46] में लिखा है कि यह कहानी एक अरबी कहानी का अनुवाद है जो **1225** में लिखी गयी थी जिसकी मूल कहानी अलैक्ज़ैन्ड्रिया के पैट्रियार्क[47] के पुस्तकालय में कौप्टिक भाषा में है। हालाँकि यह कोई बहुत अच्छा प्रमाण तो नहीं है परन्तु सौभाग्य से इसे प्रमाणित किया जा चुका है।

अब्बू सलीह[48] जिसने **13**वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मिश्र के चर्च और मोनेस्टरीज़ का इतिहास लिखा, उसको इस कहानी का ज्ञान था। वह लिखता है कि अबिसीनिया के लोगों के पास आर्क औफ द कौवेनेन्ट है जिसमें भगवान के हाथ के लिखे दो पत्थर के टुकड़े हैं जिन पर कानून लिखा हुआ है।

वह यह भी लिखता है कि यहाँ के राजा डेविड के ही नहीं बल्कि मोसेस के वंशज हैं। इससे पता चलता है कि डेविड के वंशज ही इस राजगद्दी के असली उत्तराधिकारी थे और अब्बू सलीह के समय में जो राजा राज्य कर रहे थे, यानी ज़ाग्वे[49] वंश के राजा, वे लोग तो केवल घुसपैठिये थे।

इससे यह भी संकेत मिलता है कि ये राजा सोलोमन से भी पुराने लोगों के वंशज हैं क्योंकि उनका सम्बन्ध मोसेस से है पर जिसका कहीं कोई सबूत या वर्णन नहीं मिलता।

---

[46] Colophon – a brief description of the document attached to it.
[47] Patriarch
[48] Abu Salih
[49] Zagwe Dynasty, before 1270

शायद वह बाइबिल की पुस्तक "नम्बर्स" के **12**वें अध्याय के पहले वर्स[50] पर आधारित है जहॉ यह लिखा है कि मोसेस ने एक कुशिटिक[51] लड़की से विवाह किया। इसलिये इस कहानी का आरम्भ ईसा से **2000** वर्ष पूर्व हुआ ही समझा जाना चाहिये।

और यह शायद छठी शताब्दी जितनी जल्दी की कहानी भी नहीं है क्योंकि उस समय के ग्रीक लेखक इस विषय में कुछ नहीं जानते। लेकिन वे यह कहते हैं कि अबिसीनिया सीरिया की एक कोलोनी है जिसको अलैक्ज़ैन्डर[52] ने इथियोपिया में बनाया।

16वीं शताब्दी से यह विश्वास किया जाने लगा है कि आर्क औफ द कौवेनेन्ट अक्सुम के कैथेड्रल में है, कि शाही वंशावली राजा सोलोमन से चली आ रही थी, कि शाही दरबार के लोग इज़रायल के थे जो ज़ाडोक के वंशज थे। और यह विश्वास अभी तक चला आ रहा है।

कैब्रा नैगास्ट की शाही कापी जब नैपियर[53] **1868** में इंगलैंड ले गया तो उस समय के इंगलैंड के राजा जौन चतुर्थ ने देखा कि लोग केवल उस पुस्तक का कहना ही मान रहे हैं तो उसने **1872** में लार्ड ग्रैनविल[54] को लिखा —

[50] Bible. Numbers, 12:1
[51] Cushitic means "in the Septuagint Ethiopian"
[52] Alexander the Great
[53] Napier
[54] Lord Granville

"एक पुस्तक है कैब्रा नैगास्ट, जिसमें इथियोपिया के सारे नियम व कानून दिये गये हैं। राजकुमारों, चर्चों तथा प्रान्तों के नाम दिये गये हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूॅ कि इस पुस्तक का पता कीजिये कि यह किसके पास है और मुझे भिजवाइये क्योंकि उसके बिना मेरी जनता मेरी आज्ञा का पालन नहीं कर रही है।"

ब्रिटिश म्यूजियम के लोगों ने उसकी इस दर्द भरी प्रार्थना को पढ़ कर वह पुस्तक ढूॅढी और उसको भिजवायी।

दक्षिण की रानी की इस कहानी की अबिसीनिया के इतिहास में आवश्यकता से अधिक महत्ता है। इसी अहम् के बल पर कि वे ही जाहवेह के चुने हुए लोग[55] हैं जिनके पास आर्क है, और वे ही अब्राहम के साथ किये गये वायदों के सच्चे उत्तराधिकारी हैं, उन्होंने औरथोडोक्स चर्च के विश्वास को बनाये रखा है।

इसी विश्वास के आधार पर कि उनका देश जूडा देश के राजाओं के वंशजों का देश है, इस देश की एकता बनी हुई है जो कि इस देश की भौगोलिक भेदों के कारण अत्यधिक कठिन है।

इथियोपिया के उदय के बारे में कुछ ऐतिहासिक तथ्य

अबिसीनिया को जाने वालों में सबसे पहले यूरोपियन यात्री ग्रीक एडमिरल थे जो ईसा से **200** वर्ष पूर्व मिश्र से आये और जो लाल

[55] Chosen people

सागर के पश्चिमी तट के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के लिये आये थे।

इन यात्राओं का उद्देश्य कुछ तो अन्दर के लोगों के साथ व्यापार करना प्रारम्भ करना था पर अधिकतर अफ्रीका के हाथी पकड़ने का था।

उस समय में मिश्र के टोलेमी[56] राजा लोग उन हाथियों को युद्ध के लिये प्रशिक्षित करते थे और उनको भारतीय हाथियों के मुकाबले में प्रयोग करते थे।

इन राजाओं ने तट के किनारे किनारे शिकार और व्यापार दोनों के लिये कई स्थान बनाये जिनमें से बैरैनिस द ओल्ड गोल्डिन शायद पुराने बन्दरगाह अडूलिस[57] के स्थान पर था, जो बाद में अक्सुम का मुख्य बन्दरगाह बन गया।

जैसे जैसे टोलेमी राज्य का पतन हुआ ये स्थान भी प्रयोग में आने बन्द हो गये परन्तु जो व्यापारिक सम्बन्ध बनाये थे वे चलते रहे।

अबिसीनिया राज्य का सबसे पहली बार उल्लेख पैरीप्लस औफ द एरीथ्रीयन सी[58] पुस्तक में पाया जाता है जिसमें उसके लाल सागर तथा हिन्द महासागर के तटों का भी वर्णन है।

---

[56] Ptolemy – the kings of Egypt. Ptolemy I Soter started in 367 BC and Ptolemy XV Caesarion (son of Julius Ceaser and Cleopatra) was the last Ptolemy ruler up to 30 BC.

[57] Berenice the Old Golden and Adulis. Both were sea ports in Ethiopia on the North- western shore of the Red Sea – 30 miles South of Masaawa

[58] Periplus of the Erythrean Sea

यह पुस्तक पहली शताब्दी के अन्त में लिखी गयी थी। इसमें लेखक ने अडूलिस बन्दरगाह[59] का भी जिक्र किया है और कहा है कि इस बन्दरगाह से आठ दिन की यात्रा पर अक्सुम की राजधानी है जहाँ नील नदी के उस पार का सारा हाथी दाँत लाया जाता है और फिर वहाँ से फिर अडूलिस ले जाया जाता है।

वह आगे लिखता है कि इन सब क्षेत्रों का राजा जोस्कालेस[60] है जो बड़ा होशियार है और उसको ग्रीक का ज्ञान भी है। इस वर्णन के अनुसार जोस्कालेस अबिसीनिया का पहला ऐतिहासिक राजा होना चाहिये। उसके समय में व्यापार की भी काफी वृद्धि हुई।

यहाँ की सूचनाओं का दूसरा स्रोत है क्रिश्चियन कौस्मोग्रैफी जो कौसमास[61] ने लिखी है।

कौसमास शायद अलैक्ज़ैन्ड्रिया का एक व्यापारी था जो छठी शताब्दी में लाल सागर तथा हिन्द महासागर में अपना जहाज़ ले जाया करता था। बाद में वह एक मोनैस्टरी में चला गया और वहाँ अपने जीवन के अन्तिम दिन एक पुस्तक लिखने में व्यतीत किये।

इस पुस्तक में उसने लिखा है कि धरती गोल नहीं है बल्कि चौरस अंडाकार शक्ल की है जो पूर्व से पश्चिम तक उत्तर से दक्षिण तक की अपेक्षा दोगुनी लम्बी है और इस बात को उसने बाइबिल तथा पुराने लेखों के आधार पर प्रमाणित करने की कोशिश की है।

---

[59] Adulis Port

[60] Joscales

[61] Chrishtian Cosmography, written by Cosmas

इसी सन्दर्भ में वह एक स्थान पर लिखता है कि जब वह अडूलिस में था तो अक्सुम के राजा ने अडूलिस के गवर्नर को आज्ञा दी कि शहर में ग्रीक में लिखे गये दो शिलालेखों की नकल करनी है।

गवर्नर ने कौसमास से उनकी नकल करने के लिये कहा और उसने उसकी दो नकलें बना दीं। उनमें से एक नकल राजा के पास भेज दी गयी और दूसरी नकल क्रिश्चियन कौस्मोग्रैफी में छाप दी गयी।

उन दो शिलालेखों में से एक उस समय के शिलालेख की नकल थी जब अडूलिस पर टोलेमी राज करता था। उसमें टोलेमी तृतीय ने किस प्रकार लोगों को परेशान किया इस बात का भी वर्णन है।

दूसरे शिलालेख में अबिसीनिया के एक राजा की कई युद्धों की कहानियाँ खुदी हुई थीं। अधिकतर ये युद्ध टिगरे से किये गये थे और भी कई युद्धों का वर्णन भी था जो टिगरे से और आगे की ओर किये गये थे।

अबिसीनिया के इस राजा ने नील नदी के दक्षिण में जो सैमीन[62] की पहाड़ी भूमि टकाज़[63] है, उसको भी जीत लिया था। उसने उस जल रहित भूमि, यानी डानाकिल रेगिस्तान[64], को भी जीत लिया था जहाँ से सुगन्ध और इत्र आता था।

[62] Semien
[63] Takazze
[64] Danakil Desert

उसने अदन की खाड़ी की ओर भी अपने कदम बढ़ाये थे। उत्तर की ओर उसने बेजस जनजातियों को जीत लिया था जो सुआकिम के पीछे वाले रेगिस्तान[65] में रहतीं थीं।

उसने उत्तर पश्चिम की ओर टैनगेट्स[66] को जीत लिया था जो मिश्र की सीमा तक रहते थे। फिर उसने समुद्र पार किया और अरब के लोगों आदि को जीत लिया।

इसमें वह आगे लिखता है — “जो भी राजा मुझसे पहले हुए हैं उन सबमें मैं पहला और अकेला राजा हूँ जिसने मेरे भगवान एरेस[67] की कृपा से इन सबको जीत लिया है। उसी ने मुझे पैदा किया है। उसी की कृपा से मैंने इन सबको जीता है जो मेरी सीमा पर रहते हैं।”

पूर्व में सुगन्ध वाली भूमि, पश्चिम में इथियोपिया और सासू[68] तक की भूमि — इससे ऐसा लगता है कि इथियोपिया कोई और देश था यह वाला देश नहीं, हो सकता है वह नूबिया[69] हो।

वह आगे लिखता है — “कुछ से मैं स्वयं लड़ा और कुछ स्थानों पर मैंने अपनी सेनाऐं भेजीं। जब मैंने ये सब स्थान जीत लिये तो मैं

[65] The desert which was beyond Suakim
[66] Tangaits
[67] Ares
[68] Sasu
[69] Nubia Desert

उन लोगों की ओर से जो ज्यूज़, एरेस और पोसीडोन[70] की समुद्री यात्रा पर गये थे, चढ़ाई करने के लिये अडूलिस आया।

अपनी सारी सेना संगठित करके मैंने यहाँ अपना राज्य स्थापित किया और अपने राज्य काल के **27**वें वर्ष में उसे अरेस के नाम से घोषित किया।"

इस वर्णन से ऐसा लगता है कि जैसे इस देश ने कई राज्य जीते और फिर सबको मिला कर अबिसीनिया साम्राज्य की स्थापना की।

दुर्भाग्य से कौसमास ने जब उस शिलालेख को देखा तो या तो उस शिलालेख के आरम्भ की लिखायी थी ही नहीं, या उससे लिखी नहीं गयी, या पढ़ी नहीं गयी, बहरहाल केवल इस वर्णन से इस राजा के नाम तथा समय का पता नहीं चलता।

पर इस हाल से इसको तीसरी शताब्दी का राजा कहा जा सकता है और इसका नाम अफीलस[71] हो सकता है। अफीलस अक्सुम का एक महात्वपूर्ण राजा था और उसके सिक्के अभी भी मौजूद हैं।

अक्सुम का अगला राजा जिसके विषय में विशेष उल्लेख मिलते हैं वह है ऐज़ाना – ऐला अमीडा का पुत्र[72]। इसके भी कई भाषा में

---

[70] Jeus, Ares, and Poseidon

[71] Aphilas

[72] Ezana, the son of Ella Ameida is a very important and famous king of Ethiopia. It is aid the he made this land a Christian land.

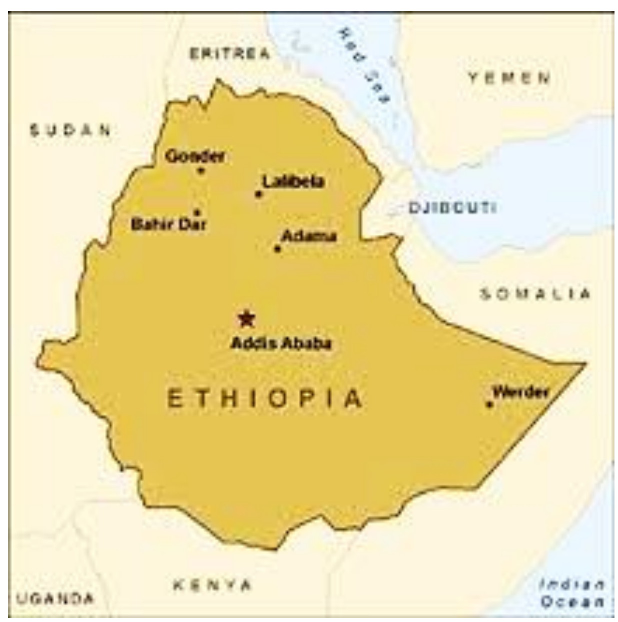
शिलालेख मिलते हैं। एक ग्रीक, गीज़ और सबीयन[73] भाषा में है और शेष गीज़ भाषा में हैं।

इन शिलालेखों से उनकी संस्कृति का पता चलता है जो विदेशी संस्कृति ग्रीस की संस्कृति के साथ आगे बढ़ रही थी।

वह अपने को अक्सुम, हिमयार, रैदान, साबा, सालहीन, सियामो, बैगा और कासू[74] का राजा कहता है – अर्थात राजाओं का राजा और अजेय माहरेम[75] का पुत्र कहता है।

साबा और हिमयार का जिक्र यहाँ यह दिखाता है कि अबिसीनिया साम्राज्य अफीलस के समय से काफी बढ़ गया था। यह निश्चित नहीं है कि ऐज़ाना ने क्या वास्तव में दक्षिण–पश्चिम अरब पर भी राज्य किया था या उसके प्रयास केवल अफ्रीका में ही हैं।

यह ऐज़ाना वही राजा है जिसको इथियोपिया को ईसाई राज्य बनाने का श्रेय प्राप्त है।



[73] Greek, Geez and Sabien – they are all languages used in Ethiopia at time to time. Geez language is stii used in Ethiopia in its churches. Sabien language is the language of Yemen country.
[74] Aksum or Axum, Himyar, Raidan, Saba, Salhin, Siamo, Bega and Kasu
[75] Invincible Mahrem – in Greek Ares

2 इथियोपिया–जहाँ सूरज तेरह महीने चमकता है[76]

प्राकृतिक इथियोपिया

पूरे अफ्रीका में केवल इथियोपिया ही एक ऐसा देश है जो अभी तक किसी पश्चिमी सत्ता का गुलाम नहीं हुआ है। यह महान देश लाल सागर के पश्चिमी तट पर अफ्रीका के उत्तरी पूर्वी सीमा पर स्थित है।

जनसंख्या के मामले में अफ्रीका में इसका नम्बर दूसरा है। पहला नाइजीरिया का है जिसकी जनसंख्या **170** मिलियन से अधिक है, और दूसरा नम्बर इथियोपिया का है जिसकी जनसंख्या आज लगभग **94** मिलियन है।

लगभग **35** वर्ष पहले इथियोपिया नम्बर तीन पर था, नम्बर दो पर मिश्र था जिसकी जनस्ंख्या आज **86** मिलियन से ज़्यादा है पर आज यह नम्बर दो पर आ गया है।

इस देश की धरती बहुत ही ऊँची नीची है। इस देश का सबसे ऊँचा पर्वत रास दशन[77] है जो समुद्र तल से लगभग **15** हजार फीट या **4600** मीटर ऊँचा है जबकि इसका सबसे नीचा भाग कोबर सिंक[78] समुद्र तल से लगभग **360** फीट या **116** मीटर नीचा है।

---

[76] Ethiopia – the Land of Thirteen Months of Sunshine

[77] Ras Dashan is the the highest point in Ethiopia

[78] Kober Sink is the the lowest point in Ethiopia

इस देश का बीच का भाग उठा हुआ है और फिर चारों ओर घाटियों के रूप में फैल गया है।

इसके इस उठे हुए भाग को इथियोपियन पठार[79] कहते हैं और यह पठार देश का लगभग दो तिहाई भाग घेरे हुए है। यहाँ की **70** प्रतिशत जनता इन्हीं पहाड़ी स्थानों पर बसी हुई है।

ऐसा इसलिये है कि यहाँ के मैदानी भाग अत्यन्त गर्म हैं और वहाँ रहने के हालात भी बहुत अच्छे नहीं हैं। इन मैदानी भागों में तापमान **140** डिग्री फैरनहाइट या **60** डिग्री सेल्सियस[80] तक पहुँच जाता है जो वहाँ रहने वाले मनुष्यों के लिये असह्य हो जाता है।

यह इथियोपियन पठार ग्रेट रिफ्ट वैली[81] के द्वारा दो हिस्सों में बँटा हुआ है और यह वैली यहाँ की बड़ी प्रसिद्ध तथा मनोरम घाटी है। इस घाटी को देखने के लिये लोग दूर दूर से यहाँ आते हैं।

यहाँ की मुख्य नदी नीली नील या अबै[82] नदी है। यह लगभग **900** मील या **1450** किलो मीटर लम्बी चली गयी है। यह यहाँ की ताना झील[83] से निकलती है और सूडान की राजधानी खारतूम[84] में जा कर सफेद नील[85] से मिल जाती है।

---

[79] Ethiopian Plateau
[80] 140 Degree Fahrenheit or 60 Degree Celsius
[81] Great Rift Valley
[82] Blue Nile or Abbay (pronounced as Abbai) River – believed to be the River Gihon mentioned as flowing out of the Garden of Eden in Genesis 2.
[83] Tana Lake
[84] Khartoum, the capital of Sudan
[85] White Nile or simply called Nile

यहाँ और भी कई नदियाँ हैं पर काफी नदियाँ यहाँ मनुष्य की पहुँच से दूर हैं इसलिये ये लोग उन नदियों का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं।

शायद यही कारण है कि यहाँ के लोगों ने संसार के अन्य लोगों की भाँति नदियों के किनारे से रहना आरम्भ नहीं किया और न ही यहाँ के नगरों का विकास नदियों के किनारे से ही आरम्भ हुआ।

इस देश की राजधानी एडिस अबाबा[86] है जिसका अर्थ होता है नया फूल। यह राजधानी अपने भारत की राजधानी देहली की तरह बहुत पुरानी नहीं है।

इस शहर की पहली जन्म शताब्दी सन् **1986** में मनायी गयी थी। यह शहर समुद्र तल से लगभग **8000** फीट या **2400** मीटर की ऊँचाई पर बसा हुआ है।

यहाँ मुख्य रूप से दो ऋतुऐं होती हैं — वर्षा ऋतु जो लगभग **15** जून से **15** सितम्बर तक चलती है, और सूखी ऋतु[87] जो **15** सितम्बर से **15** जून तक चलती है। इस सूखी ऋतु में भी थोड़ी वर्षा हो जाती है।

यहाँ लगभग **30** विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक समूह हैं जो **100** से भी अधिक भाषाएँ बोलते और समझते हैं। यद्यपि यहाँ के सबसे अधिक लोग ओरोमो[88] भाषा बोलते हैं पर यहाँ की राष्ट्रीय

---

[86] Addis Ababa – the capital of Ethiopia. It means "New Flower".

[87] Rainy Season and Dry Season

[88] Oromo Language

भाषा अम्हारिक[89] है। पूरे अफ्रीका में यही एक ऐसी भाषा है जिसकी अपनी लिपि है। शेष सब भाषाऐं रोमन लिपि में लिखी जाती हैं।

बहुत पुराने समय में यहॉ अफ्रीका के आदि वासी या हब्शी लोग ही रहते थे पर बाद में यहॉ, लगभग **3000** वर्ष पूर्व, दक्षिण अरब से कुछ लोग आये और इन पर अपनी छाप छोड़ गये।

उन्होंने यहॉ के लोगों से विवाह किये और फलस्वरूप उनसे जो सन्तानें पैदा हुई वे धीरे धीरे अधिक रक्त मिश्रण से दूसरे अफ्रीका निवासियों से भिन्न हो गयीं।

इसी कारण आज इनका रंग रूप व नाक नक्श दूसरे अफ्रीका निवासियों से काफी भिन्न है और अरब जाति के लोगों की छाप इन पर स्पष्ट झलकती है।

उदाहरण के लिये इन लोगों की नाक अफ्रीका के दूसरे लोगों की तरह चपटी नहीं है और न ही इनके होठ उनकी तरह से मोटे और बाहर की ओर निकले हुए हैं। इनका रंग भी उतना काला नहीं है।

दक्षिण इथियोपिया के लोग इस रक्त मिश्रण से बचे रहे इसी कारण वे इन लोगों से भिन्न हैं और दूसरे अफ्रीका वासियों से मिलते जुलते हैं।

[89] Amharic Language

रहन सहन – भोजन







यहॉ के लोगों का राष्ट्रीय भोजन इन्जिरा[90] है जिसको ये वत[91] से खाते हैं। यह इन्जिरा हमारे दक्षिण भारत के दोसे से बहुत मिलता जुलता है।

यह एक प्रकार के अनाज तैफ़[92] को पीस कर बनाया जाता है जो केवल इथियोपिया में ही मिलता है और बाजरे के दाने से भी छोटा होता है।

तैफ़ के दानों को साफ करके उन्हें पीस लिया जाता है। उस आटे को फिर पानी में घोल कर **3–4** दिन के लिये खमीर उठने के लिये रख दिया जाता है। चौथे पॉचवे दिन उस घोल को बड़े से मिट्टी के तवे पर फैला कर इन्जिरा बना लिया जाता है।

तैयार इन्जिरा का व्यास लगभग **2** फीट होता है और इसे दोसे की तरह से एक ही तरफ से सेका जाता है। इसे लोग वहॉ सुखा कर भी खाते हैं। तैफ़ में लोहा और विटामिन बी भरपूर मात्रा में

---

[90] Injera and Vat – Injera above and vat below.
[91] Vat is a kind of soup – it may be vegetarian made of pulses, such as lentils etc pulses or nonvegetarian made of meat such as chicken etc
[92] Teff is a grain which grows there abundantly as a grass. See its picture above.

होता है। इनका वत मॉस, मुर्गा, साबुत मसूर, धुली मसूर की दाल या मटरे की दाल का बनता है।



साथ में ये लोग एक दो सब्जी भी बनाते हैं। वैसे तो ये लोग कई प्रकार की सब्जियॉ बनाते है पर बन्द गोभी की सब्जी यहॉ बहुत प्रचलित है।

अक्सर यहॉ परिवार के सभी सदस्य व मित्र साथ बैठ कर भोजन करते हैं। एक विशेष मेज पर एक बहुत बड़ी सी थाली में इन्जिरा बिछा लिये जाते हैं और उसी के ऊपर वत भी रख लिया जाता है।

सभी लोग उस थाली के चारों ओर बैठ जाते है और उसी थाली में से खाते रहते हैं। ये लोग क्योंकि हाथ से ही खाना खाते हैं इसलिये जब साथ खाना खाते हैं तो विशेष रूप से हाथ धोते हैं पर हाथ धोने के बाद उन्हें पोंछते नहीं।

इथियोपिया में और भी कई प्रकार के भोजन बनाये जाते हैं। कच्चा मॉस यहॉ का बहुत लोकप्रिय भोजन है और लोग इसे अपने विशेष पर्वों व अवसरों पर खाना पसन्द करते हैं।

यहॉ कोई भी भोजन कौफ़ी के बिना पूरा नहीं होता। विशेषकर जब कुछ लोग घर में इकट्ठा होते हैं तो कौफ़ी रस्मी तौर पर[93]

---

[93] In a ceremonial way

बनायी जाती है। अर्थात कौफ़ी के बीज भूनने, पीसने और उबालने तक का सारा काम वहीं सब लोगों के सामने ही होता है।

उस समय वातावरण को सुगन्धित करने के लिये भारतीय प्रकार की धूप, अगर बत्ती, लोबान आदि कुछ सुगन्धित पदार्थ भी जलाये जाते हैं।

इथियोपिया की कौफ़ी बहुत प्रसिद्ध है इसलिये वहाँ लोग कौफ़ी बहुत पीते हैं। वहाँ लोग दो प्रकार की कौफ़ी पीते हैं – बुन्ना वतत और वतत बुन्ना।

बुन्ना का अर्थ होता है कौफ़ी और वतत का अर्थ होता है दूध। बुन्ना वतत में कौफ़ी में दूध पड़ता है जैसे हम लोग अपनी चाय में थोड़ा सा दूध डालते हैं। जब कि वतत बुन्ना में दूध भर कर उसमें थोड़ा सा कौफ़ी का पानी डाल देते हैं।

यहाँ की कौफ़ी दूर दूर के देशों में भी निर्यात की जाती है। कहा जाता है कि कौफ़ी का जन्म इसी देश में हुआ था। इथियोपिया देश में एक प्रान्त है जिसका नाम है काफ़ा[94], वहीं पर कौफ़ी का पौधा होता है। इसी लिये उस प्रान्त का नाम ही काफ़ा पड़ गया। देश की बहुत सारी कौफ़ी वहीं से आती है।

[94] Kaffa – a province in Ethiopia

वैसे यहाँ लोग चाय भी पीते हैं। उसको ये लोग शाय[95] कहते हैं। अक्सर चाय ये लोग बिना दूध की पीते हैं पर उसमें चीनी बहुत डालते हैं।

रहन सहन – पेय पदार्थ

राष्ट्रीय पेय पदार्थों में यहाँ शाय कौफ़ी के अलावा तीन प्रकार के पेय प्रचलित हैं — टैला, तज और अराकी[96]। टैला शराब बाजरे या मक्का को सड़ा कर बनायी जाती है। यह बहुत नशीली भी नहीं होती और साथ ही बड़ी स्वादिष्ट भी होती है।

तज शराब शहद को सड़ा कर बनायी जाती है और इनका यह पेय भी बड़ा स्वास्थ्यदायक तथा स्वादिष्ट होता है।

अराकी एक प्रकार की स्पिरिट होती है जो कई प्रकार के अनाजों को डिस्टिल्ड कर के बनायी जाती है। यह थोड़ी तेज़ होती है और अच्छी पाचन शक्ति रखने वाले ही इसको पी सकते हैं।

---

[95] Chai - tea

[96] Tella, Taj, Araki – varioys liquors

रहन सहन – पहनावा



यहॉ के लोग भिन्न भिन्न प्रकार के सूती कपड़े पहनते हैं। पर यहॉ का मुख्य पहनावा शम्मा[97] है। यह एक सूती चादर होती है जो यहॉ की स्त्रियॉ और लड़कियॉ अपने राष्ट्रीय पहनावे, लम्बी सी घेरे वाली फ्राक, के ऊपर ओढ़ती हैं।

पुरुष भी इसे अपने राष्ट्रीय पहनावे के ऊपर ओढ़ते हैं परन्तु वे इसे पश्चिमी पहनावे के ऊपर भी ओढ़ते हैं। यह शम्मा इकहरी या दोहरी या चौहरी सूती चादर होती है और इनके दोनों ओर चौड़ाई में सुन्दर बार्डर बने रहते हैं। धनी लोग रेशम के कपड़े भी पहनते हैं।

अधिकतर ये लोग सफेद कपड़े ही पहनते हैं।



[97] Schamma – a kind of cotton shawl worn over the main dress of both males and females

रहन सहन – घर

इनके रहने के घर नीचे से सामान्यतया गोल और उपर से कोन की शक्ल के होते हैं।



छोटे घरों में घर की छत को एक डंडे के सहारे छाया जाता है और उसके अन्दर कोई विभाजन नहीं होता। बड़े घरों में अन्दर की ओर एक और गोल दायरा होता है।

ये घर वृक्ष के तनों और शाखाओं को आपस में बॉध कर बनाये जाते हैं। बाद में इनकी दीवारों को मिट्टी, गारा, राख, भूसा आदि मिला कर प्लास्टर कर दिया जाता है।

इस घर का एक ही दरवाजा होता है जो काफी छोटा और नीचा होता है। इस दरवाजे के अतिरिक्त और कोई दूसरा दरवाजा या खिड़की इन घरों में नहीं होती। हॉ, बड़े घरों में कभी कभी ऊॅचाई पर एक छोटी सी खिड़की बना देते हैं।

सोने के लिये इन घरों में मिट्टी के चबूतरे होते हैं जिन पर खालें या कम्बल बिछा लिये जाते हैं। यह इनके रहने का सबसे सादा ढंग है। धनी लोगों के घर बड़े होते हैं और अन्दर से विभाजित भी होते हैं यानी उनमें कुछ कमरे जैसे बने होते है।

वे अपने घरों को बनाने में मिट्टी, गारा, राख और भूसे के अतिरिक्त पत्थरों का प्रयोग भी करते हौं। इन गोल घरों को यहॉ की भाषा में टुकुल[98] कहते हैं।

इनके मकानों में अधिक सामान नहीं होता। एक दो नीचे स्टूल, एक मेज लकड़ी की या पत्थर की, और खाना पकाने और खाना खाने के बरतन।

हॉ, इनके मकानों में चारों ओर खूब सारी खूॅटियॉ लगी रहतीं हैं जिन पर ये अपने कपड़े, खालें, पानी के बर्तन, चाकू आदि टॉगते हैं। शहरों के मकान आधुनिक ढंग के बने होते हैं।

रहन सहन – समय

समय के मामले में ये लोग सारे संसार से निराले हैं। और सबसे अधिक दिलचस्प बात तो यह है कि ये लोग अपने इस निराले समय का अभी पालन भी कर रहे हैं।

अभी हम समय के सबसे बड़े माप से शुरू करते हैं – यानी वर्ष से। ये लोग कौप्टिक कैलेन्डर[99] जैसा कैलेन्डर प्रयोग करते हैं जिसमें वर्ष में 13 महीने होते हैं। 12 महीने 30–30 दिन के और तेरहवॉ महीना 5–6 दिन का। इसी कारण इथियोपिया को तेरह महीने की धूप की भूमि[100] भी कहा जाता हैं।

---

[98] Tukul – name of the house in Ethiopia
[99] Coptic Calendar
[100] Land of Thirteen Months of Sunshine

यह संसार का अकेला देश है जो इस कैलेन्डर को मानता है। यह कैलेन्डर मिश्र के कैलेन्डर से निकला है। इस कैलेन्डर के महीनों के नाम इथियोपिया में गीज़ भाषा में हैं क्योंकि इनके चर्च में अभी भी गीज़ भाषा ही प्रयोग की जाती है।

इनका यह वर्ष **11** या **12** सितम्बर से शुरू होता है और **10** या **11** सितम्बर को समाप्त होता है। इनका वर्ष हमारे कैलेन्डर[101] के वर्ष से **7–8** वर्ष पीछे भी है। जैसे **11** सितम्बर **1989** को इनका **1982** वर्ष प्रारम्भ हुआ था।

इस भिन्न कैलेन्डर के कारण यहाँ पर ईसाई त्यौहार भी संसार से भिन्न तारीखों को मनाये जाते हैं। उदाहरण के लिये बड़े दिन या क्रिसमस जैसा मुख्य त्यौहार जो संसार भर में **25** दिसम्बर को मनाया जाता है यहाँ **7** जनवरी को मनाया जाता है।

इसी प्रकार ईस्टर भी जिसकी संसार भर में कोई निश्चित तारीख नहीं है पर यह यहाँ यह हर **4** वर्ष बाद यूरोपियन ईस्टर के साथ पड़ता है। दूसरे वर्षों में दोनों ईस्टर में सामान्यतया **5** सप्ताह से अधिक का अन्तर नहीं होता।

इथियोपिया में **12** घन्टे का दिन और **12** घन्टे की रात मानी जाती है। इसलिये इनका दिन सुबह **6** बजे से शुरू होता है और इसी लिये सुबह **7** बजे इनका दिन का **1** बजता है और शाम को **7** बजे रात का **1**।

---

[101] Gregorian Calendar

यही समय इनके यहाँ रोजमर्रा में प्रचलित है और ये लोग इसी समय को मानते भी हैं। केवल कुछ पढ़े लिखे लोगों को छोड़ कर बाकी सब सामान्य व्यक्तियों की घड़ियाँ इसी समय से मिली रहती हैं और वे यही समय समझते भी हैं। आपस में भी ये इसी समय के हवाले से बात करते हैं।

रहन सहन – त्यौहार

इनके यहाँ तीन बड़े त्यौहार मनाये जाते हैं। 11 सितम्बर को इनका नव वर्ष, मस्करम[102] बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

27 सितम्बर को ये मस्कल[103] मनाते हैं जो मूल क्रास[104] की खोज की खुशी में मनाया जाता है। इस त्यौहार में ये लोग रात को अपने अपने घरों में लकड़ियों के छोटे छोटे ढेर जलाते हैं जैसे भारत में होली जलती है।

तीसरा त्यौहार इनका क्रिसमस या बड़े दिन का होता है। यह इनका धार्मिक त्यौहार होता है जो ये लोग 7 जनवरी को मनाते हैं। इसमें ये लोग चर्च जाते हैं, बकरे का माँस खाते हैं और गैन्ना[105], एक हाकी जैसा खेल, खेलते हैं।

---

[102] Meskerem day is their New Year

[103] Meskel is the day on which they discovered the "True Cross"

[104] Read the article entitled "Story of Ethiopia's True Cross" and "Story of Ethiopia's True Cross-2" given later in this book

[105] Genna – a hockey-like game

रहन सहन – संगीत और नृत्य

ये लोग संगीत और नृत्य के बहुत शौकीन होते हैं और हर अवसर पर नाचते गाते हैं। सामान्यतया यहाँ एक व्यक्ति एक पंक्ति गाता है और शेष लोग उसे ताली बजाते और नाचते हुए दोहराते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों साथ साथ नाचते हैं।

यहाँ तीन प्रकार के संगीत और नृत्य प्रचलित हैं — एक तो केवल खुशी एवं प्रसन्नता के गीत और नृत्य हैं, दूसरे युद्ध के गीत और नृत्य हैं जो देश के उत्तरी भाग में अधिक प्रचलित हैं और तीसरे मृत्यु गीत हैं जो अक्सर ही बहुत करुण और दर्द भरी आवाज़ में गाये जाते हैं।

रहन सहन – विवाह

यहाँ बहुविवाह कानूनन वर्जित है पर तलाक आसान है। स्त्री पुरुषों के सम्बन्धों पर कोई रोक टोक नहीं है अतः सब अपनी अपनी इच्छानुसार रहते हैं।

इनके यहाँ नाम लिखने का एक अलग और विचित्र तरीका है। हमारे यहाँ की तरह या पश्चिमी प्रथा की तरह यहाँ नाम के आगे परिवार का नाम या गोत्र का नाम आदि नहीं जोड़ा जाता बल्कि केवल अपनी माता का ही नाम जोड़ा जाता है।

ऐसा इसलिये होता है क्योंकि इनके यहाँ स्त्री पुरुषों के सम्बन्धों पर कोई रोक टोक नहीं है इसलिये इनको अपने पिता का तो पता

नहीं होता पर माँ तो जन्म देती है इसलिये इनको अपनी माता का नाम पता होता है और इसी लिये ये लोग अपनी माता के नाम से ही पहचाने जाते हैं।

इसी लिये इनके यहाँ नाम में दो शब्द होते हैं और वे दोनों ही दिये हुए नाम[106] होते हैं – पहला अपना नाम और दूसरा माँ का नाम[107]।

लड़कियाँ विवाह के बाद भी अपना वही पुराना नाम रखती हैं अतः यहाँ किसी स्त्री को श्रीमती शर्मा या श्रीमती गुप्ता कह कर नहीं पुकार सकते। ऐसा इसलिये भी है क्योंकि इनके यहाँ कोई पारिवारिक नाम ही नहीं हैं।

विवाहित व अविवाहित स्त्रियों के लिये यहाँ श्रीमती व कुमारी जैसे शब्द हैं जो नाम से पहले लगाने पर किसी स्त्री के विवाहिता या कुमारी होने का पता देते हैं। पर अक्सर सब लोगों को यहाँ उनके पहले नाम अर्थात उनको उनके अपने नाम से ही पुकारा जाता है।

रहन सहन – सामान्य

जब ये लोग आपस में मिलते हैं तो काफी देर तक इनके अभिवादन चलते रहते हैं जिनमें उस व्यक्ति का, उसके बच्चों का, उसके

[106] Given name or the first names, means the name which is given by parents to the child at the time of his or her birth.

[107] For example, if a man’s name is Getachew Birru. Both names are first names. The first name Getachew is the man’s own name and Birru is his mother’s first name.

परिवार का, उसकी खेती का, उसके काम आदि का हाल पूछा जाता है।

सामान्यतया इन सबके उत्तर "अच्छे हैं" या "ठीक हैं" में दिये जाते हैं चाहे वास्तविकता कुछ भी हो। यदि कोई बुरी खबर किसी के बारे में होती भी है तो वह औपचारिकता निभाने के बाद ही दी जाती है।

मिलते समय ये लोग हाथ भी मिलाते हैं और एक दूसरे से गाल से गाल मिला कर कई बार चूमते भी हैं। चूमना सम्बन्धियों, मित्रों और जानने वालों में अधिक प्रचलित है पर पति पत्नी का खुले आम चुम्बन यहाँ आम नहीं है।

यदि इन लोगों को कोई भेंट दी जाये तो ये लोग उसको थोड़ा झुक कर दोनों हाथों में बड़े आदर के साथ स्वीकार करते हैं। एक हाथ से भेंट स्वीकार करना यहाँ भेंट का अपमान समझा जाता है।

भारत से इथियोपिया का सम्बन्ध

भारत का इथियोपिया से सम्बन्ध बहुत पुराना है। कुछ लोगों का तो यहाँ तक कहना है कि यह सम्बन्ध महाभारत काल से भी अधिक पुराना है।

ईसा से **400** वर्ष पूर्व जब यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू[108] यहॉ आया तो उसने यूनान के राजा अलैक्ज़ैन्डर[109] को लिखा कि सोकोत्रा द्वीप[110] पर यूनानी अपना राज्य कर सकते हैं।

बस अलैक्ज़ैन्डर ने तुरन्त ही अपने कुछ आदमी उस द्वीप पर अपना अधिकार जमाने के लिये भेज दिये जिन्होंने वहॉ रह रहे भारतीयों को हरा कर अपना राज जमाया।

कहते है कि रज़िया सुलतान जिस गुलाम से प्रेम करती थी वह गुलाम भी इथियेपिया का ही था – जमालुद्दीन याकूत।

भारतीय व्यापारी खम्भात की खाड़ी[111] द्वारा इधर गेहूँ, चावल, घी, सूती कपड़ा आदि बेचने के लिये लाते थे और यहॉ से हाथी दॉत, कछुए के खोल और गेंडे के सींग[112] आदि भारत बेचने के लिये ले जाते थे।

यहॉ की खुदाई से मिली वस्तुओं से यहॉ पर भारतीयों की उपस्थिति का भी पता चलता है जैसे ब्राह्मी लिपि में लिखी हुई अंगूठी, सन् **230** एडी के लगभग के कुशान सोने के सिक्के यहॉ

---

[108] Philosopher Aristotle
[109] The King of Greece – Alexander the Great
[110] Sokotra Island is the largest island in Indian Ocean 150 miles East of the Horn of Africa and 240 miles South of the Arabian Peninsula. It is part of Yemen. In 2013, the archipelago became its own governorate. The island is very isolated and through the process of speciation, a third of its plant life is found nowhere else on the planet. It has been described as the most alien-looking place on Earth. The island measures 82 miles in length and 31 miles in width.
[111] Bay of Cambay
[112] Horns of Hippopotamus

मिले हैं। सन् 300 एडी में लिखी गयी यहाँ की पुस्तकों में भारतीय व्यापारियों का वर्णन है।

छठी शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ के राजा ने नौ भारतीय नावें युद्ध के लिये ली थीं और उन्नीसवीं शताब्दी से तो भारतीयों का इधर काफी आना जाना रहा।

इथियोपिया का महत्व

इस देश को आदि मानव जाति की क्रीड़ा भूमि भी कहा जाता है क्योंकि कुछ ही वर्ष पूर्व यहाँ की खुदाई में लगभग 35 लाख वर्ष[113] पूर्व के मानव का एक पूरा ढाँचा मिला है। इस ढाँचे का नाम लूसी रखा गया है।

क्योंकि यह ढाँचा इथियोपिया में मिला था इसलिये इसका कोई इथियोपियन नाम होना भी बहुत जरूरी था। इसका इथियोपियन नाम "डिन्किनेश" है। इस ढाँचे के मिलने के पश्चात से इस देश की महत्ता कुछ अधिक ही बढ़ गयी है।[114]

दूसरे यहाँ के लालीबेला के चट्टानों से काट कर बनाये गये चर्च[115] बहुत प्रसिद्ध हैं क्योंकि ये संसार के चट्टानों से काट कर बनाये गये दूसरे गिरजाघरों से बिल्कुल भिन्न हैं।

---

[113] 3.5 million years old – read about this Lucy in the 7th chapter "Lucy in the Sky" of this book

[114] Read Lucy in the Sky later in this Book

[115] Rockhewn Churches of Lalibela

लालीबेला के गिरजाघर जिस चट्टान से काटे गये हैं वे उस चट्टान से बिल्कुल अलग कर दिये गये हैं जब कि संसार के दूसरे ऐसे गिरजाघर चट्टानों से अलग नहीं किये गये हैं।

इन गिरजाघरों की तरह का अपने भारत में केवल एक मन्दिर है और वह है ऐलोरा का द्रविड़ मन्दिर कैलाश[116]। क्योंकि यह मन्दिर भी पहाड़ से काट कर अलग कर दिया गया है और इस पर भी लालीबेला के गिरजाघरों की भाँति अन्दर और बाहर दोनों ओर खुदाई का काम किया गया है।

पर दोनों के बनने के समय में लगभग **500** वर्ष का अन्तर है। कैलाश मन्दिर **769** और **783** के बीच में बना था जब कि ये चर्च **1188** से **1228** के बीच के समय के बने हुए हैं। ऐसे चर्च यहाँ पर ग्यारह हैं।



तीसरी विशेष चीज़ है यहाँ के ओबैलिस्क[117]। इनमें अक्सुम का ओबैलिस्क सबसे ज़्यादा प्रसिद्ध है। ये वहाँ चौथी शताब्दी में बनवाये गये थे। ये कई मंजिल ऊँचे होते हैं और इनमें ऊपर तक कई नकली खिड़कियाँ और दरवाजे होते हैं।

[116] Kailash Temple of Ellora in India
[117] Obelisks or steelae of here are very famous.

कुल मिला कर इथियोपिया एक सुन्दर देश है जहाँ इसमें एक ओर ऊँचे पहाड़ हैं तो दूसरी ओर गहरी घाटियाँ और रेगिस्तान।

एक ओर पहाड़ों पर तापमान **3–4** डिग्री सेल्सियस तक पहुँचता है तो दूसरी ओर मैदानों में **60** डिग्री सेल्सियस तक की गर्मी पड़ती है।

यहाँ लम्बी लम्बी नदियाँ हैं, झीलें हैं और लम्बा समुद्र का किनारा है। यहाँ कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान भी दर्शनीय हैं।[118]



[118] This article was broadcast by Manila (Philippine) Radio Station on May 28, 1990 in two parts - in the morning and in the evening.

3 अबिसीनिया[119]

अपने इतिहास में अबिसीनिया के लोग अपने राज्य और राजकुमारों का आरम्भ बहुत पुराने समय से मानते हैं। इतना कि संसार के पहले आदमी आदम[120] से ले कर फासिलेदास[121] तक के वे अपने सब राजाओं की वंशावली जानते हैं।[122]

कहते हैं कि यह राज्य बिना किसी रोक टोक के बहुत दिनों तक ऐसे ही बना रहा और यदि यह सच है तो ऐसा किसी और राज्य में नहीं हुआ।

इस राज्य की शक्ति और राज्य नोआ[123] के पुत्र हाम[124] से शुरू होता है। इसको इन्डीज़[125] के प्रैस्टर जौन[126] का राज्य भी कह कर पुकारा जाता है।

[119] Abyssinia – the old name of Ethiopia

[120] Adam – the first man

[121] Fasiledas – one of the King of Ethiopia – proclaimed as its Emperor in 1630.

[122] The list of kings of Abbyssinia is given in their book "Kebra Negast". This book was written in 14th century and is an important link to the history of the kings of Ethiopia. Fasiledas ruled at the time Jeronimo Lobo – the traveler who came to Ethiopia in 15th century.

[123] Noah who is famous for his Arc

[124] Ham – Ham's son was Cush, and Cush's son was Aethiops. In fact this kingdom was named as Aethiops or Ethiopia on his name only.

[125] Indies

[126] Prester John – is a legendary Christian patriarch and king popular in European chronicles and tradition from the 12th through the 17th century. He was said to rule over a Christian nation lost amid the Muslims and pagans of the Orient. Prester John as a descendant of the Three Magi, ruling a kingdom full of riches, marvels, and strange creatures.

यह बड़ी अजीब सी बात है क्योंकि सच तो यह है कि प्राचीन वास्तविक प्रैस्टर जौन और उसके राज्य को तो लोग भूल चुके थे परन्तु यूरोप के पूर्वीय भाग में इसकी अफ़वाहें और इसके ईसाई होने के संकेतों के कारण पुर्तगाली इस राज्य को खोजना चाहते थे। पर क्योंकि इस राज्य के बारे में उनको कुछ पता नहीं था इसलिये वे कुछ कर नहीं पा रहे थे।

उधर उन्होंने इथियोपिया के राजाओं में ईसाई धर्म के काफी संकेत पाये और उन्होंने उसको प्रैस्टर जौन के समय से मिलाया तो उनको विश्वास आ गया कि यही प्रैस्टर जौन का राज्य था और पुर्तगालियों की यह ढूँढी हुई कहानी एक बार फिर संसार के सामने लायी गयी और प्रकाशित की गयी।

यहाँ के बादशाह का ठीक नाम है अबिसीनिया का बादशाह[127] क्योंकि वह इसी नाम से जाना जाता था।

देश का नाम

इस देश का ग्रीक नाम ऐथियोप्स था। महाकवि होमर ने यह नाम अपने इलियड में दो बार और ओडैसी[128] में तीन बार प्रयोग किया

[127] The Emperor of Abyssinia

[128] Its Greek name was Ethiops and Homer has used this name two times in his Iliad and three times in his Odessy epics.

है। ग्रीक इतिहासकार हैरोडोटस[129] ने इस नाम को मिश्र के दक्षिणी भाग, सूडान और आधुनिक इथियोपिया के लिये प्रयोग किया है।

इथियोपिया नाम बाइबिल की ओल्ड टैस्टामैन्ट के कई अनुवादों में भी प्रयोग किया गया है जब कि हिब्रू बाइबिल में इसका नाम कुश दिया गया है जिसको नूबिया[130] भी कहते हैं।

इसके मुख्य शहर या प्रान्त हैं – टिगरे, अक्सुम, अस्मारा, ऐडिस अबाबा, डिरे डावा, गाम्बैला, हरार, अवासा, गोंडर, डेसी, सिडामो आदि[131]। यहाँ की मुख्य जातियाँ हैं – अम्हारा, टिगरे, ओरोमो या गाला, वोलायटा, गुरागे, सिडामा आदि[132]।

अबिसीनिया का इतिहास

अबिसीनिया के इतिहास में लिखा है कि नोआ का पुत्र हाम इन राजाओं का पूर्वज है और अब तक, यानी **1526** तक, इनके यहाँ **172** राजा हो चुके हैं जिनमें कुछ स्त्रियाँ भी थीं।

इनमें से दो स्त्रियों का नाम बाइबिल में आता है – एक तो शेबा की रानी[133] का जिसका ज़िक्र गोस्पल्स[134] में भी आता है और जिसे

[129] Greek historian Herodotus has used this name to denote the southern part of Egypt – including Sudan and modern Ethiopia.

[130] Cush and Nubia – old names of Ethiopia

[131] Regions - Tigre (or Tigray), Gondar, Asmara, Addid Ababa (modern capital), Axum (or Aksum – the old capital of Ethiopia), Dire-Dawa, Gambella, Harar, Awassa, Gondar, Dessi, Eritrea (now an independent country),

[132] Tribes – Amhara, Oromo, Wolayatta, Gurage, Sidama etc

[133] Or Queen of Saba (Queen of Sheba)

[134] Gospels

अबिसीनिया के लोग निकौला[135] या मकेडा[136] कहते थे। इसका ज़िक्र इनकी अपनी भाषा में लिखे गोस्पल्स में भी है।

इसके अतिरिक्त जहाँ यह रहती थी और इसका दरबार आदि लगा करता था वह जगह आज भी मौजूद है। वहाँ एक बहुत ही सुन्दर स्मारक[137] बना हुआ है और उस शहर में भी, जैसा कि वे कहते हैं कि वह वहाँ पैदा हुई थी, अभी तक भी उसका नाम पाया जाता है।

अबिसीनिया के लोगों का यह दावा है कि उनके राजा इसी प्रसिद्ध रानी के द्वारा जूडा जनजाति[138] की सन्तानें हैं क्योंकि उनका कहना है कि जो यात्रा रानी मकेडा ने जेरुसलम के लिये की थी और जो बाइबिल में भी वर्णित है उससे उसके सोलोमन से एक पुत्र हुआ जिसका नाम मिनीलिक[139] था और जिससे और राजा लोग पैदा हुए।

दूसरी शक्तिशाली स्त्री कैनडेस[140] थी जिसने इस राज्य पर राज किया। इसका ज़िक्र भी बाइबिल में एक्ट्स औफ दी अपोसिल्स के आठवें अध्याय के **26–40** वर्सेज़[141] में आता है। अबिसीनिया के

---

[135] Nicaula – another name of the Queen of Sheba (Makeda)
[136] Macheda, or Maqueda
[137] Monument
[138] Judah tribe – as the stories show that the Queen of Sheba went to Solomon, the King of Judah, and came back with his son Menelik whose descendents rules thereafter.
[139] Menelik or Minilik
[140] Candace
[141] Acts of the Apostles, 8: 26-40

लोग उसे जूडिथ[142] के नाम से पुकारते थे पर उसके और भी कई नाम थे। उसी के द्वारा कैथोलिक ईसाई धर्म यहाँ आया।

उसको ईसाई बनने की इतनी अधिक खुशी हुई जितनी खुशी उससे पहले वाले लोगों को नहीं हुई थी क्योंकि वे लोग बाइबिल की बाढ़ के समय से उस समय तक बहुत शताब्दियों तक सच्चे भगवान से दूर रहे।

शेबा की रानी से शुरू करके इन लोगों ने ज्यू धर्म के कानून और रीति रिवाज अपनाये तो, लेकिन रानी और मिनीलिक के शीघ्र बाद ही उन्होंने वे छोड़ भी दिये और पुरानी मूर्त्ति पूजा पर वापस आ गये। पर साथ साथ कुछ जूडा देश के रीति रिवाज भी चलते रहे।

1625 तक यहाँ के लोग मिश्र के अलेक्ज़ैन्ड्रिया[143] का "एक प्रकृति" वाला सिद्धान्त मानते रहे जिसको काउन्सिल औफ चाल्सीडौन[144] ने **451** में प्रयोग के लिये अयोग्य ठहरा दिया था।[145]

जहाँ तक इस राज्य की सांसारिक दशा का प्रश्न है इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह संसार की बड़ी हस्तियों में से एक था क्योंकि इसमें कई राज्य और कई प्रान्त शामिल थे और अफ्रीका में भी यह एक काफी बड़ा देश था।

---

[142] Judith – another name of Queen Candace

[143] Alexandria – capital and a port city of Egypt on the southern coast of Mediterranean Sea.

[144] Council of Chalcedon

[145] These people still observe this theory.

यह अफ्रीका के सुदूर उत्तर पूर्वीय किनारे पर लाल सागर की ओर स्थित है। प्राचीन समय में पश्चिम में इसकी सीमा कौंगो तक जाती थी।

प्राचीन काल में इसमें **34** राज्य और **18** प्रान्त थे। आजकल इसमें केवल पॉच राज्य और छह प्रान्त हैं। इसके राज्य और प्रान्तों में केवल टिगरे अकेला ही पुर्तगाल के बराबर है। बैगेमडिर भी लगभग उतना ही बड़ा है और गोज्जम भी। अम्हारा और डमोट कुछ छोटे हैं।[146]

यहॉ के लोग भिन्न भिन्न प्रकार के हैं। कई धर्मो के लोग रहते हैं यहॉ, जैसे मुसलमान, ज्यू, ईसाई। कुछ लोग निपट जंगली हैं और कुछ लोग बड़े नम्र और सभ्य।

यहॉ के अम्हारा लोग सबसे अच्छे हैं। वे बहुत नम्र हैं और बातचीत करने योग्य हैं। इसके बाद में टिगरे या अबिसीनिया के लोग आते हैं। और इसके बाद आते हैं डमोट, गफ़ात और अगौ[147] लोग। इनके बाद सब जंगली हैं।

---

[146] Tigray, Begemdir, Gojjam, Amhara, Damot – all are provinces of Ethiopia. They are mentioned here so that people should not regard them as the kingdoms just for name sake.

[147] Gafat, Agaw

गाला या ओरोमो लोग

यहॉ गाला या ओरोमो लोगों की संख्या सबसे अधिक है और ये बहुत सारे देवी देवताओं को मानते हैं। ये बहुत ही जंगली और बहुत खूँख्वार लोग हैं और इस देश में विदेशी हैं।

सन् **542** में ये लोग अफ्रीका के अन्दर से ही अनगिनत संख्या में इस देश को नष्ट करने के लिये यहॉ आये थे और जब ये आये तब जिसने भी इनसे लड़ने की कोशिश की, उन सबके साथ ये बहादुरी से लड़ते गये।

साथ में ये बहुत सारे राज्यों तथा प्रान्तों को भी नष्ट करते चले आये। इन्होंने उन स्थानों को जहॉ जहॉ से ये लोग हो कर आये थे सबको लगभग मनुष्यहीन कर दिया था क्योंकि इनको जो भी मिला उसी को इन्होंने तलवार के घाट उतार दिया।

कुछ लोग या तो बच कर भाग गये या अगर वे चौकन्ने थे तो अचानक पकड़े जाने के डर से भाग गये। ये लोग किसी प्रान्त में जा कर नहीं बसे बल्कि पशु चराते ही घूमते रहे।

ओरोमो लोग अच्छे घुड़सवार हैं। हर आठ वर्ष के बाद ये अपना राजा चुनते हैं। ये लोग खेती नहीं करते बल्कि मॉस और दूध ही पैदा करते हैं।

ये कोई मूर्त्ति पूजा तो नहीं करते परन्तु इस बात में विश्वास अवश्य करते हैं कि कोई है जो इस संसार से बड़ा है।

इनमें अन्ध विश्वास काफी है जिनको ये वाका[148] बोलते हैं जिसका अर्थ होता है स्वर्ग, भगवान – सबको पैदा करने वाला। पर अपने जंगलीपन के कारण इस विषय में इनको ज्ञान कोई नहीं है।

इथियोपिया में एक कैथोलिक पैट्रियार्क[149] ने इनके प्रवेश से पहले ही इनके प्रवेश के विषय में भविष्यवाणी की थी। उसने बताया कि उसने स्वप्न में देखा कि सारा इथियोपिया काली चींटियों से भर गया है।

क्योंकि इस पैट्रियार्क को इथियोपिया के राजा ने अपने वायदे के खिलाफ बहुत सताया था और फिर देश निकाला दे दिया था। तब इस पैट्रियार्क को भगवान की ओर से इथियोपिया की सजा का सन्देश आया था और इसी वजह से उसने यह भविष्यवाणी की थी।

काली से उसका अर्थ था कि ये लोग बहुत काले होंगे और चींटियों से उसका अर्थ था कि ये लोग विनाशकारी होंगे, और भर गया से उसका अर्थ था कि वे बहुत बड़ी संख्या में आयेंगे।

उस समय मिश्र के पास उत्तर में मुसलमान लोग रहते थे। दक्षिण और पश्चिम में भगवान को न मानने वाले लोग रहते थे और लाल सागर की ओर पूर्व में तुर्क लोग रहते थे। केवल थोड़ी सी ही भूमि उस समय राजा के पास थी।

---

148 Waka

149 Catholic Patriarch

रीति रिवाज और सभ्यता के विषय में यहॉ के लोग बहुत ही पुराने विचारों के हैं। उदाहरण के लिये इनके घर चूने आदि के नहीं बने होते बल्कि भूसे और तिनके के बने होते हैं।

फूस की छत वाली गोल झोंपड़ियॉ ही होती हैं, चाहे छोटी हों या बड़ी। सारे गॉवों में ऐसे ही घर हैं। केवल कुछ ही घर पत्थर और मिट्टी के बने हैं।

यहॉ कोई शहर नहीं है, सब गॉव ही गॉव हैं। सबसे बड़े यहॉ पर वे कैम्प हैं जहॉ पर बादशाह रहता है या गवर्नर रहता है। ये छावनी का काम करते हैं क्योंकि यहॉ सदा ही किसी न किसी से लड़ाई चलती रहती है। इस प्रकार यहॉ पर लगभग हर समय ही युद्ध चलता रहता है क्योंकि इनके शत्रु भी कम नहीं हैं।

हमारे देशों में जो खाने की वस्तुएँ पैदा होती हैं लगभग वे सभी वस्तुएँ यहॅा पैदा होती हैं परन्तु कम मात्रा में क्योंकि यहॉ के लोग मेहनती नहीं हैं। बीजों की कुछ जातियॉ यहॉ ऐसी हैं जिनसे बहुत ज़्यादा उपज होती है।

यहॉ की भूमि बहुत अच्छी है। हरी घास और फूल सारे साल होते हैं। अक्सर सारे फूल साल में दो बार खिलते हैं – एक बार जाड़े की वर्षा में यानी जुलाई अगस्त और सितम्बर में और फिर पानी देने पर गर्मी में।

यहॉ पर तो जो होता है वह तो होता है और जो नहीं होता वह इसलिये नहीं होता क्योंकि वह हो नहीं सकता, बल्कि वह इसलिये नहीं होता क्योंकि वह बोया नहीं जाता।

आज भी ये लोग ईस्टर से पहले **40** दिन का व्रत रखते हैं जिसमें ये लोग मॉस, दूध, दही, पनीर व मक्खन का परहेज करते हैं। इसी लिये ईस्टर से करीब डेढ़ महीना पहले ये लोग काफी फल इकट्ठा कर लेते हैं ताकि वे अपने व्रत के दिनों में अपनी कुछ परेशानी कम कर सकें।

वैसे आज भी सप्ताह में दो दिन, बुधवार और शुक्रवार को, ये लोग इसी प्रकार का व्रत रखते हैं।

लाल सागर के पास वाले हिस्से में जहॉ के लोग भी काफी काले हैं और दूसरी जगह जहॉ भी ये लोग रहते हैं वहॉ की जलवायु भी ठीक है और वहॉ के लोग भी कम काले तथा कम भोंडे हैं।

अबिसीनिया वाले लोग अच्छे स्वभाव के हैं और समझदार हैं। इनका दिमाग भी ठीक है। ये बुद्धिमान हैं, बात करने में अच्छे हैं, निर्णय लेने में तेज़ हैं और किसी भी बात को जल्दी समझ लेते हैं।

भोजन

खाने में इनके यहॉ बहुत कम पकवान हैं और मेज पर रखने के लिये चॉदी के बर्तनों का तो इनके बादशाह को भी पता नहीं है।

खाने के लिये ये लोग मिट्टी की काली तश्तरियाँ प्रयोग करते हैं। काला रंग इनका बड़ा प्रिय रंग है, सिवाय कपड़ों के। कपड़े ये सफेद ही पहनते हैं। इसके अलावा इनका जो जितना पुराना बर्तन होगा उसका उतना ही अधिक मूल्य होगा।

इन मिट्टी की काली तश्तरियों में ये अपने तरीके से पकाया हुआ खाना खाते हैं जो इनको बड़ा प्रिय है। हम लोगों के लिये यह खाना खाना काफी कठिन है क्योंकि ये लोग उसमें काफी नमक मिर्च और मक्खन डालते हैं।

इनकी रोटी उसी दिन बनती है जिस दिन ये खाते हैं। यह रोटी गोल, पतली तथा बहुत बड़े आकार की होती है। इसे ये "अपा" कहते हैं। यह रोटी तमिल लोगों के अप्पम या दोसे से बहुत मिलती जुलती है। यह अपा तश्तरी में मेजपोश, नैपकिन और रोटी सबका काम करती है।

इनकी मेजें लकड़ी के एक गोल टुकड़े से बनी होतीं हैं और इतनी बड़ी होती हैं कि कभी कभी तो उसके चारों ओर पन्द्रह आदमी तक बैठ कर खाना खा सकते हैं। ये लोग खाना खाने से पहिले हमेशा हाथ धोते हैं पर उन्हें पोंछते नहीं।

जो कुलीन लोग होते हैं वे अपने हाथ से खाना नहीं खाते बल्कि उनको खिलाने के लिये एक आदमी होता है जो उनको कौर बना बना कर खिलाता रहता है। कौर जितना बड़ा होता है उतना

ही अच्छा होता है क्योंकि लालचीपन से खाना भी इनके यहाँ का एक तरीका है।

ये लोग खाना मुँह के दोनों ओर भर कर खाना पसन्द करते हैं क्योंकि इनका विचार है कि केवल गरीब लोग ही मुँह के एक ओर से खाना खाते हैं।

ये लोग खाना खूब आवाज के साथ खाते हैं – इस विषय में इनका विचार है कि केवल चोर ही शान्ति से खाना खाते हैं ताकि किसी को पता न चले कि वह खाना खा रहा है। लेकिन एक धनी या कुलीन आदमी अपने मुँह में दोनों ओर खाना भरेगा और खूब आवाज कर के उसे खायेगा।

इनका सबसे अच्छा खाना गाय का कच्चा माँस है जिसको ये आग पर गर्म नहीं करते क्योंकि यह तभी सबसे अच्छा होता है जब यह गाय के मारे जाने के बाद तुरन्त ही खाया जाये।

गाय की टाँग जो उसका सबसे अधिक स्वादिष्ट भाग होता है और जो तभी भी फड़क रही होती है जब वह मारी गयी हो वह तभी तुरन्त ही मेज पर खाने के लिये लायी जाती है।

उसके टुकड़े किये जाते हैं, उसके ऊपर नमक मिर्च छिड़का जाता है और उसी गाय के जिगर से निकले गये पाचक रस[150] को उसके ऊपर डालते हैं जैसे उससे अच्छी और कोई चीज़, जैसे

[150] Biles

सिरका या तेल या नीबू का रस आदि, उसके ऊपर डालने के लिये और है ही नहीं।

फिर वे टुकड़े मैन्टा[151] यानी आँत की चटनी, जो उसी गाय की आँत से नमक मिर्च प्याज और घी मिला कर बनाते हैं, से खाते हैं। जिस आदमी के लिखे हुए लेख से यह विवरण लिया गया है वह लिखता है —

"एक बार यह चटनी मेरे सामने बहुत बढ़िया खाने के रूप में लायी गयी। मुझे यदि पता न होता तो शायद मैं उसे खा लेता पर मैं जानता था इसलिये मैंने उसे अलग रख दिया। तुरन्त ही कोई और आदमी आया और उस चटनी को खा गया। आनन्द तब आया जब घर की मेजबान ने यह समझा कि वह चटनी मुझे बहुत अच्छी लगी और वह बेचारी दोबारा वह चटनी ले आयी। पहली बार तो मैं उसे न खाने में सफल हो गया था पर दूसरी बार मुझे उसे यह कह कर टालना पड़ा कि यदि यह बहुत अच्छा खाना है तो एक धार्मिक आदमी के लिये यह खाना ठीक नहीं है क्योंकि ऐसा खाना खाने से सांसारिक लगाव बढ़ता है।"

मेज पर जैसे ही लोग अपना खाना समाप्त करते हैं, जिसमें ये लोग अधिक समय नहीं लगाते, इनका पीना शुरू हो जाता है। और इसके लिये ये लोग कितना भी समय खर्च करें कम है क्योंकि कभी कभी तो ये लोग पीने में कई दिन और कई रातें बिता देते हैं।

और ऐसा जब ये कई बार और जल्दी जल्दी करते हैं तो जीवन में इनको इससे अच्छा और कुछ नहीं लगता। यही इनका खेल है,

[151] Manta means intestine

यही इनका मनोरंजन है, यही एक दूसरे के घर आना जाना है, यही बातचीत है और यही आराम है।

ये लोग अपने घर के पास एक गोला बना कर जमीन पर बैठ जाते हैं, बीच में एक या दो बड़े बर्तन शराब से भरे रख लेते हैं और जैसे ही वे खाली हो जाते हैं उनके स्थान पर दूसरे भरे बर्तन आ जाते हैं।

हर समूह में एक शराब निकालने वाला होता है और एक पिलाने वाला होता है। पहले ये दोनों, यानी शराब निकालने वाला और पिलाने वाला, गिलास या चीनी के प्याले से बर्तन में से शराब निकाल कर चखते हैं और तब लोगों को पिलाते हैं।

सबसे पहले शराब सबसे अधिक आदरणीय व्यक्ति को दी जाती है। सबके गिलास दो दो तीन तीन बार भरे जाते हैं। सब लोग इस प्रकार तब तक पीते रहते हैं जब तक कि दूसरे लोग उन्हें उनके घर तक उठा कर नहीं ले जाते।

जब ऐसा होता है तो ऐसे अतिथि को बड़ा भाग्यशाली समझा जाता है और मेजबान को उदार कि उसने अपने अतिथि को इतनी पिलायी कि अब वह स्वयं ही और पीने योग्य नहीं रहा।

इनकी यह शराब दो तरह की होती है – एक को टैला कहते हैं जो जौ से बनती है, और दूसरी को तज कहते हैं जो शहद को पानी

में घोल कर थोड़ा उगा हुआ जौ और एक पेड़ की शाख को उसके अन्दर डाल कर तीन चार दिन तक सड़ा कर बनायी जाती है।[152]

यह पेय पीने में न तो मीठा होता है और न ही खराब होता है पर शराब की तरह का नशा पैदा करता है। वैसे यह स्वास्थ्यदायक होता है, पाचक होता है और ये लोग यदि इसे न पियें तो जो कुछ ये जितनी मात्रा में खाते हैं वह इनको पचे ही नहीं।

जब इनका पीना समाप्त हो जाता है तो इनकी बैठक भी समाप्त हो जाती है। कभी कभी कुछ लोग वास्तव में बातचीत करने के लिये बैठे रह जाते हैं।

अंगूर की शराब इनको बुरी नहीं लगती परन्तु यहाँ अंगूर कम होते हैं और शहद बहुत अधिक होता है और आसानी से मिल जाता है तथा इसकी शराब भी आसानी से बन जाती है इसलिये ये इसी का प्रयोग अधिक करते हैं।

वेश भूषा

यहाँ साधारण लोग कपड़ों पर अधिक खर्च नहीं करते। इनको यदि कपड़ों के बड़े बड़े टुकड़े मिल जायें तो उसी में ये खुश रहते हैं। उन टुकड़ों में से ये लोग तंग पाजामे भी बना लेते हैं।

---

[152] Tella and Tej

कुलीन लोग मॅहगी पोशाकें पहनते हैं जैसे तुर्की की ब्रोकेड[153], मखमल, सिल्क आदि। उन लोगों के पास पोशाकें भी अधिक होती हैं।

अबिसीनिया के लोग अपनी सबसे अच्छी पोशाकें पहनना पसन्द करते हैं। ये लोग साथ में सोना चॉदी भी पहनते हैं। वैसे तो यहॉ सोना और चॉदी दोनों ही खूब होते हैं, पर सोना विशेषकर बहुत होता है।

वैसे तो ये लोग अपने बाल लम्बे रखना पसन्द करते हैं पर कभी कभी इनके छोटे बाल भी देखने को मिल जाते हैं। इनकी स्त्रियॉ हजारों प्रकार की शैली में बाल बनाती हैं – रिबन लगा कर, मोती गूॅथ कर आदि आदि।

पुराने और ऊॅचे स्तर के लोग लाल रंग की गोल टोपी पहनते हैं। कुछ लोग तुर्कों जैसी पगड़ी का भी प्रयोग करते हैं। ऊॅचे स्तर की स्त्रियॉ भी बढ़िया कपड़े पहनती हैं। उनके सिरों में, गरदन में और कानों में रत्न होते हैं।

इनकी स्त्रियों को बाहर की दुनियॉ का डर नहीं होता और वे आराम करना भी पसन्द नहीं करतीं इसलिये वे अपने पतियों से अधिक बाहर आती जाती हैं।

---

[153] Brocade is an expensive cloth woven with gold and silver threads along with silk or some other threads

इस बात से घर में यद्यपि हजारों परेशानियॉ होतीं हैं पर यहॉ के पति लोग इस विषय में कुछ कर नहीं सकते। वास्तव में वे कुछ करने के योग्य ही नहीं होते विशेषकर वे यदि किसी बड़े घर की स्त्री से विवाह कर लें तो।

इनके घरों में परदों आदि का प्रयोग नहीं होता। यदि कभी कुछ होता भी है तो केवल सूती छपा हुआ कपड़ा बिस्तर ढकने के लिये होता है।

इनके यहॉ कुर्सी या लकड़ी की आलमारी जैसी कोई चीज़ नहीं होती। ये लोग बहुत ही कम सामान के साथ रहते हैं और यात्रा करते हैं। इनका अधिकांश खर्च मनोरंजन यानी शराब पर होता है।

मेहमानदारी

पूरे राज्य में कहीं भी कोई सराय नहीं है परन्तु कोई भी आदमी जिस गॉव में भी जाता है उसको वहॉ शरण मिल जाती है। चाहे वह कहीं भी जाये, बिना धन लिये जाये, कितना भी सामान ले कर जाये।

वैसे यहॉ सामान ले जाने की आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि यदि यात्री यहॉ शाम के तीन बजे के बाद किसी गॉव में पहुॅचता है तो वहॉ के लोगों का यह कर्तव्य होता है कि वे उसको ठहरने के लिये घर दें, सोने के लिये चारपायी या बिस्तर आदि दें और खाने के लिये भोजन आदि दें और उसके आराम का पूरा ख्याल रखें।

पके हुए भोजन, रोटी और शराब के अतिरिक्त उसके नौकरों के लिये एक जीवित गाय तक भी दी जा सकती है। जो भी व्यक्ति यह कार्य करता है वह सरदार के सामने उसके प्रति किसी भी गलती या कमी का उत्तरदायी होता है। और यदि किसी प्रकार की कोई कमी रह जाती है तो उस व्यक्ति को उसका दुगुना देना होता है।

इस शाम के खाने के लिये गॉव का हर आदमी कुछ न कुछ देता है जो भी उससे देने के लिये कहा जाता है।

क्योंकि यहॉ का रिवाज ही ऐसा है इसलिये बाहर से आने वालों को यह सब देखने में बहुत अच्छा लगता है कि कोई भी आदमी जब किसी भी गॉव में जाता है तो वह उसको अपना गॉव जैसा लगता है और वहॉ के लोग भी उसे अपने घर वाले जैसे लगते हैं।

धन

यहॉ द्रव्य नहीं है बल्कि कुछ स्थानों को छोड़ कर यहॉ पैसों के स्थान पर लोहे के टुकड़े प्रयोग किये जाते हैं। सभी स्थानों पर वस्तु विनिमय होता है। कपड़ों के टुकड़ों, या जमा हुआ नमक, मिर्च, खाने का सामान, तुला हुआ सोना, बैल, गाय, तम्बाकू, बकरे, मुर्गी आदि से यह विनिमय होता है।

नमक यहॉ के विनिमय का सर्व सामान्य साधन है। इसी को ये लोग अन्दर के प्रदेशों में भी बेचने के लिये ले जाते हैं और उससे अपनी जरूरत का सामान भी खरीदते हैं।

नमक देश में जितना अधिक अन्दर ले जाते हैं उसका उतना ही अधिक मूल्य मिलता है। एक फुट लम्बे और ढाई इंच चौड़े सौ नमक के टुकड़ों का मूल्य एक सोने का पटका या डिरहम[154] होता है।

जैसे जैसे ये लोग देश में अन्दर की ओर बढ़ते जाते हैं नमक का मूल्य बढ़ता जाता है – दरबार में एक पटके में **80, 60, 40, 25, 15** और **12** नमक के टुकड़ों तक को खरीदा जा सकता है।

इस राज्य में नमक का इतना अधिक मूल्य है कि हर आदमी नमक का एक टुकड़ा अपनी कमर में बॉधे घूमता है। जब ये लोग आपस में मिलते हैं तो "भगवान तुम्हारी रक्षा करे" कह कर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं और एक दूसरे को नमक का आदान प्रदान करते हैं ताकि वे उसे चाट सकें।

नमक चाटने के लिये देने और उसे चाटने के बाद वे अपना अपना नमक का टुकड़ा वापस ले लेते हैं फिर उसके बाद बातें करना शुरू करते हैं।

दान

इनके यहॉ दान देना बहुत ही सामान्य है। यह दान धार्मिक कम और स्वाभाविक अधिक है। ये लोग सदा ही ऐसे आदमियों का पता रखते हैं जो गरीब हैं और उनको खाना खिलाते हैं।

---

[154] Pataka or Dirham (current currency of Dubai)

इससे एक बुरा परिणाम निकलता है कि यहाँ ये गरीब लोग दान इस प्रकार माँगते हैं जैसे देने वाले ने उनका कोई उधार ले रखा है और वह उसको देना ही है।

इसके अलावा ये लोग कोई भी वस्तु माँग लेते हैं – कपड़ा, खाना या और भी कुछ। कभी कभी तो ये लोग वह खाना भी माँग लेते हैं जो दूसरा आदमी खा रहा होता है – "मुझे वही खाना दो जो तुम खा रहे हो, जो तुम्हारे सामने तुम्हारी तश्तरी में रखा है।" जैसे मुझे मुर्गे की टाँग चाहिये, या मुझे कच्चा माँस चाहिये, आदि आदि।

और अक्सर वे जो माँगते हैं वह पाने में सफल भी हो जाते हैं। वे माँगी हुई मात्रा से कम या दूसरी वस्तुएँ स्वीकार नहीं करते। इसके प्रमाण में उस यात्री ने अपना एक अनुभव लिखा है जो यहाँ प्रस्तुत है —

"एक बार एक आदमी ने मुझसे भिक्षा माँगी। मेरे पास उस समय एक रोटी थी वह मैंने उसको दी। जब उसने उसको देखा तो बोला मुझे तो नमक चाहिये। मैने कहा "मेरे पास नमक तो नहीं है।" वह बोला "पर मुझे रोटी नहीं चाहिये।"

मैं अपनी रोटी ले कर आगे बढ़ गया तो वह मेरे पीछे पीछे आया और बोला "यदि तुम नमक नहीं दे रहे हो तो यह रोटी ही दे दो।" मैने कहा "मैं जो कुछ तुमको दे रहा था वह तुमने लिया नहीं। तुमको गरीब होने के नाते नम्रता तथा उपकार जैसे गुण सीखने चाहिये। अब तुमको न तो रोटी मिलेगी और न नमक।"

इस पर उसने जोर दे कर कहा कि उसे रोटी ही चाहिये परन्तु मैं उसे रोटी न देने पर अड़ा रहा और उस समय उसे कुछ भी खाने को नहीं मिला – न तो रोटी और न ही नमक।

इथियोपिया में लोग गरीब लोगों को जान बूझ कर गले लगाते हैं न कि दान द्वारा उनकी सहायता करने के लिये जो केवल हमारे देशों में पायी जाती है।

धर्म

ये लोग चर्च से निकाले जाने की सजा से बहुत डरते हैं। इनके यहाँ सेन्ट जौर्ज[155] की कसम का बहुत आदर है। ये लोग ठोस मूर्त्ति पूजा नहीं करते।

व्रत के समय में अभी भी ये पुरातन चर्च के नियमों को मानते हैं। दिन में एक बार खाते हैं और लैन्ट[156] के दिनों में सूर्य छिपने के पश्चात ही खाते हैं।

इन दिनों में ये माँस और दूध से बनी कोई भी चीज़ जैसे पनीर, मक्खन आदि नहीं खाते चाहे कोई कितना भी बीमार क्यों न हो। हर बुधवार तथा शुक्रवार को भी वे ऐसा ही व्रत रखते हैं और ऐसा ही खाना खाते हैं और शाम को तीन बजे के बाद ही खाते हैं।

ये व्रत भी इनका स्वभाव से अधिक सम्बन्धित है धर्म से कम क्योंकि बहुत से लोग पानी भी नहीं पीते और लैन्ट के दिनों में मास[157] पढ़ कर ही उस रोटी और वाइन से अपना व्रत तोड़ते हैं।

---

155 Saint George

156 Lent period – is a solemn religious observance in the liturgical calendar of many Christian denominations that begins on Ash Wednesday and covers a period of six weeks before Easter Sunday.

157 Mass held in Church

ये व्रत इनके यहाँ तब रखने ज़्यादा जरूरी होते हैं जब इनकी लड़की विवाह योग्य हो और या उसका विवाह हो गया हो और उसके एक बच्चा भी हो। क्योंकि इनके यहाँ विवाह जल्दी हो जाते हैं इसलिये इस व्रत की जिम्मेदारी भी इन पर जल्दी ही आ पड़ती है।

क्योंकि इस देश में मछली कम होती है इसलिये इन लोगों को केवल फल, सब्जी, वाइन तथा बीयर आदि पर ही गुजारा करना होता है।

ये लोग समय भी विचित्र ढंग से पता लगाते हैं। आदमी की अपनी परछाँई जब सात फीट होती है तब उनके तीन बजते हैं।

यहाँ मौन्क और चर्च में काम करने वाले पादरी[158] बहुत हैं। ऐसा लगता है कि शायद एक तिहाई जनता भगवान की सेवा में अवश्य ही लगी हुई होगी और ये चर्च तथा मोनैस्टरी[159] भी यहाँ इतनी अधिक हैं कि कहीं भी खड़े हो कर आवाज लगाओ तो किसी न किसी चर्च या मोनैस्टरी तक आवाज पहुँच ही जायेगी।

मोनैस्टरी में पुरुषों और स्त्रियों के लिये सदा अलग अलग चर्च होते हैं। ऐसा केवल यहीं है। पुरुषों के चर्च में सब एक साथ गाते हैं और खड़े रहते हैं क्योंकि इनके यहाँ घुटनों के बल बैठने का

---

[158] Monks and Clergymen working in Churches

[159] Monastery – a monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

रिवाज नहीं है। इसलिये इनके चर्च भी इसी प्रकार के बनाये जाते हैं जिनमें ये आसानी से खड़े रह सकें।

चर्च में जाने वालों के सबके हाथ में एक एक डंडा होता है जिससे ये लोग गाते समय ताल देते रहते हैं। साथ में अपना सारा शरीर हिलाते हैं और पैर भी जमीन पर मारते रहते हैं।

ये लोग अपना संगीत धीरे धीरे शुरू करते हैं और फिर उनकी लय और ताल तेज़ होती जाती है और फिर इतनी तेज़ हो जाती है कि उसमें रुकने का कोई समय ही नहीं होता और उसके बाद तो फिर सब अपना अपना राग अलापते हैं।

बाजे बजाने वाले अपने बाजे अपनी गति से बजाते हैं, खूब तालियॉ बजतीं हैं, सब खूब ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते हैं, नाचते हैं, कूदते हैं। और अन्त में तो ऐसा लगता है जैसे बजाय चर्च संगीत के कहीं शोर मच रहा हो।

इस विषय में इनका कहना है कि बाइबिल की साम्स[160] **47:1** में ऐसा ही कहा गया है।

ये लोग अपने विषय में इतना ऊँचा सोचते हैं कि ये समझते हैं कि संसार में अकेले ये ही सच्चे कैथोलिक हैं और इसलिये ये रोमन चर्च के साथ नहीं बैठ सकते क्योंकि उनको ये हैरैटिक[161] समझते हैं और उनको मुसलमानों की श्रेणी में रखते हैं।

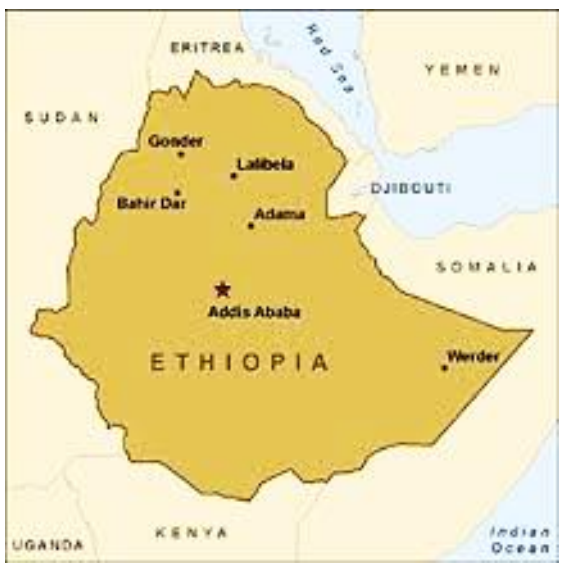
---

[160] Psalms – a Book of Bible.

[161] Heretic is a professed believer who maintains religious opinions contrary to those accepted by his or her church or rejects doctrines prescribed by that church.

रोमन चर्च के लिये इनके मन में बड़ी घृणा है क्योंकि इनका सम्बन्ध अलैक्ज़ेन्ड्रिया के कौप्टिक चर्च[162] से है और यह चर्च मोनोफ़ाइज़ाइट चर्च है जिसमें क्राइस्ट की केवल एक ही प्रकृति है जब कि रोमन कैथौलिक चर्च में क्राइस्ट की दो प्रकृतियाँ मानी जाती हैं।

इनके यहाँ बापटिस्म भी हर वर्ष होता है पर ये अपने बच्चों का बापटिस्म नहीं करते इसलिये बहुत सारे ईसाइयों का विचार है कि ये लोग सच्चे ईसाई हैं ही नहीं क्योंकि बापटिस्म द्वारा इनका इस धर्म में तो प्रवेश हुआ ही नहीं है।



162 Alexandria's Coptic Church – a Monophyzite Church

इथियोपिया के बारे में कुछ विशेष बातें

4 ऐनसैटः अबीसीनियन केला



आज हम तुम्हें एक ऐसे पेड़ की कहानी बतायेंगे जो इथियोपिया का एक खास पेड़ है। यह देखने में तो केले के पेड़ जैसा होता है परन्तु यह केले का पेड़ नहीं होता इसी लिये इसको "झूठे केले का पेड़"[163] भी कहते हैं। इस पेड़ का नाम है ऐनसैट।

इथियोपिया में और भी कई चीज़ें ऐसी होती हैं जो केवल यहीं पर होती हैं जैसे तैफ़[164] जिसके आटे का यहाँ के लोग इन्जिरा बनाते हैं और साबुत मसूर या धुली मसूर की दाल और बन्द गोभी की सब्जी के साथ खाते हैं। उसके साथ ये मॉस भी कई प्रकार से बनाते हैं।

ऐनसैट का पेड़ इथियोपिया के दक्षिण पश्चिमी भाग में बहुत अधिक पाया जाता है और यह उधर के लोगों, यानी गुरागे लोगों[165], का मुख्य भोजन है।

इसके एक पेड़ से **50–60** लोग आराम से खाना खा सकते हैं। यह यहाँ के गरीब लोगों का भोजन है इसलिये इसे गरीब लोगों का पेड़ भी कहते हैं।

---

[163] False Banana Tree

[164] Teff – a kind of grain obtained from grass-like plant.

[165] Gurage people

अमीर लोग इसको विशेष खाने के तौर पर खाते हैं। **5–6** आदमियों का एक परिवार एक साल में करीब **60** पेड़ आसानी से खा जाता है।

यह पेड़ यहाँ के लोगों के लिये बहुत ही फायदेमन्द है क्योंकि इस पेड़ का ऐसा कोई भाग नहीं जो मनुष्य के काम न आता हो।

इस पेड़ की पत्तियाँ जो केले के पेड़ के पत्तों से भी काफी बड़ी होती हैं इन लोगों की झोंपड़ी में बिछाने के काम आती हैं। इससे झोंपड़ी का हरा हरा फर्श देखने में बहुत अच्छा लगता है।

इसके पत्तों में ये लोग खाना भी खाते हैं जैसे हमारे यहाँ दक्षिण भारत में लोग केले के पत्तों में खाना खाते हैं और उत्तर भारत में पत्तों से बनी पत्तल का प्रयोग किया जाता है।

इस पेड़ की पत्तियाँ वस्तुओं को लपेटने, बाँधने, छत छाने, नीचे बैठने और स्त्रियों की पोशाक बनाने के काम भी आतीं हैं।

जब ये पेड़ सूख जाते हैं तो इनके रेशे निकाल लिये जाते हैं और उनसे रस्सियाँ और भिन्न भिन्न रंगों के भिन्न भिन्न प्रकार के कपड़े बनाये जाते हैं।

इसकी शाखाओं का तथा तनों से जहाँ इसकी शाखा जुड़ी रहती है ये बहुत ही बढ़िया आटा बनाते हैं और इस आटे को दूध के साथ खाते हैं।

यह आटा दूध के साथ बहुत ही स्वादिष्ट लगता है क्योंकि दूध के साथ मिल कर इस आटे में से बहुत ही बढ़िया सुगन्ध आती है।



इस पेड़ का तना व जड़ ये लोग ऐसे खाते है जैसे आलू या शलगम। यात्री लोग इसके बने खाने को कई दिन तक खा सकते हैं क्योंकि इसका बना खाना कई दिन तक खराब नहीं होता। जब यह पेड़ पक जाता है तो यह शलगम के गूदे[166] जैसा लगता है।

इसको खाने का केवल एक ही तरीका है और वह यह कि इसका गूदा बना लिया जाये फिर इस गूदे का दलिया या रोटी बना ली जाती है।

इस पेड़ की और भी कई विशेषताऐं हैं। जब खाने के लिये इस पेड़ को जमीन से **9–10** इंच की ऊँचाई पर से काटा जाता है तो यह आदमियों की सी दुखी आवाज में रोता है इसलिये यहाॅ के लोग इस पेड़ को "काटने" की बजाय "मारना" बोलते हैं।

दूसरे जब इस पेड़ को काट दिया जाता है तो इसके बचे हुए तने के टुकड़े के आर पार कई बार और भी चाकू लगा देते हैं इससे उस पेड़ में **400–500** नये कल्ले फूट निकलते हैं जिनको दोबारा जमीन में लगा दिया जाता है

और फिर हर कल्ले में से एक नया पेड़ उग आता है। इसलिये इसका एक पेड़ भी जिसके घर में होता है वह कभी भूखा नहीं मरता।

---

[166] Flesh of turnip. See the picture of turnip above.

इस पेड़ के ऊपर **600–700** अंजीर के समान फलों का एक बहुत बड़ा गुच्छा लगता है। ये फल पहले तो हरे रंग के होते हैं पर पक जाने पर इनका रंग पीला हो जाता है।

इसके हर फल में एक गुठली या बीज होता है जो बोने पर उग आता है। इस प्रकार एक पेड़ से हजार पेड़ से भी ज़्यादा पेड़ बन जाते हैं।

इस पेड़ की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह सूखे के मौसम में भी हरा भरा रहता है क्योंकि इसमें इसका अपना पानी बहुत होता है।

तो ऐसा आश्चर्यजनक है बच्चो यह ऐनसैट का पेड़।



5 गुरागे – अफ्रीका के पर्वतीय प्रदेशों के मज़दूर

एडिस अबाबा, इथियोपिया की राजधानी, के दक्षिण पश्चिम की ओर का प्रदेश गुरागे प्रदेश कहलाता है। इस प्रदेश में लोग बहुत अच्छी खेती करते हैं। इनके खेतों में बाजरा और गेहूँ खूब होता है और ये लोग मेहनती भी बहुत होते हैं।

ये लोग शिकार भी नहीं करते और न गाला या ओरोमो लोगों की तरह से अच्छे घुड़सवार होते हैं और न ही ये डानाकिल रेगिस्तान[167] के सोमाली लोगों की तरह योद्धा होते हैं। ये लोग तो केवल काम करते हैं और काम करने वालों का दूसरा नाम है गुरागे।

गुरागे लोग सारे अफ्रीका में सबसे बड़ी झोंपड़ी बनाते हैं। हर गुरागे के पास तीन घर होते हैं जो एक ही चहारदीवारी के अन्दर बने होते हैं।

दो घरों में ये लोग अपने जानवर रखते हैं और तीसरे में अपने खेतों का अनाज — गेहूँ, बाजरा, ओट्स, केले के पत्ते आदि जिनको ये सड़ा कर अपना मुख्य भोजन ऐनसैट तैयार करते हैं रखते हैं।

[167] Danakil Desert is in North-east Ethiopia and North-western Djibouti in Afar triangle. It stretches across 100,000 square kms of arid terrain. The area is known for its volcanoes and extreme heat, with daytime temperatures surpassing 122 F. The Danakil Desert is one of the lowest and hottest places on Earth. It is inhabited by a few Afar people who engage in salt mining.

ऐसी जीवन शैली से लगता है कि ये शायद अपने घरों में ही रहते होंगे क्योंकि इनके तीन तीन घर होते हैं और ये खेती करते हैं। पर ऐसा नहीं है। ये लोग काम की खोज में सारे इथियोपिया में घूमते हैं।

इन लोगों के लिये खेती और पशु पालन ही काफी नहीं है। ये लोग इथियोपिया के पूर्वी तट पर स्थित बन्दरगाहों तक पहुँच जाते हैं। पहाड़ों में सड़क बनाते हैं, मेहनत करके पैसा बचाते हैं और फिर घर वापस आ जाते हैं।

ये लोग बड़े नम्र होते हैं। धीरे धीरे मेहनत कर के किसी भी चीज़ को पाने में विश्वास करते हैं और साथ ही काम करने में भी विश्वास करते हैं।

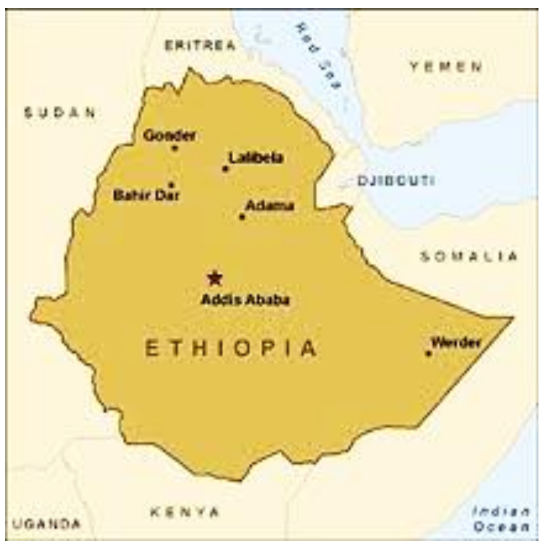
इनका मुख्य खाना ऐनसैट है पर ये कौफ़ी और खाट या खैट[168] भी उगाते हैं। ये लोग मॉस ज़्यादा नहीं खाते पर त्यौहारों पर जब किसी की बलि दी जाती है तब उसे जरूर खाते हैं।

ये लोग अपनी थाली में से सारा खाना खाना अच्छा नहीं समझते इसलिये जब कोई मेज़बान इनको खाना परसता है तो वे उसमें से सारा खाना नहीं उठाते। वह चाहे कितना भी कम क्यों न

[168] Khat, pronounced as Khaat or Khait, is a flowering plant native to the Horn of Africa and the Arabian Peninsula. Among communities from these areas, chewing of Khat leaves has a history as a social custom dating back thousands of years. Its leaves kill the hunger. When Queen Makeda went to Solomon she took many of them so that if they do not get food her people can live upon Khat leaves.

हो उसमें से थोड़ा सो छोड़ देते हैं। ये लोग यह समझते हैं कि सारा खाना खाने से आदमी लालची दिखायी देता है।

गुरागे लोग पशुपालन भी करते हैं पर वे यह काम मक्खन के लिये ज़्यादा करते हैं। वे इसको दवा की तरह से इस्तेमाल करते हैं। ये अपनी बहुत सारी बीमारियाँ मक्खन से ह ीठीक कर लेते हैं। इनका विश्वास है कि अगर कोई बीमारी मक्खन से ठीक नहीं होती तो इसका मतलब है कि वह बीमारी निश्चित रूप से मौत बन कर आयी है।



6 इथियोपिया के ट्रू क्रास की कहानी[169]

अरब देश के दक्षिणी पश्चिमी हिस्से में आज से लगभग 3000 साल पहले शेबा नाम का एक राज्य था। वहाँ की रानी का नाम था मकेडा। वह बहुत सुन्दर थी। कहते हैं कि मकेडा का राज्य अबीसीनिया, आज के इथियोपिया तक फैला हुआ था।

वह इज़रायल के राजा सोलोमन से मिलने जेरुसलम भी गयी थी। सोलोमन से उसके मिलने का जिक्र बाइबिल मे भी आता है।

यह घटना संसार के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। यह घटना संसार के इतिहास में इतनी महत्वपूर्ण क्यों है इसके लिये तुमको मकेडा की पूरी कहानी पढ़नी[170] पड़ेगी।

शेबा की रानी माकेडा का सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्णन मध्य युग की कला में वर्णित है जो बाइबिल से एक कच्चे धागे से जुड़ी हुई है। यह है असली क्रास की कहानी[171]। इसमें शेबा की रानी का बहुत ही छोटा, मगर बहुत ही महत्वपूर्ण रोल है।

---

[169] This story has been taken from “Greek stories of Byzantine” which have been written by a Saint Giorgis Hamartolos in Brief Chronicles.

[170] Read the story of “Sheba Ki Rani Makeda” written by Sushma Gupta in Hindi language, published by Prabhat Prakashan, 2018.

[171] Story of True Cross

यह कहानी लैजेन्डा औरिया[172] में लिखी हुई है जिसे एक डोमिनीकन बिशप जैकोबस डी वौरेजाइन[173] ने संकलित किया है। यह **13**वीं शताब्दी का ग्रन्थ है।

इस ग्रन्थ का कहना है कि जब ऐडम मर रहा था तो उसका बेटा सैथ[174] ईडन के बाग में ट्री औफ मर्सी[175] के तेल की कुछ बूँदें खरीदने के लिये गया।

आर्चएन्जिल माइकिल[176] ने उसे कुछ बूँद तेल देने के बदले "अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़"[177] की एक शाख ही पकड़ा दी और कहा — "जिस दिन इस शाख में फल लगेंगे उस दिन एडम सम्पूर्ण हो जायेगा।"

सैथ जब उस शाख को ले कर घर वापस आया तो उसने देखा कि ऐडम तो मर चुका था सो उसने वह शाख उसकी कब्र पर लगा दी। समय बीतने पर वह शाख एक बहुत बड़े पेड़ में बदल गयी।

शताब्दियों बाद सोलोमन ने उस पेड़ को अपना मन्दिर बनवाने के लिये काटा पर उसके मन्दिर बनाने वालों ने देखा कि वे लकड़ियाँ

---

[172] Legenda Aurea – called also the "Golden Legend" is a collection of hagiographies by Jacobus de Voragine that became a late medieval bestseller. More than 1,000 manuscripts have survived. It was likely compiled around 1260 AD. It is available on Internet on the Web Site : https://sourcebooks.fordham.edu/basis/goldenlegend/

[173] Dominican Bishop Jacobus de Voragine

[174] Seth

[175] Tree of Mercy

[176] Archangel Michael

[177] The Tree of Knowledge of Good and Bad

तो मन्दिर में कहीं लग ही नहीं पा रही हैं। वे कहीं से बहुत बड़ी थीं और कहीं से बहुत छोटी सो वे प्रयोग में ही नहीं आ पा रही थीं।

कुछ समय बाद उन्हीं लकड़ियों के क्रास पर जीसस को मारा गया। बाद में वह क्रास कौन्सटैन्टाइन की मॉ हेलेन[178] को मिल गया। फिर फारस के लोगों से उसे सम्राट हरक्युलस[179] ने छीन लिया।

इस तरह यह क्रास कई हाथों में घूमता फिरा।

यह कहानी कुछ अधूरी सी लगती है। कई जगहों से इस कहानी के अलग अलग टुकड़े ले कर हमने एक और कहानी बनायी गयी है जो हम आगे दे रहे हैं। वह कहानी कुछ ज़्यादा ठीक लगती है।

[178] Helen, the mother of Constantine – he was the 57th Emperor of Roman Empire (306-337 AD = 32 years). He was known as Saint Constantine also.

[179] Emperor Hercules

7 इथियोपिया के ट्रू क्रास की कहानी–2[180]

इथियोपिया का जूडा देश से सम्बन्ध काफी पुराना है – लगभग **3000** साल पुराना।

हमने इस पुस्तक में इथियोपिया के ट्रू क्रास की कहानी पहले दी हुई है। इस कहानी के कई टुकड़े अलग अलग जगह पर मकेडा की कहानी में ही पाये जाते हैं। यहाँ उन सबको जोड़ कर यह कहानी कुछ ऐसे बनती है...

भगवान ने जब पहले आदमी ऐडम और औरत ईव को बनाया तो उनको उसने अपने ईडन के बागीचे में रख दिया। उस बागीचे की खासियत यह थी कि उस बागीचे में लगे पेड़ों के फूल और फल कभी झड़ते नहीं थे।

उस बागीचे में एक पेड़ था जिसके फल खाने के लिये भगवान ने उनको मना किया था। ईसाई लोग उसको "ज्ञान का वृक्ष"[181] कह कर पुकारते हैं। उस ईडन के बागीचे के चारों तरफ एक बहुत बड़ा रेगिस्तान था जिसको पार करना बहुत कठिन था।

उन्होंने भगवान का कहा नहीं माना और उस पेड़ का फल खा लिया। अपनी आज्ञा का पालन न करने पर भगवान ने उन दोनों

---

[180] This article has been constructed by connecting several pieces of information taken from here and there to present a complete picture of the relationship of Ethiopia with Jesus' Cross.
[181] Tree of Knowledge

को उस बागीचे से निकाल दिया और फिर अपने क्रोध से उस पेड़ के भी टुकड़े टुकड़े कर डाले।

भगवान ने ऐडम को एक अंगूठी भी दी थी जो इतनी शक्तिशाली थी कि उसको पहन कर वह सारे संसार पर राज कर सकता था। जब भगवान ने ऐडम को ईडन के बागीचे बाहर निकाला तो वह अंगूठी भी उसके हाथ से निकल गयी और भगवान के सिंहासन के पाये के नीचे जा छिपी।

X X X X X X X

कई वर्षों बाद ऐडम के वंश में डेविड हुआ और डेविड का पुत्र सोलोमन हुआ। डेविड जूडा देश का राजा था और जेरुसलम जूडा देश की राजधानी थी।

डेविड के बाद जब सोलोमन राजा बना तो उसने जेरुसलम में जाहवेह का एक बहुत बड़ा मन्दिर बनवाने की सोची। उस मन्दिर के लिये वह दुनियाँ भर से बहुत तरीके की बहुमूल्य वस्तुऐं खरीद रहा था।

उन चीज़ों के खरीदने के सिलसिले में शेबा की रानी मकेडा को अपने जहाज़ी बेड़े के मालिक टामरिन से सोलोमन के विषय में पता चला और वह उसकी बुद्धिमानी की तरफ खिंची चली गयी।

इत्तफाक से यह रानी मकेडा कुँआरी थी और इसका एक पाँव टेढ़ा था और उस पर बहुत बाल थे। लोग उसको बकरे का पाँव[182] कहते थे।

वह चाहती थी कि कहीं कोई चमत्कार हो जाये और उसका पाँव ठीक हो जाये तो वह विवाह कर ले क्योंकि उसको रानी बनने में कोई रुचि नहीं थी। वह तो एक साधारण लड़की की ज़िन्दगी गुजारना चाहती थी

उन दिनों शेबा पर केवल कुँआरी स्त्रियाँ ही राज करती थीं इसी लिये मकेडा कुँआरी थी। वह विवाह करना चाहती थी पर अपने इस पाँव के कारण मजबूर थी।

जब उसको अपने जहाज़ी बेड़े के मालिक टामरिन से यह पता चला कि सोलोमन कुछ जादू भी जानता है तो उसको लगा कि शायद उसकी इच्छा वहाँ पूरी हो जाये इसलिये भी वह उससे मिलने जाने को तैयार हो गयी।

जब डेविड का बेटा सोलोमन राजा बना तो भगवान ने सोलोमन को एक अँगूठी दी थी जिससे वह सारी दुनियाँ पर राज कर सकता था। सोलोमन उस अँगूठी को हमेशा ही अपनी उँगली में पहने रखता था। उसमें उसकी सील भी थी और वह उसकी शक्ति का केन्द्र भी थी।

---

182 Translated for the words "Goat's Foot"



उस सील में पैन्टल्फा[183] खुदा हुआ था और उसके अन्दर जाहवेह के नाम के वे चार अक्षर खुदे हुए थे जिनका उच्चारण करना सामान्य रूप से अवध्य था।

इस अंगूठी के विषय में ज्यू लोगों का कहना है कि यह अंगूठी जाहवेह ने पहले आदमी ऐडम को दी थी जब तक वह ईडन[184] के बाग में था और उसको उसे तब तक पहनने की आज्ञा थी जब तक वह उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहेगा।

ऐडम के ईडन का बागीचा छोड़ने के बाद वह अँगूठी ऐडम के हाथ से निकल कर भगवान के सिंहासन के नीचे जा छिपी। बाद में जब सोलोमन राजा बना तो भगवान ने वह अंगूठी सोलोमन को दे दी थी।

उसमें चार अमूल्य रत्न जड़े हुए थे — एक था कारबन्किल जो चारों दिशाओं का मालिक था और उसकी आज्ञा पर वह उसको आकाश के ऊपर तक ले जा सकता था। दूसरा था पन्ना जिसका राज जल पर था चाहे वह झील में हो या नदी में या समुद्र में।

तीसरा रत्न था लाल जिसके सारे जीवित प्राणी, जंगली जानवर, पक्षी, मछलियाँ आदि दास थे। और चौथा था नीलम[185] जिससे अच्छी बुरी सभी प्रकार की आत्माएँ दूर भागती थीं।

---

[183] Pentalpha

[184] Adam in the Garden of Eden

[185] Solomon’s ring had four gems - Carbuncle, Emerald, Ruby, and Sapphire

सो ऐडम ने कुछ समय तक तो उस ॲगूठी के द्वारा राज किया परन्तु जब वह ईडन के बाग से निकाल दिया गया तो वह ॲगूठी भी उसके हाथ से उड़ कर जाहवेह के सिंहासन के एक पाये के नीचे जा छिपी।

ज्यू लोगों की धर्म पुस्तक टालमुड[186] में लिखा हुआ है कि जब सोलोमन इजरायल का राजा बना तो जाहवेह ने अपने देवदूत गैब्रील[187] के हाथ ऐडम को दी गयी उस अंगूठी को सोलोमन को दिलवा दिया ताकि वह पूरी धरती पर राज कर सके।

इस तरह वह अंगूठी अब वह सोलोमन के पास आ गयी थी।

X X X X X X X

लैजेन्डा औरिया[188] के अनुसार जब ऐडम मर रहा था तो उसका बेटा सैथ[189] ईडन के बागीचे में ट्री औफ मर्सी[190] के तेल की कुछ बूँदें खरीदने के लिये गया।

आर्चएन्जिल माइकल[191] ने उसे कुछ बूँद तेल देने के बदले उसको "अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़"[192] की एक पूरी शाख ही

---

[186] Talmud – religious book of Jews

[187] Angel Gabriel

[188] Legenda Aurea – called also the "Golden Legend" is a collection of hagiographies by Dominican Bishop Jacobus de Voragine that became a late medieval bestseller. More than a 1,000 manuscripts have survived. It was likely compiled around the 1260 AD.

[189] Seth

[190] Tree of Mercy

[191] Archangel Michael

[192] The Tree of Knowledge of Good and Bad

पकड़ा दी और कहा — "जिस दिन इस शाख में फल लगेंगे उस दिन ऐडम सम्पूर्ण हो जायेगा।

सैथ जब उस शाख को ले कर घर वापस आया तो उसने देखा कि ऐडम तो मर चुका था सो उसने वह शाख उसकी कब्र पर लगा दी। समय बीतने पर वह शाख एक बहुत बड़े पेड़ में बदल गयी।

रानी मकेडा का पैर ठीक होना

सोलोमन को पहली बार जब रानी मकेडा के कारवॉ के जेरुसलेम आने की खबर मिली तभी उसके एक मित्र हिरम ने जो टीयर का राजा था उसको यह भी बताया कि रानी मकेडा थी तो बहुत सुन्दर, पर उसका एक पॉव टेढ़ा है और उस पॉव पर बहुत सारे बाल हैं।

सोलोमन उसकी सुन्दरता के बारे में सुन कर उससे मिलने के लिये बेचैन हो उठा पर उसके पॉव के विषय में सुन कर उसने उसको जॉचना चाहा कि यह बात वाकई ठीक थी या नहीं। वह यह नहीं सोच सकता था कि इतनी सुन्दर लड़की का एक पॉव ऐसा कैसे हो सकता था।

इसकी जॉच करने के लिये उसने उससे अपने मिलने की जगह को कुछ ऐसा बनवाया कि वह पानी में उसके पॉव की परछॉई देख सके और उस सत्य की जॉच कर सके जो उसने अपने मित्र से सुना था – अर्थात वाकई उसका पॉव टेढ़ा था या नहीं।

यह सोच कर उसने मन्दिर के अपने सबसे अक्लमन्द ओवरसीयर को बुलाया और कहा — “मन्दिर के पूर्वीय भाग में संगमरमर के फर्श के थोड़ा ऊपर एक शीशा लगाओ और फर्श और शीशे के बीच में साफ पानी भर दो जिसमें रंगीन मछलियाँ तैरती रहें।

शीशे ऐसे लगाओ कि उनमें कोई जोड़ दिखायी न दे और उसकी सतह ऐसी ही हो जैसी किसी झील की सतह, ताकि जब कोई उस पर पाँव रखे तो उसको ऐसा लगे कि वह पानी में चल रहा है। यह काम तीन दिन में हो जाना चाहिये।”

सो जब रानी मकेडा आने वाली थी तो सोलोमन के बड़े पुजारी ज़ाडोक ने खम्भों के बीच के परदे को सरका कर रानी से कहा — “आइए रानी जी, राजा साहब आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अपने जूते उतार कर आप अन्दर प्रवेश करें।”

रानी एकदम ज़ोर से बोल पड़ी — “नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती।” और यह कहते हुए उसने अपना घाघरा अपने चमड़े के जूते के चारों ओर और अधिक कस कर लपेट लिया।

पुजारी बोला — “मगर रानी जी, यह हमारे भगवान का घर है, यह पवित्र स्थान है और यहाँ कोई जूते पहन कर नहीं आ सकता।”

यह सुन कर निराश हो कर रानी ने अपनी विश्वस्त दासी अफ़्तसी की ओर देखा तो अफ्तसी ने तुरन्त ही अपने कपड़ों की

ओट करके रानी के मणिजटित जूते उतारे और उन्हें अपने कपड़ों में छिपा लिया। अब मकेडा अन्दर चली और ज़ाडोक ने परदा गिरा दिया।

सोलोमन की शीशे और पानी की चालाकी तो देखो ज़रा। जैसे ही रानी ने मन्दिर की देहरी पार की और शीशे पर अपना पैर रखा, जिसके नीचे रंगीन मछलियॉ तैर रहीं थीं तो मकेडा को लगा कि वह तो सचमुच ही पानी में चल रही है क्योंकि शीशा और पानी बिल्कुल ही साफ थे। वह घबरा गयी और इधर उधर देखने लगी।

तभी उसको पास में पड़ा एक लकड़ी का लट्ठा दिखायी दे गया। उसको देख कर घबराहट में वह अपना घाघरा घुटनों तक उठा कर उस लकड़ी के लट्ठे पर चढ़ गयी।

पर यह क्या? जैसे ही उसका दॉया पॉव उस लकड़ी के लट्ठे पर पड़ा तो उसके गुलाबी होठों से एक हलकी सी मीठी सी पर डरी सी चीख निकल पड़ी — "आह आह।" और उसका पैर उसी क्षण उसके दूसरे पैर जैसा हो गया, सीधा और दोष रहित।

लट्ठे की कहानी

रानी मकेडा के साथ चमत्कार हो गया था। रानी मकेडा तो इस आश्चर्य से बहुत ही ज़्यादा चकित थी। उसने सोलोमन से उस जादुई लट्ठे का रहस्य जानना चाहा तो सोलोमन बोला —

"ओ रानी मकेडा, जब मैंने जाहवेह का यह मन्दिर बनवाना शुरू किया था तो यह सोच कर इसे शुरू किया था कि जब हमारा जाहवेह बहुत बड़ा है तो उसका मन्दिर भी बहुत बड़ा होना चाहिये। और बड़े मन्दिर की नींव के लिये तो बड़े बड़े पत्थरों की आवश्यकता होगी।

परन्तु जब मेरे खान खोदने वाले तथा पत्थर तोड़ने वालों ने मेरी बातें सुनी तो सबने एक साथ कहा — "इतने बड़े पत्थर तो मनुष्य के बनाये हुए औजारों से तोड़ना सम्भव नहीं है।"

और मैं काफी सोच विचार के बाद भी उनको उतने बड़े पत्थरों को तोड़ने की कोई तरकीब न सुझा सका। तब मैंने भोजन छोड़ कर व्रत किये और जाहवेह की प्रार्थना की कि वह मेरे ऊपर कृपा करे।

तब एक दिन जाहवेह ने मुझसे सपने में कहा — "ओ डेविड के पुत्र, तुम सिमूर चिड़िया[193] का एक बच्चा पकड़ लो और उसको मन्दिर के ऑगन में पीतल के एक पिंजरे में बन्द कर दो। तुमको तुम्हारी चीज़ मिल जायेगी।"

मकेडा बोली — "मैं इस नाम की किसी चिड़िया को नहीं जानती।"

---

[193] Simurgh bird. Also spelt as Simorgh, or Simoorg, or Simurv. This bird is very big in size and resembles with Arab's Rukh bird. According to Shaah-Naameh, this bird lived on Mount Alberz; and she took care of Zel, when Zel was a child, because Zel's father had thrown him because of his grey hair.

इस पर सोलोमन बोला — "यह चिड़िया केवल पूर्वीय पहाड़ों पर ही पायी जाती है। यह सारे पक्षियों का राजा है। यह एक जहाज़ की तरह बड़ी होती है और अपने पंखों पर एक हाथी तक को ले जा सकती है।

फिर मैंने उस चिड़िया की खोज में अपने 1000 धनुषधारी इधर उधर भेजे। तीन महीने की खोज के बाद उनको सिमूर चिड़िया का एक घोंसला मिला और वे मेरे लिये उसका एक बच्चा ले आये।

यह बच्चा गाय के बछड़े के बराबर था। मैंने पहले से ही पीतल का एक पिंजरा बनवा रखा था, सो जैसे ही मुझे वह बच्चा मिला मैंने उसको उस पिंजरे में रखवा दिया और पिंजरे को ऑगन में कॉसे[194] की तीन क्यूबिट[195] लम्बी कीलों से जड़वा दिया।

बच्चा बहुत रो रहा था। सिमूर की देखने और सुनने की शक्ति भी बहुत अधिक होती है। वह दस पहाड़ और दस घाटियों के पार पड़े हुए एक चूहे को भी आसानी से देख सकती है और समुद्र पर बैठे एक टिड्डे की आवाज को भी उतनी ही आसानी से सुन सकती है।

मैंने अभी पिंजरे को ऑगन में कीलों से जड़ा ही था कि बच्चे के रोने की आवाज सुन कर उस बच्चे की मॉ वहॉ आ गयी।

---

194 Translated for the word "Bronze"

195 1 Cubit = 18" or 45 cms, so 3 Cubits = 54" or 1 and 1/2 yards or 135 cms

उसको पता चल गया था कि उसके बच्चे की आवाज इस मन्दिर के ऑगन में रखे हुए पिंजरे से आयी है।

उसने काफी कोशिश की परन्तु जब वह पत्थर से कीलों को न उखाड़ सकी तो आकाश में उड़ गयी और वहॉ से चली गयी।

तीन दिन और तीन रात के बाद वह लकड़ी का एक बड़ा लट्ठा अपनी चोंच में दबाये लौटी। ऐसा लगता था कि वह लट्ठा वह किसी बड़े पेड़ के तने से काट कर लायी थी।

वह लट्ठा ला कर उसने उस पीतल के पिंजरे पर रख दिया और वह पिंजरा तुरन्त ही दो हिस्सों में टूट गया। उसने अपने बच्चे को उसमें से उठाया और उड़ गयी।

जब मेरे मन्त्रियों ने मुझे यह दिखाया तो मैं खुशी से चिल्ला पड़ा — "जाहवेह की जय हो, यह तो उस पेड़ का टुकड़ा लगता है जो जाहवेह ने ईडन के बाग में लगाया था।"

मैंने कहा "यह तो हमको मालूम ही है कि ईडन के इस पेड़ की लकड़ी लोहे से भी सैंकड़ों गुना सख्त है और खराब नहीं होती।

और सिमूर सब चिड़ियों में बुद्धिमान है और उसके विषय में यह भी सत्य है कि संसार के सभी प्राणियों में केवल वही एक चिड़िया ऐसी है जो उतने बड़े गर्म रेगिस्तान को पार कर सकती थी जो जाहवेह ने ईडन के बागीचे के चारों ओर बनाया था।"

सो उसी लट्ठे को इस्तेमाल करके इस मन्दिर की नींव के बड़े बड़े पत्थर काटे गये। मेरे लोगों को तो केवल वह रेखा बनानी होती

थी जहाँ से उनको चट्टान काटनी होती थी और उस लकड़ी को उस पर रखना होता था।

बस उस लट्ठे के उस पत्थर के ऊपर रखते ही वह चट्टान तुरन्त ही ऊपर से ले कर नीचे तक बिना आवाज किये सफाई से दो एकसार टुकड़ों में कट जाती थी।[196]

कुछ का कहना है कि शताब्दियों बाद सोलोमन ने उस पेड़ को अपना मन्दिर बनवाने के लिये काटा पर उसके मन्दिर बनाने वालों ने देखा कि वे लकड़ियाँ तो मन्दिर में कहीं लग ही नहीं पा रही हैं। वे कहीं से बहुत बड़ी थीं और कहीं से बहुत छोटी, सो वे प्रयोग में ही नहीं आ पा रही थीं।

सो उनको वहीं मन्दिर में एक जगह रखवा दिया गया। बाद में वही लकड़ियाँ बेकार समझ कर जीसस का क्रास बनाने के लिये दे दी गयीं।

जब हमारा कार्य समाप्त हो गया तो यह सोच कर कि कोई इस लट्ठे का दुरुपयोग न करे और इसको इसका उचित मान भी मिल जाये मैंने इस लट्ठे को इस पोर्टिको में रखवा दिया।"

[196] It is said in old Jews stories that Moses engraved the Ten Commandments given by God only with the pen made with this wood.

रानी मकेडा यह सुन कर भाव विभोर हो उठी और उस लट्ठे के प्रति अपना सम्मान दिखाने के लिये उसने एक चाँदी का कालर उस लट्ठे पर जड़वा दिया।

यह देख कर सोलोमन ने भी उस कालर के नीचे अपना एक कालर जड़वा दिया पर उसका कालर रानी मकेडा के कालर से थोड़ा छोटा था। ऐसा इसलिये था क्योंकि यह सोलोमन का अपना विचार नहीं था। उसने मकेडा की नकल की थी।

साथ में उसने यह निर्देश भी दिया कि उसके बाद आने वाले हर राजा को ऐसा ही एक कालर उस लट्ठे पर लगवाना होगा। तो जब जीसस क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया और वह लट्ठा मन्दिर के पुजारियों द्वारा जूडास को **30** चाँदी के सिक्कों के बदले में बेचा गया तब तक उस लट्ठे पर **30** कालर जड़े जा चुके थे।

जीसस के लिये उसी लट्ठे का क्रास बना था।

आर्क औफ दी कौवेनेन्ट का इथियोपिया जाना

राज सोलोमन के पास आर्क औफ दी कौवेनेन्ट भी थी जो उसके मन्दिर में रखी रहती थी। उसको केवल उसका बड़ा पुजारी ही छू सकता था।

जब रानी मकेडा सोलोमन से मिल कर वापस इथियोपिया जाने लगी तो उसने सोलोमन को बताया कि वह उसके बच्चे की माँ बनने वाली है। यह सुन कर सोलोमन बहुत खुश हुआ और उसने उसको

अपनी अंगूठी दे कर उससे कहा कि अगर वह बच्चा पुत्र हो तो जब वह बड़ा हो जाये तो वह उसको वह अंगूठी दे कर उसके पास भेज दे।

जब मकेडा इथियोपिया पहुँच गयी तब उसने सोलोमन के बेटे को जन्म दिया जिसका नाम उसने मिनीलिक रखा। जब वह **18** वर्ष का हो गया तो उसने उसको सोलोमन के पास यह कह कर भेजा कि वह वहाँ किसी लड़की से शादी नहीं करेगा और अपने पिता से अपना इथियोपिया के लिये राज्याभिषेक करवा कर आयेगा।

इसके अलावा वह सोलोमन से उसकी आर्क पर ढके हुए कपड़े का एक टुकड़ा भी ले कर आयेगा ताकि उसके देश के लोग जाहवेह की पूजा कर सकें।

सो जब वह इथियोपिया का राजा बन कर और आर्क के ऊपर ढके हुए कपड़े का एक टुकड़ा ले कर इथियोपिया वापस आ रहा था तो सोलोमन ने अपने दरबार के मुख्य मुख्य औफीसरों के ज्येष्ठ पुत्र भी उसके साथ भेज दिये ताकि वे उसके पुत्र के साथ उसके दरबार में उसके साथ इसी तरह बैठ सकें जैसे उनके पिता सोलोमन के दरबार में सोलोमन के साथ बैठते थे।

साथ में उसने अपने बड़े पुजारी का ज्येष्ठ पुत्र भी उसके साथ भेज दिया। पर उस बड़े पुजारी के ज्येष्ठ पुत्र को और उसके साथ के दूसरे पुजारियों के पुत्रों को आर्क वहाँ छोड़ कर इथियोपिया जाना अच्छा नहीं लग रहा था।

कि उसी रात को बड़े पुजारी के पुत्र को स्वप्न आया कि वह आर्क अपने साथ ले जा सकता है और उसको ले जाने का तरीका भी बताया।

सो उसने एक नकली आर्क बनवायी और उसको असली आर्क की जगह रख दिया और असली आर्क ले कर वह मिनीलिक के साथ इथियोपिया चला गया। इस तरह असली आर्क इथियोपिया आ गयी।

लट्ठे का मन्दिर के गर्भ गृह में पहुँचना

कुछ वर्षों बाद मन्दिर बन गया। सोलोमन भी मर गया। इसके बाद उस लट्ठे को मन्दिर के अन्दर वाले कमरे में रखवा दिया गया। और सोलोमन की आज्ञानुसार उसके बाद हर राजा ने उस लट्ठे पर चाँदी का एक एक कालर जड़वाया।

जब जीसस क्राइस्ट को सूली पर चढ़ाया गया तब तक उस पर 30 कालर जड़े जा चुके थे।

उस समय इथियोपिया में जो राजा राज कर रहा था उसके एक चाचा का पुत्र था जो तारों की विद्या बहुत अच्छी जानता था और जिसका नाम गाज़पोर[197] था।

जीसस के जन्म के समय उसने पश्चिम में चमकता हुआ एक विचित्र सा तारा देखा तो वह अपने दो मागी साथियों, मैलचिऔर

---

[197] Gazpor. He was known as Gaspard in Northern part of Ethiopia

और बालथज़ार[198] को साथ ले कर संसार को बचाने वाले जीसस क्राइस्ट को ढूँढते ढूँढते बैथलेहम तक आ पहुँचा।[199]

स्वप्न में तीनों को चेतावनी मिलने के कारण उन्होंने इस बच्चे के जन्म की बात राजा हैरोड[200] को नहीं बतायी और वहाँ से वे चुपचाप जीसस को भेंट दे कर समय से इथियोपिया भाग आये।

लेकिन पशुओं के खाने के स्थान पर पैदा हुए इस बच्चे के बड़ा होने के बाद और उस समय की इथियोपिया की विधवा रानी कैन्डेस[201] के उसके विषय में जानने और फिलिप द्वारा अपने खजांची का बापटिस्म[202] कराने से पूर्व ही क्रास पर चढ़ा दिया गया था – ऐसा बाइबिल की ऐक्ट्स औफ द ऐपोसिल्स[203] पुस्तक में लिखा है इसलिये वह अपने पुराने राज्य में नयी बातें नहीं ला पायी।

लकड़ी के लट्ठे की आगे की कहानी

सो वह लकड़ी का लट्ठा उस मन्दिर के गर्भगृह में लगभग 1000 वर्ष तक पड़ा रहा और जीसस के सूली चढ़ाने के समय तक उस पर 30 कालर जड़े जा चुके थे।

---

198 Two Magi – Melchior and Balthazar

199 He went to Bethlehem searching for the Savior of the world Jesus Christ. This story is very popular among Western Europeans

200 Herod – the then Roman King of Judea. he was very cruel and ambitious.

201 Candace – queen of Ethiopia

202 Baptism – a Christian ceremoby by which a person accepts Christian religion.

203 Acts of the Apostles – a book of Bible

जब जूडास[204] ने **30** चाँदी के सिक्कों के बदले में ईसा को रोम के राजा को देने के लिये सोलोमन के मन्दिर के बड़े पुजारियों से साँठ गाँठ की तो मन्दिर के खजाने में पैसा इतना कम था कि उन पुजारियों ने जूडास को ये ही **30** कालर उखाड़ कर दे दिये थे।

यह भी कहा जाता है कि पाँचवे दिन जब जीसस को क्रास पर चढ़ाने की सजा सुनायी गयी तो कुछ छोटे पुजारियों ने जो उसको पवित्र और निर्दोष तो मानते थे पर यह कहने से डरते थे, आपस में सलाह की कि जिस लकड़ी के क्रास पर जीसस मरेगा वह लकड़ी तो पवित्र[205] हो जानी चाहिये।

ऐसा सोच कर उन्होंने मन्दिर के अन्दर वाले कमरे से ईडन के बाग की वह लकड़ी का लट्ठा निकाला और रोम के सिपाहियों को जीसस के लिये क्रास बनाने के लिये दे दिया।

इस प्रकार रानी मकेडा का पैर जिस लकड़ी के लट्ठे से ठीक हुआ था उस लट्ठे पर लगे चाँदी के कालर राजाओं के राजा जीसस को बेचने के काम आये और उसी लकड़ी के बने क्रास पर उसको संसार से मुक्ति दिलाने के लिये चढ़ाया गया। ये कहानियाँ सीरिया तथा अरब की पुस्तकों में लिखी हुई हैं।

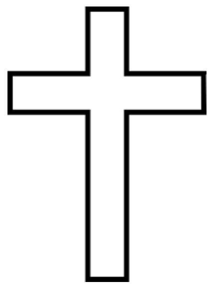
इथियोपिया की रानी मकेडा के इस क्रास से इसी सम्बन्ध को इथियोपिया में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है क्योंकि इसी

---

[204] Judas

[205] Blessed

क्रास का एक टुकड़ा चौदहवीं शताब्दी के अन्त में इथियोपिया लाया गया था। इस पर्व को ये लोग मस्कल बोलते हैं और यह **27** सितम्बर को मनाया जाता है।[206]



[206] (My Note) - I don't know where this piece of wood is now, but in my opinion, maybe, it can be used to cure many untreated diseases if it is found somewhere.

8 लूसी इन द स्काइ...[207]

इथियोपिया के लोगों के बारे में इतना सब लिखने के बाद यह लेख यह बताता है कि इस देश का महत्व कोई नया ही नहीं है बल्कि कितना प्राचीन है।

काफी समय से यह बात सुनने में आ रही है कि आदमी का पूर्वज बन्दर था। सुनने में यद्यपि यह बात कुछ अजीब सी लगती है परन्तु क्या हो यदि यह सच ही निकल आये तो।

कुछ वर्ष पूर्व इथियोपिया में पाये गये एक ढाँचे से इस कथन की सच्चाई में एक कड़ी और जुड़ गयी है। वास्तव में सबसे पहिले चार्ल्स डारविन[208] ने ही यह कहा था कि बन्दर ही आदमी का पूर्वज है जो उसने अपनी खोजों के आधार पर **1857** में पता लगाया था।

डारविन तो असल में बहुत ही शर्मीला तथा डरपोक किस्म का आदमी था। वह धर्म के कारण कुछ कह नहीं पाया पर उसका साथी जूलियन हक्सले[209] जो बहत ही निर्भय किस्म का था इस मामले में चुप नहीं बैठ सका।

वह आगे आया और उसी ने चिल्ला चिल्ला कर यह सबको बताया, पादरियों को, लोगों को, यहाँ तक कि उसने इंगलैंड के

[207] Lucy in the Sky… - this article is about the oldest skeleton found in Ethiopia.
[208] Charles Darwin – a biological scientist, originator of the biological theory of evolution.
[209] Julian Huxley was Charles Darwin’s assistant.

तत्कालीन प्रधान मन्त्री बैन्जामिन डिज़रायली[210] तक को अपनी बात मनवाने से नहीं छोड़ा।

ऐसा वह किस आधार पर इतना ज़ोर लगा कर कहता था इस प्रश्न का उसके पास बड़ा स्पष्ट और बहुत ही छोटा सा उत्तर था। वह यह कि उसने गोरिल्ला, चिम्पान्ज़ी और आदमी में बहुत सारी समानतायें देखीं थीं जिनके आधार पर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा था।

उसका कहना यह भी था कि ये जानवर क्योंकि अफ्रीका में अधिक पाये जाते थे इसलिये आदमी के पूर्वज का पता भी यहीं से कहीं से चलना चाहिये। पर संयोग से दुर्भाग्य से अफ्रीका से मिलने वाले फौसिल्स[211] में से किसी भी फौसिल से तब तक आदमी के पूर्वज का पता नहीं चल सका था।

इस ढाँचे के मिलने से पूर्व केवल एक खोपड़ी का भाग था और कुछ जोड़ों की हड्डियाँ थीं जो जर्मनी में नीनडर[212] की एक घाटी की एक गुफा में से निकाली गयी थीं और वे किसी भी परिणाम पर पहुँचने के लिये काफी नहीं थीं।

[210] The then Prime Minister of England – Benjamin Desraeli
[211] Fossils
[212] Neander Valley in Germany

पर इस नये ढॉचे की खोज ने मानव के इतिहास में एक नयी ही कड़ी जोड़ दी है। इस ढॉचे की खोज डोनाल्ड जोहानसन[213] ने **24** नवम्बर **1974** को दोपहर के समय की थी।

इस ढॉचे की खोज की कहानी इस ढॉचे की कहानी की भॉति ही दिलचस्प है। इस ढॉचे को पाने के लिये जोहानसन का भाग्य बस शायद ज़ोर मार रहा था क्योंकि यह खुदाई उन्होंने वहॉ पहली बार नहीं की थी बल्कि वे तीन बार पहले भी वहॉ आ चुके थे और चौथी बार भी वहॉ से केवल कुछ बहुत प्राचीन हड्डियॉ ही ले कर वापस जा रहे थे।

यद्यपि ये प्राचीन हड्डियॉ इतनी भी कम नहीं थीं कि उनसे कुछ पता ही न चल सके क्योंकि उनसे कम से कम इतना पता तो अवश्य ही चल रहा था कि वे हड्डियॉ किसी आदमी की थीं, या किसी स्त्री की, या फिर किसी बच्चे की, या फिर किसी परिवार की, जो आज से लगभग **30** लाख वर्ष पूर्व मर गया था परन्तु तब तक इस ढॉचे का कुछ पता ही नहीं था।

भाग्य की बात है कि इस ढॉचे की खोज का श्रेय भी जोहानसन को ही मिलना था।

जोहानसन अपना कार्य समाप्त करके वहॉ से जाने ही वाले थे। उस दिन, यानी **24** नवम्बर को उनका विचार अपने कैम्प से कहीं बाहर जाने का बिल्कुल भी नहीं था।

---

[213] Donald Johanson who got the skeleton of Lucy in Ethiopia

वे वहीं कैम्प में बैठ कर ही जो कुछ भी अब तक उन्होंने इकट्ठा किया था उसी की सार सॅभाल करने वाले थे कि उनके साथ आये हुए एक विद्यार्थी को कुछ महत्वपूर्ण बातें समझाने के लिये उन्हें बाहर जाना पड़ा।

वे उसको उसी ढॉचे वाले स्थान के पास वाले स्थान पर कुछ समझाने जा रहे थे। समझाते समझाते उनको दोपहर हो गयी और वे उस विद्यार्थी के साथ कैम्प वापस लौटने लगे।

रास्ते में वह ढॉचे वाला स्थान भी पड़ता था। यद्यपि इस स्थान को उनकी टीम के कई लोग मिल कर पहले भी दो बार अच्छी तरह छान चुके थे परन्तु उनको वहाँ कुछ भी नहीं मिला था।

पर इस ढॉचे की खोज तो उन्हीं के नाम लिखी जानी थी न इस लिये उन्होंने अन्यमनस्क भाव से एक बार फिर उस स्थान पर सरसरी निगाह डाली और फिर कुछ न दिखायी देने पर आगे बढ़ने लगे।

पर फिर एक अन्तिम दृष्टि जो उन्होंने पीछे मुड़ कर उस स्थान पर डाली तो उनको हाथ की हड्डी का एक टुकड़ा पड़ा दिखायी दिया।

उन्होंने उस विद्यार्थी से कहा — "देखो तो ज़रा, यह तो किसी बन्दर की बॉह की हड्डी लगती है।" पर यह कहने के साथ ही उनको लगा कि नहीं, यह बन्दर की बॉह की हड्डी नहीं बल्कि यह तो किसी आदमी की बॉह की हड्डी है।

सो वह फिर बोले — “तुमको क्या लगता है कि इस टुकड़े का उस खोपड़ी से कोई सम्बन्ध हो सकता है जो तुम्हारे हाथ में है?”

उस समय दोपहर हो गयी थी और इस सबको देख कर बस उनको ऐसा लगा कि यहाँ कोई ढाँचा उनको मिल सकता है। वे थोड़ा सा और ऊपर की ओर चढ़े तो उन्होंने देखा कि वहाँ तो हड्डियों के टुकड़ों का ढेर सा पड़ा है।

बहुत किस्म की हड्डियाँ थीं वहाँ। नीचे का लगभग पूरा जबड़ा, एक जाँघ की हड्डी, बाँहों की हड्डियाँ, पसलियाँ तथा और भी बहुत कुछ।

वे उस भरी दोपहरी में उस विद्यार्थी से लिपट कर नाच उठे और चिल्ला चिल्ला कर गाने लगे — “मिल गया, हमें मिल गया, वह देखो, पूरा का पूरा ढाँचा हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।”

ये सब **30–35** लाख वर्ष पुरानी हड्डियाँ थीं और यह उनको अच्छी तरह मालूम था कि इतना पुराना ढाँचा मानव के इतिहास में उसका आरम्भ बताने के लिये बहुत अधिक उपयोगी प्रमाणित होगा।

कुछ देर के लिये तो वह अपना दोपहर का खाना भी भूल गये थे। वे खुशी से गाते हुए कैम्प पहुँचे। उनकी खुशी छिपाये नहीं छिप रही थी।

दूसरे लोग तो दो बार उस स्थान को छान कर गये थे पर उनको तो वे हड्डियाँ कहीं नहीं दिखायीं पड़ीं, क्यों? शायद वे किसी दूसरी ओर देख रहे होंगे या फिर प्रकाश की किरणें किसी और दिशा में पड़ रही होंगी। या यों कहिये कि इस ढाँचे को खोजने का श्रेय उन लोगों को मिलना ही नहीं था।

यदि जोहानसन उस दिन उस स्थान को देखने के लिये नहीं जाते तो फिर पता नहीं कब तक कोई वहाँ नहीं जाता और बाद में वे हड्डियाँ कौन जाने वहाँ मिलती भी या नहीं।

हो सकता है वे वर्षा में बह गयी होतीं, हो सकता है कहीं इधर उधर बिखर गयी होतीं। यदि ऐसा हो गया होता तो उनको इकट्ठा करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव भी हो सकता था।

उस शाम कैम्प में खूब खुशियाँ मनायीं गयीं। उन लोगों ने अवाश नदी[214] में जिसके किनारे उनका कैम्प था बीयर की बोतलें ठंडी कीं, एक बकरे का बारबेक्यू बनाया और उनका सारा **1978** का साल वहाँ से वे हड्डियाँ इकट्ठी करने में व्यतीत हो गया।

उनके पास लगभग **40** प्रतिशत हड्डियाँ इकट्ठी हो गयी थीं। उनको व्यवस्थित करने पर पता चल रहा था कि वह ढाँचा एक स्त्री का था।

और एक शाम जब वे बीटिल्स के गाने सुन रहे थे तो उनमें से किसी ने "लूसी इन द स्काइ विद डाइमंड्स" गीत सुन कर कहा —

---

[214] Awash River of Ethiopia

“क्यों न हम इस ढाँचे का नाम लूसी रख दें?” और उस ढाँचे का नाम लूसी रख दिया गया।

पर क्यों कि वह ढाँचा इथियोपिया में निकला था इसलिये उसका एक इथियोपियन नाम होना आवश्यक था सो उसका इथियोपियन नाम डिन्किनेश[215] रखा गया जिसका अर्थ होता है “तुम अद्भुत हो।” यह नाम उस ढाँचे के अनुकूल भी था। इसी स्थान पर फिर लगभग बीस ढाँचे और मिले।

लूसी होमिनिड जाति[216] की थी। होमिनिड जाति वह होती है जो आदमी की भाँति सीधी खड़ी हो कर तो चलती है पर यह आवश्यक नहीं कि वह आदमी ही हो।

कुछ ढाँचे जो बहुत प्राचीन हैं उनमें से कुछ आदमी हैं और कुछ आदमी नहीं हैं। लूसी भी खड़े हो कर तो अवश्य ही चलती थी परन्तु उसको किसी भी प्रकार की पोशाक पहनाने पर वह आदमी की जाति की नहीं लग सकती थी।

अतः वह होमिनिड तो थी परन्तु आदमी नहीं थी। वह बहुत प्राचीन तो है परन्तु आदमी से अलग है।

ऐसा कभी कभी विकास की भिन्न भिन्न स्थितियों में होता है कि यदि कोई बहुत ही प्राचीन प्राणी मिल जाये तो वह बिल्कुल ही भिन्न प्रकार का हो सकता है।

---

[215] Dinkinesh in Amhara language means “You are wonderful”.

[216] Hominid family

होमिनिड परिवार में जो बहुत ही पुराने प्राणी हैं वे आदमी कहलाने के लिये बहुत ही पुराने हैं। वास्तव में उनको आदमी का नहीं बल्कि कोई दूसरा ही नाम देना चाहिये। लूसी इसी दूसरी श्रेणी में आती है।

लूसी के विषय में दूसरी सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि उसका कद बहुत छोटा है। वह केवल साढ़े तीन फीट ऊँची है जब कि वह पूरी बड़ी हो चुकी थी। उसके अक्ल के दॉत भी निकल चुके थे। उसका सिर भी जो इकट्ठी की गयी हड्डियों के आधार पर बना वह एक सौफ्ट बौल[217] के आकार से बड़ा नहीं है।

जोहानसन का यह भी विचार है कि उसको गठिया या हड्डी की कोई और बीमारी भी थी। ऐसा उसकी हड्डियों से साफ पता चलता है।

मृत्यु के समय उसकी आयु लगभग **25–30** वर्ष रही होगी। यदि वह और अधिक दिन तक जीवित रहती तो इस बीमारी के कारण शायद उसे काफी परेशानी होती।

क्योंकि उसके सिर के सामने वाला भाग नहीं मिला अतः उसके मस्तिष्क के आकार का अनुमान लगाना कठिन है।

उसकी बॉहें उसकी टॉगों से अधिक लम्बी हैं परन्तु बन्दर की बॉहों के बराबर लम्बी नहीं हैं। शायद वह सोने के लिये या अपनी सुरक्षा के लिये पेड़ पर भी चढ़ सकती हो।

---

[217] Soft ball

लगभग बीस वर्षों से पूर्वी अफ्रीका में सोने चाँदी के अलावा दूसरी चीज़ों की छान भीन भी हो रही थी। रेगिस्तानों में, पहाड़ों में, नदियों के किनारों पर, पहाड़ों की चोटियों पर। पर यह लूसी निकली भी तो कहाँ? इथियोपिया के हडार[218] क्षेत्र में निकली।

यहाँ उतने ही पुराने कछुओं के खोल, मगर के अंडे, घोड़े का जबड़ा आदि तो मिले हैं परन्तु अब तक आदमी का कोई हिस्सा नहीं मिला था। लूसी का सबसे पहला भाग एक दो दाँतों वाला जबड़ा उनको अक्टूबर **1974** में ही मिला था।

इस सबसे ऐसा लगता था जैसे लूसी झील के पास मरी हो और उसके आस पास के जानवरों के अवशेष बताते हैं कि शायद वह घास के मैदानों की रहने वाली थी और या यह भी हो सकता है कि वह ऐसे जानवर खाती हो।

क्योंकि उसके शरीर की सारी हड्डियाँ मिल गयी थीं इसलिये इससे ऐसा भी लगता है कि शायद वह शान्ति से एक ही स्थान पर मरी होगी क्योंकि उसकी किसी भी हड्डी पर किसी भी खूँख्वार जानवर के दाँत के काटे के निशान नहीं थे।

इसके अलावा क्योंकि उसकी सारी हड्डियाँ एक ही स्थान पर थीं इसलिये ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि मरने के बाद भी वे किसी जानवर के हाथ नहीं पड़ीं। यदि वे किसी जानवर के हाथ पड़

[218] Hadar is in Afar triangle of Ethiopia

गयीं होती तो उसका सिर कहीं गया होता, पैर कहीं और हाथ कहीं।

वह बीमारी से मरी या डूब कर? यह बताना तो असम्भव है परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि वह **30** लाख वर्षों से यहाँ चैन की नींद सोती रही।

लूसी से पहले और भी कई ढाँचे मिल चुके हैं पर इससे पहले जो सबसे पुराना ढाँचा अब तक मिला था वह केवल **75** हजार वर्ष पुराना है और वह है नीनडरथेलर[219] के मानव का ढाँचा।

लूसी की विशेषताऐं

लूसी के ढाँचे की विशेषताऐं बताते हुए जोहानसन का कहना है कि इस ढाँचे की तीन विशेषताऐं हैं।

उसकी पहली विशेषता तो यह है कि वह जो है, वह शायद वह नहीं है क्योंकि वह उन सब ढाँचों से सबसे अधिक भिन्न है जो अब तक मिले हैं क्योंकि उसका ढाँचा उन सब ढाँचों में से किसी भी ढाँचे के साथ नहीं रखा जा सकता।

वह बहुत ही पुरानी है, बहुत ही प्राचीन है, बहुत ही छोटी है, और होमिनिड जाति की है।

[219] Neanderthaler, Germany. This species became extinct 40,000 years ago. These people were most closely related with humans.

उसकी दूसरी विशेषता है उसकी सम्पूर्णता। लूसी के मिलने के पहले के सब ढाँचे टुकड़ों में हैं सिवाय नीनडरथेलर मानव के ढाँचे के, और वह ढाँचा भी केवल **75** हजार वर्ष पुराना ही है।

क्योंकि यह ढाँचा सम्पूर्णता के सबसे अधिक निकट है इसलिये वास्तविकता के भी सबसे अधिक निकट है। और क्योंकि इसमें शरीर के किसी भी भाग की शक्ल का अनुमान लगाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है तो जो कुछ भी है वह सब सामने है।

यह ढाँचा निश्चित रूप से नीनडरथेलर मानव के ढाँचे से बहुत अधिक पुराना है। पर कितना पुराना?

यह इसकी तीसरी विशेषता है। नीनडरथेलर मानव का ढाँचा केवल **75** हजार वर्ष पुराना ही है जबकि लूसी **30–35** लाख वर्ष पुरानी है। यह सबसे अधिक प्राचीन, सबसे अधिक सम्पूर्ण और सबसे अधिक सुरक्षित ढाँचा है जो आदमी के किसी सीधा चलने वाले पूर्वज का अब तक मिला है।

यद्यपि यह ढाँचा मानव के इतिहास की कई समस्याऐं सुलझाता है तो साथ ही कई समस्याऐं खड़ी भी कर देता है।

वास्तव में "लूसी क्या है" यह सोचना बिल्कुल ही बेमतलब है अगर इसको होमिनिड से आदमी तक के विकास के इतिहास के बीच की एक कड़ी नहीं समझा जाये तो, जिसे सैंकड़ों वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने सौ वर्षों से भी अधिक से टुकड़े टुकड़े कर के जोड़ा है।

इस इतिहास से सम्बन्धित विभिन्न विषयों के अध्ययन की सहायता से यह बात अब स्पष्ट हो चली है कि आदमी बन्दर[220] की ही सन्तान है और यह कहानी आज इस शताब्दी की नवीं दशाब्दी में वास्तविकता का रूप ले रही है।

यह कहानी तो वास्तव में शायद शुरू ही नहीं हुई होती यदि डारविन ने **1857** में अपनी खोजों के आधार पर यह न कहा होता कि हम लोग बन्दर की सन्तान हैं, न कि ईसा से **4004** वर्ष पूर्व दिव्य रूप से पैदा हुए लोगों की सन्तान, जैसा कि ईसाई धर्म कहता है।

लेकिन डारविन बेचारे को उस समय क्या पता था कि उसकी यह खोज आज यह मोड़ ले लेगी।



[220] Ape

9 इथियोपिया के हस्तलेख[221]

प्राचीन काल में न तो आज के जैसा कागज ही होता था, न छापेखाने ही थे और इसी लिये न तब आजकल की भाँति बहुतायत में पुस्तकें थीं कि बाज़ार गये और जा कर बाज़ार से कितनी भी पुस्तकें खरीद लाये।

परन्तु पुस्तकें उस समय में भी लिखी जाती थीं, कैसे? हाथ से। इसी लिये उस समय उनको पुस्तक नहीं बल्कि हस्तलेख कहा जाता था क्योंकि वे हाथ से लिखी जाती थीं। इथियोपिया में ये हस्तलेख 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक पाये जाते थे।

इथियोपिया में साहित्य का इतिहास दो हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। अडूलिस बन्दरगाह[222] में आये एक यात्री के वर्णन से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में यहाँ, यानी अक्सुम साम्राज्य[223] के समय में, ग्रीक साहित्य प्रयोग होता था।

अडूलिस अक्सुम का एक पुराना बन्दरगाह था जो अब नहीं है। उसके वर्णन से पता चलता है कि सन् 50 एडी के बाद में जो राजा अक्सुम में थे वे सब ग्रीक साहित्य से परिचित थे।

---

[221] Manuscripts of Ethiopia

[222] Adulis sea port is situated on the North-Western coast of Red Sea.

[223] Axum or Aksum Province

इस वर्णन से **300** वर्ष पूर्व यानी **246–221** बीसी वर्षों में मिश्र के राजा टोलेमी[224] ने एक मूर्त्ति बनवायी थी जिस पर ग्रीक भाषा में कुछ लिखा हुआ था और दूसरी मूर्त्ति अक्सुम के राजा ने बनवायी थी जो ज्यूस तथा पोसीडोन[225] की थी उस पर भी ग्रीक भाषा में कुछ लिखा हुआ था।

ग्रीक भाषा का प्रयोग इस प्रकार शिलालेखों में राजा ऐज़ाना[226] के समय तक यानी सन् **330** एडी तक होता रहा।

यह राजा ऐज़ाना वही राजा था जिससे इथियापिया में ईसाई धर्म का इतिहास प्रारम्भ होता है। यहॉ तक कि राजा ऐज़ाना ने भी अपनी युद्ध विजय के तथा ईसाई धर्म अपनाने के हाल ग्रीक भाषा में ही लिखे हैं। मूर्त्तियों तथा सिक्कों पर ग्रीक भाषा आठवीं शताब्दी तक प्रयोग की जाती रही।

पर ऐज़ाना के समय से ही यानी चौथी शताब्दी से ही ग्रीक के साथ साथ गीज[227] भाषा भी चलती रही। पर आठवीं शताब्दी तक आते आते गीज़ भाषा ने ग्रीक भाषा को समाप्त कर दिया।

गीज़ भाषा दक्षिणी अरब से यहॉ आयी थी और उसकी लिखाई भी दक्षिणी अरब की लिखाई से बहुत मिलती जुलती है।

---

224 Ptolemy, Egypt's King. Ptolemy I Soter started in 367 BC and Ptolemy XV Caesarion (son of Julius Ceaser and Cleopatra) was the last Ptolemy ruler up to 30 BC.

225 Zeus and Poseidon – both are Greek gods

226 Ezana – King of Ethiopia from 330-356 AD who is supposed to make the country Christian

227 Geez language Is an Arabic language

क्योंकि यहाँ बहुत सारे शिलालेख गीज़ और सबाईन[228] भाषा में मिलते है इसलिये यह कहा जा सकता है कि चौथी शताब्दी से पूर्व यहाँ गीज़ भाषा ही बोली जाती रही होगी।

पुस्तक के रूप में यहाँ की प्रारम्भिक पुस्तक थी बाइबिल। इस का चौथी और सातवीं शताब्दी के बीच ग्रीक भाषा से अनुवाद किया गया था। उसी समय सीरिया की भाषा की भी कुछ पुस्तकों का गीज़ भाषा में अनुवाद हुआ।

वास्तव में जब सीरिया से कुछ लोग यहाँ आये और यहाँ आ कर उन्होंने पाया कि यहाँ गीज़ भाषा प्रयुक्त होती थी तो उनको बाइबिल को गीज़ भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता पड़ी। इसी कारण गीज़ भाषा में ये अनुवाद हुए। सीरिया के ये कुछ लोग यहाँ "नौ संत"[229] के नाम से प्रसिद्ध हुए।

सन् **1270** में जब अक्सुम का पतन हुआ और सोलोमन[230] की वंश रेखा का साम्राज्य फिर से चला तो कला का वहाँ बहुत विकास हुआ।

---

[228] Sabaean language – this language is mentioned in my books "Sheba Ki Rani Makeda" and "Raja Solomon" also written in Hindi language.

[229] The Nine Saints were a group of missionaries who were important in the initial growth of Christianity in what is now Ethiopia during the late 5th century. Although frequently described as coming from Syria, only two or three actually came from that province; while others have been traced to Constantinople, Anatolia (Asia Minor or Turkey), and even Rome.

[230] Solomon – King of Jerusalem, Juda country

उसी समय यहाँ की महान पुस्तक "कैब्रा नैगास्ट"[231] लिखी गयी जिसमें शेबा की रानी मकेडा[232] और राजा सोलोमन की कहानी भी है। अरबी, कौप्टिक[233], तथा मध्य-पूर्वीय भाषाओं की पुस्तकों के अनुवाद भी इसी काल में किये गये।

इस समय की, यानी तेरहवीं शताब्दी के अन्त तक, दरबारी भाषा यानी शाही भाषा गीज़ न रह कर अम्हारिक[234] हो गयी थी पर यहाँ के चर्च की भाषा गीज़ ही रही। और इनके चर्च की भाषा अभी भी गीज़ ही है।

दोनों भाषाओं के प्रयोग में भेद होने के कारण दोनों में भेद बढ़ता गया। अम्हारिक शाही भाषा होने के कारण धीरे धीरे प्रतिदिन की भाषा हो गयी और गीज़ भाषा केवल चर्च में ही सज कर रह गयी।

ऐसा **1542** तक चला। **1542** में जब पुर्तगाली मिशनरी[235] यहाँ ईसाई धर्म फैलाने के लिये आये तो उन्होंने लिखी हुई अम्हारिक भाषा का खूब प्रयोग किया।

---

231 Kebra Negast – "the Glory of Kings"

232 Read about "Sheba Ki Rani Makeda" written by Sushma Gupta in Hindi language, Delhi, Prabhat Prakashan, 2019.

233 Coptic language is the language of Coptic Church

234 Amharic language

235 Read "Lobo Ki Ethiopia Ki Yatrayen", written by Sushma Gupta in Hindi language to read about this important Portuguese Missionary – Jeronimo Lobo. He came here first time in 1628

प्राचीन काल में यहाँ नील नदी की घाटी का पैपीरस[236] ही सामान्यतया लिखने के लिये प्रयोग किया जाता था। पर इथियोपिया के लोगों का कहना है कि यह पौधा मूल रूप से इथियोपिया का है, बाद में यह दूसरे देशों में भेजा गया।

आज तो यहाँ पैपीरस के बहुत सारे प्रयोग हैं, जैसे इसकी नावें बनती हैं, चरवाहों के कोट बनते हैं, आदि आदि। परन्तु उस समय में इथियोपिया के लोग पैपीरस का क्या करते थे इस विषय में कोई जानकारी नहीं है।

हाँ, यहाँ पत्थर, सोना, चाँदी तथा लकड़ी पर लिखे गये लेख अवश्य मिलते हैं। धातु के सिक्के हैं, पत्थर के शिला लेख हैं और मूर्त्तियाँ हैं, लकड़ी के तख्ते और मेजें हैं

बाद में यहाँ लिखने के लिये चमड़े का प्रयोग आरम्भ हुआ। इन चर्म हस्तलेखों की यहाँ काफी बहुतायत है और ये यहाँ के विशेष रूप से प्रसिद्ध तथा उल्लेखनीय भी हैं।

लिखने के लिये यहाँ चमड़े का प्रयोग कब से आरम्भ हुआ यह कहना तो कठिन है पर वैसे इसका प्रयोग मध्यपूर्व में प्राचीन काल से ही किया जाता रहा है। इसका व्यापारिक रूप से उत्पादन ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व एशिया माइनर[237] में प्रारम्भ हुआ था।

---

[236] Papyrus – a kind of tree whose bark is used to make ancient paper and people used it to write on it

[237] Asia Minor is a geographic region in the South-western part of Asia comprising most of what is present-day Turkey.

इथियोपिया में इसके लेखन सामग्री के रूप में प्रयोग के प्रमाण छठी शताब्दी से मिलते हैं। यह वही समय है जब सीरिया से यहाँ वे "नौ संत" आये थे और उनको बाइबिल का अनुवाद करने की आवश्यकता पड़ी। उस समय से ले कर इस शताब्दी यानी **20**वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक यह लेखन सामग्री लिखने के लिये प्रयोग की जाती रही है।

यह चमड़ा घरेलू तथा जंगली दोनों प्रकार के जानवरों से प्राप्त किया जा सकता है। बैल, गाय, बछड़ा, घोड़ा, भेड़, बकरा आदि मुख्य घरेलू जानवर हैं जिनकी खाल के चमड़े पर लिखा जा सकता है।

यदि लेखन सामग्री अधिक होती थी तो बड़ी खाल का प्रयोग किया जाता था और यदि थोड़ी होती थी तो छोटी खाल से भी काम चला लिया जाता है।

पहले जो लोग हस्त लेख खाल पर लिखवाया करते थे वे लिखने वाले को अक्सर जीवित जानवर दे दिया करते थे ताकि वह उस का माँस खाने के लिये प्रयोग कर ले और खाल लिखने के लिये।

खाल की तैयारी और स्याही

लिखने के लिये खाल को तैयार करने में काफी समय और मेहनत लगती है। खाल को पहले पानी में भिगो कर रखा जाता है। खाल

यदि ताजा हो तो उसको भिगोने के लिये तीन से चार दिन तक काफी होते हैं और यदि सूख गयी हो तो एक सप्ताह से अधिक भी लग जाता है।

फिर उस खाल को लकड़ी के एक खॉचे में लगा दिया जाता है। खाल के नीचे वाला भाग ऊपर की ओर रख कर इस पर पानी डालते जाते हैं और उसका मॉस साफ करने के लिये उस पर प्यूमिस पत्थर[238] रगड़ते जाते हैं।

ऐसा वे कई बार करते हैं जब तक कि उसका मॉस पूरी तरह से साफ नहीं हो जाता। इसके बाद इसको दीवार के सहारे रख कर उसी दशा में पूरी तरह सूखने के लिये छोड़ देते हैं।

इसके बाद बालों वाली ओर की बारी आती है। उसको एक विशेष प्रकार की कुल्हाड़ी से साफ किया जाता है जब तक कि उसके सारे बाल पूरी तरीके से साफ नहीं हो जाते।

प्यूमिस पत्थर का इस तरफ भी प्रयोग किया जाता है ताकि जो बाल कुल्हाड़ी से साफ होने से रह गये हैं वे उस पत्थर के रगड़ने से साफ हो जायें।

फिर इस खाल को अच्छी तरह धो कर सुखा लेते हैं। इसके बाद इसको इच्छानुसार टुकड़ों में काट लेते हैं या मोड़ लेते हैं।

[238] Pumice stone is a very light stone and can float on water

इस चमड़े पर लिखने के लिये यहाँ केवल दो रंग की स्याही प्रयोग की जाती थी – काली और लाल। कहीं कहीं सुनहरे अक्षर भी लिखे जाते थे।

काली स्याही का बनाना आसान था, यह कम समय लेता था और इसको कई प्रकार से बनाया जा सकता था। इसमें धुँए की कालिख, कोयला, जला हुआ जौ या गेहूँ तथा चमक लाने के लिये गोंद पड़ता था।

लाल स्याही लाल मिर्च, लाल मिट्टी, अंडे का पीला भाग तथा गोंद मिला कर बनायी जाती थी और छह सप्ताह से ले कर आठ सप्ताह के समय तक बन पाती थी।





इनकी कलम सरकंडे[239] की होती थी तथा ये लोग अपनी स्याही सींगों के खोल[240] में रखते थे। इथियोपिया के हस्त लेख अक्सर चमड़े पर ही हैं।

सबसे पुराने हस्त लेख यहाँ **13**वीं शताब्दी के लिखे हुए पाये जाते हैं। परन्तु **14**वीं शताब्दी के बाद के समय से तो ये यहाँ पर बहुतायत से मिलते हैं और मजे की बात यह है कि तब से ले कर अब तक के हस्त लेखों की शक्ल में बिल्कुल भी परिवर्तन नहीं है।

---

[239] Translated for the word “Reed”. See its picture above

[240] Hollowed horns. See its picture above.

इनकी पुस्तकें साधारणतया दस पृष्ठों की होती हैं और ये पृष्ठ लकड़ी की जिल्द में मढ़े होते हैं। इस जिल्द पर मोरोक्को[241] का चमड़ा चढ़ा होता है और उस चमड़े पर क्रास[242] बना रहता है तथा चारों ओर बार्डर बने रहते हैं।

इनकी पुस्तकों के जिल्द के अन्दर का थोड़ा सा भाग तो चमड़े से ही ढका रहता है पर शेष भाग पर ब्रोकेड, रेशम या सूती कपड़ा लगा रहता है।



इन हस्त लेखों पर बने इनके क्रास भी विशेष प्रकार के होते हैं। क्रास की हर डंडी के अन्त में साधारणतया तीन छोटे छोटे गोले बने रहते हैं और उन गोलों के चारों ओर भी रेखाएँ खिंची रहती हैं। क्रास बनाने का यह तरीका यहाँ का सबसे अलग तरीका है।

15वीं शताब्दी के हस्त लेख मोनैस्टरी[243] में लिखे गये थे और उनमें काफी चित्रकारी भी मिलती है। चित्रकारी कोई भी कर सकता था, लेखक भी और दूसरा कोई और भी।

[241] Morocco – a country of Africa situated in its North-west

[242] Cross

[243] Monastery - A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits). The monastery generally includes a place reserved for prayer which may be a chapel, church or temple, and may also serve as an oratory.

प्रारम्भ के हस्त लेखों में केवल दोहरी रेखाओं के डिजाइन हैं जिनमें सादा रंग भरा हुआ है और बाहरी रेखाऐं काले रंग से बनी हुई हैं।

पर इनकी असली चित्रकारी लगभग 16वीं शताब्दी से आरम्भ होती है। इन हस्त लेखों में से कुछ गोस्पल्स[244] हैं जिनमें पुस्तक के प्रारम्भ में ही कई चित्र हैं जिनमें जीसस के जीवन काल की घटनाओं का प्रदर्शन है। 17वीं शताब्दी में ऐसे चित्रित हस्त लेख बहुतायत से पाये जाते हैं।

सेन्ट मैरी यहॉ काफी पूज्य है इसलिये उसके चित्र यहॉ के हस्त लेखों में बहुत मिलते हैं। यहॉ मैरी का केवल जीसस की मॉ के रूप में ही चित्रण है इसलिये वह सिंहासन पर बैठी, पंखों वाले दो देवदूत माइकल और गैब्रील[245] के पंखों के छत्र के नीचे बैठी दिखायी देती है। इन देवदूतों के हाथ में तलवार भी है।

17वीं तथा 18वीं शताब्दी में चर्च में इन बहुचर्चित पुस्तकों का प्रयोग खूब होता था। अधिक चित्र बनाने के लिये पठन सामग्री कम कर दी जाती थी क्योंकि पृष्ठों की संख्या बढ़ाना सम्भव नहीं था।

इन चित्रों में पीला, चमकीला हरा तथा चमकीला नीला जैसे चमकीले रंगों का प्रयोग है। ये रंग सादा ही भरे होते हैं और काले

[244] Gospels
[245] Michael and Gabriel Angels

रंग से बाहर की तथा अन्दर की कुछ रेखाएँ चित्र को उभारने के लिये बनी रहतीं हैं।

चमड़े पर चित्रकारी यहाँ अभी भी बहुत लोकप्रिय है और कई आकार में मिलती है। चित्रकारी आज भी उसी प्रकार से होती है – सादा रंग भर कर और काली रेखाओं से चित्र को उभार दे कर।

सन् **1925** के बाद से यहाँ पर पुस्तकों की छपाई आरम्भ हो गयी इस कारण से अब ये हस्त लेख तो यहाँ समाप्त हो गये हैं पर चमड़े पर चित्र बनाना अभी भी बहुत प्रचलित है और यहाँ के ये चित्र बहुत लोकप्रिय हैं और बहुत बिकते हैं।

जो आदमी इथियोपिया जाता है वह एक चमड़े का चित्र तो खरीद कर लाता ही है। बिना चमड़े का चित्र खरीदे उसका इथियोपिया जाना व्यर्थ है।



Map of Asia Minor



10 इथियोपिया में डाक टिकिटों का जन्म[246]

बच्चो, क्या तुम पत्रों पर लगे टिकिट[247] इकट्ठा करते हो? यदि तुम उन्हें इकट्ठा नहीं भी करते तो भी कुछ टिकिटों की सुन्दरता से तुम आकर्षित तो अवश्य ही होते होगे। और यदि करते हो तो तुम्हें अपने संग्रह किये गये टिकिटों के विषय में जानने की उत्सुकता भी अवश्य ही होती होगी।

अच्छा यह बताओ क्या तुम्हारे पास इथियोपिया का भी कोई टिकिट है? यदि नहीं है तो हम तुम्हें बता दें कि इथियोपिया के टिकिट बहुत ही सुन्दर, चटकीले रंगों के और बहुत आकर्षक होते हैं, और यदि है तो सुनो इथियोपिया के टिकिटों की कहानी।

इथियोपिया में डाक टिकिट का जन्म सन् **1895** में हुआ था। उससे पहले इथियोपिया निवासी अपने पत्र विशेष रूप से इसी कार्य के लिये नियुक्त किये गये पत्रवाहकों[248] या डाकियों के हाथ भेजा करते थे।

ये पत्रवाहक घोड़ों, गधों, खच्चरों या ऊँटों पर सवार हो कर पत्र ले जाया करते थे। कभी कभी पैदल जाने वालों के हाथ भी ये पत्र भेज दिये जाते थे।

---

246 Birth of the Postal Stamps in Ethiopia

247 Postal Stamps

248 Postman

ये पत्रवाहक बन्दूकें, भाले, बरछे जैसे हथियारों से लैस हो कर बड़े बड़े घास के मैदानों, घने जंगलों, सूखे रेगिस्तानों, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों और तेज़ बहती नदियों को पार करते हुए अपने अपने स्थानों को चले जाते थे। ऐसे में इनको अक्सर जंगली खूँख्वार जानवरों तथा जंगली लोगों का भी सामना करना पड़ जाता था।

रास्ते में इनको व्यर्थ में कोई परेशान न करे इसलिये ये लोग एक डंडी पर पत्र बाँध लेते थे और उसको सारे रास्ते इस प्रकार पकड़ कर ले जाते थे जिससे वह डंडी दूर से दिखायी देती रहे।

इस तरह से जाने से लोग इनको पहचान लेते थे कि यह आदमी पत्रवाहक है और फिर इनको तंग नहीं करते थे बल्कि ये लोग जिस बस्ती से भी गुजरते थे, लोग इनकी बड़ी आवभगत करते थे, इनका ख्याल रखते थे और इनको आश्रय देते थे।

इन पत्रवाहकों को राह में परेशान करने वालों के लिये सरकार की ओर से काफी कड़ी सज़ाएँ थीं। सरकारी व आवश्यक पत्र एक्सप्रेस वाहकों के हाथ भेजे जाते थे।

इथियोपिया का पहला टिकिट

बच्चों, तुमको यह जान कर आश्चर्य होगा और साथ ही खुशी भी होगी कि इथियोपिया की धरती पर प्रयोग होने वाले सबसे पहले टिकिट भारतीय टिकिट थे। ऐसा इसलिये था क्योंकि यहाँ की सबसे पहली डाक सेवा अंग्रेजों ने **25** नवम्बर **1867** को शुरू की थी जो

दुर्भाग्यवश सात महीने बाद ही जून **1868** में बन्द हो गयी। उस सेवा में उन्होंने भारतीय डाकघर के टिकिट ही प्रयोग किये थे।

कुछ वर्ष बाद मिश्र[249] वासियों ने इथियोपिया के एक मुख्य प्रान्त हरार[250] पर कब्जा कर लिया और इसके फलस्वरूप उन्होंने **1876** में एक डाकघर हरार शहर में खोला जिसमें उन्होंने मिश्र देश में प्रयोग होने वाले डाक टिकिट प्रयोग किये जिनको इथियोपिया में प्रयोग करने के लिये एक क्रास[251] लगा कर काट दिया जाता था। मिश्र के ये टिकिट यहाँ **10** वर्ष तक यानी सन् **1886** तक चले।

सन् **1889** में मिनीलिक द्वितीय[252] राजा बना और उसने यहाँ सन् **1913** तक राज्य किया। उसके राज्य काल में यहाँ काफी उन्नति हुई। टेलीफोन, टेलीग्राम, रेल, आधुनिक सड़कें, शिक्षा, छापेखाने आदि सभी का प्रारम्भ इसी राजा के राज्य काल में हुआ।

सन् **1893** में एक स्विटज़रलैंड निवासी की सलाह व सहायता से इथियोपिया का पहला टिकिट पेरिस[253] में छपा। उस समय सात मूल्यों के टिकिट छापे गये – चौथाई, आधे, **1**, **2**, **4**, **8** और **16** गुएर्च[254] के।

---

[249] Egypt
[250] Harar State – an important state of Ethiopia
[251] Cross (X = sign of multiplication)
[252] Menelik II
[253] Paris is the capital of France, Europe.
[254] Guerch – currency used in Ethiopia at that time. Presently its currency is “Birr”.

इनमें से पहले चार टिकिटों पर राजा मिनीलिक की तस्वीर बनी हुई थी और बाद के तीन टिकिटों पर शेर की। शेर यहाँ का राष्ट्रीय पशु है। चौथाई, आधे और 1 गुएर्च के पोस्ट कार्ड भी छापे गये।

इथियोपिया में डाक सेवा का प्रारम्भ

इथियोपिया की डाक सेवा 9 मार्च 1894 को स्थापित की गयी थी। इसी दिन इथियोपिया की पहली रेलवे बनाने की योजना के कांट्रेक्ट पर भी दस्तखत किये गये और इसी स्विस निवासी को सारे देश में डाक सेवा व टेलीग्राम सेवा प्रारम्भ करने का भार भी सौंप दिया गया।

परन्तु यह डाक सेवा सन् 1894 में प्रारम्भ न हो सकी। पहला टिकिट हरार शहर के डाकखाने से जनवरी 1895 में बेचा गया। हरार से प्रारम्भ करके इस डाक सेवा को धीरे धीरे हर शहर में प्रारम्भ करने की योजना थी परन्तु राजनीतिक अशान्ति के कारण ऐसा न हो सका।

लगभग चार वर्षों तक यानी 1898 तक डाक सेवा का कार्य फिर ठप्प सा पड़ा रहा। पर उधर रेलवे लाइन बनाने का काम जारी रहा। 29 मई 1899 को यह रेलवे लाइन जिबूती[255] से ऐडिस अबाबा[256] की ओर तक 34 किलोमीटर तक बन चुकी थी, सो इसी

[255] Djibouti
[256] Addis Ababa – capital of Ethiopia

रेलवे लाइन को डाक के थैलों को लाने ले जाने के लिये प्रयोग में लाया जाने लगा।

इसके बाद स्विटज़रलैंड से तीन आदमी और बुलाये गये जिन्होंने **22** अगस्त **1899** को नियमित रूप से डाक वितरण का कार्य आरम्भ किया।

सन् **1904** में एक दूसरा डाकघर हरार से थोड़ी दूर के एक शहर डिरे डावा[257] में खोला गया परन्तु फिर भी डाक सेवा पूरी तौर पर प्रारम्भ नहीं हो पायी।

इसके बाद भी पत्रवाहक घोड़ों, खच्चरों व ऊँटों पर डाक एक शहर से दूसरे शहर तक ले जाते हुए पाये गये। पर रेलवे लाइन और उसके साथ बनी टेलीफोन लाइन से इतना लाभ अवश्य हुआ कि लोगों का आना जाना अब टेलीफोन से नियन्त्रित होने लगा।

पर कुछ दिनों के बाद टेलीफोन लाइनें भी खराब रहने लगीं क्योंकि जहॉ जहॉ से ये टेलीफोन लाइनें जातीं थीं वहॉ बस्ती भी नहीं थी और कहीं कहीं जंगल भी थे।

जब वहॉ कभी कभी हाथियों के झुंड आ जाते थे और वे यदि तारों के लिये खड़े किये गये पतले पतले नाजुक से खम्भों से ज़रा सा छू भी जाते थे तो वे खम्भे गिर जाते थे और टेलीफोन के तार टूट जाते थे।

---

[257] Dire Dawa – an important city of Ethiopia

इसके अलावा वहॉ अक्सर ऐसे जंगली लोग भी आ जाते थे जिनको वे तार बड़े चमकीले व सुन्दर लगते थे। वे उन तारों को वहॉ से निकाल लेते थे और अपने गहने बनाने में प्रयोग कर लेते थे, या फिर मछली पकड़ने वाले कॉटे बना लेते थे।

वहॉ आस पास के रहने वाले शिकारी लोग खम्भों पर लगे सफेद चीनी मिट्टी के गोलों को अपना निशाना सुधारने के अभ्यास के लिये प्रयोग करते थे।

यद्यपि राजा मिनीलिक ने इन सब शरारतों को रोकने के लिये प्राण दंड तक की घोषणा कर रखी थी परन्तु फिर भी वे लोग बाज़ नहीं आते थे। राजा ने डराने के लिये कई अपराधियों के शवों को खम्भों से भी बॅधवाया परन्तु फिर भी बहुत से लोगों ने अपने प्राण खोये।

मिनिस्ट्री औफ पोस्ट्स, टेलीग्राफ ऐन्ड टेलीफोन्स

कुछ समय तक ऐसे ही चलता रहा पर फिर नियमित रूप से यह सेवा तब संगठित हुई जब **1907** में राजा ने इसके लिये एक मिनिस्ट्री औफ पोस्ट्स, टेलीग्राफ ऐंड टेलीफोन्स की स्थापना की। इस मिनिस्ट्री की स्थापना के फल स्वरूप **1908** में इथियोपिया फ्रांस सरकार की सहायता से यूनिवर्सल पोस्ट यूनियन का सदस्य बन गया।

इन दोनों बातों से इथियोपिया की डाक सेवा को बहुत बढ़ावा मिला। इस समय तक यहाँ केवल स्थानीय डाक सेवा ही चलती थी। विदेशी डाक सेवा के लिये डाक पहले जिबूती जाती थी और फिर वहाँ से कहीं और जाती थी।

इस सदस्यता का इतना लाभ अवश्य हुआ कि इसके फलस्वरूप डाक टिकिट भविष्य में नियमित रूप से छपते रहे पर ये सभी टिकिट अभी भी फ्रांस में ही छपते थे।

इथियोपिया के डाक टिकिट के इतिहास में कुछ महत्वपूर्ण बातें और भी हैं जो जानने योग्य हैं।

इथियोपिया पर केवल पाँच वर्ष के लिये, **1936** से **1941** तक, इटली का राज्य रहा। यह समय इथियोपिया के विकास में बहुत ही बुरा साबित हुआ क्योंकि जो कुछ भी योजनाएँ राजा मिनीलिक शुरू कर के गया था और राजा हायले सिलासी[258] ने **1930** से **1974** तक उन्हें आगे बढ़ाया, उन सभी को उन्होंने इन पाँच छह वर्षों में ही काफी नुकसान पहुँचाया।

पहले तो राजा हायले सिलासी को अपना देश छोड़ कर जाना पड़ा पर जब वह **1941** में अपने देश वापस आया तो उन सब योजनाओं को उसे फिर से नये सिरे से शुरू करना पड़ा जो वह आगे बढ़ा कर गया था और इटली वालों ने उन्हें नष्ट कर दिया था।

---

[258] King Haile Selassie (1930-1974)

सन् **1936** तक इस दिशा में काफी विकास हो चुका था परन्तु इटली वाले यहॉ आ कर उसे सब तहस नहस कर गये। जैसे तब तक इथियोपिया में **41** डाकघर स्थापित हो चुके थे पर वे केवल दो डाकघर छोड़ गये शेष **39** डाकघर नष्ट कर गये थे।

बच्चो तुम लोगों को यह जान कर एक बार फिर आश्चर्य और खुशी होगी कि जब राजा हायले सिलासी सन् **1941** में अपने देश वापस आया तो मार्च **1942** में स्वतंत्र इथियोपिया के जो पहले तीन डाक टिकिट जारी किये गये थे वे टिकिट अपने भारत देश में नासिक में छपवाये गये थे।

डाक टिकिटों के इतिहास की दूसरी मुख्य घटना यह है कि यहॉ **31** दिसम्बर **1944** को टिकिटों का एक सैट छापा गया जो पहली बार देश की राजधानी एडिस अबाबा के इम्पीरियल पोस्ट औफिस डिपार्टमेन्ट द्वारा छापा गया था।

और तीसरी मुख्य घटना यह है कि यहॉ का पहला हवाई पत्र **1951** में छापा और चलाया गया।

तब से अब तक यह डिपार्टमेन्ट उन्नति पर है। पोस्ट औफिस की नयी इमारत एडिस अबाबा में **1970** में बन कर तैयार हुई थी। इसमें **19** अगस्त **1975** में सरकार ने एक अजायबघर की भी व्यवस्था की है जिसमें **1894** में छापे गये पहले टिकिट से ले कर आज तक के सारे छपे हुए टिकिट मौजूद हैं। केवल वे ही कुछ टिकिट नहीं हैं जो इटली के राज्य काल में नष्ट हो गये थे।

उन्होंने इन टिकिटों का एक कैटेलोग भी बनाया है। इसी के अन्तर्गत एक पोस्टल ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट भी बनाया गया है जहॉ समय समय पर सेमीनार तथा ट्रेनिंग कोर्सेज़ का आयोजन किया जाता है। यहॉ आ कर लोग अपनी डाक सम्बन्धी समस्याऐं भी हल करते हैं।



11 फालाशा साहित्य में मोसेस की मृत्यु[259]

यह न तो कोई लोक कथा है और न ही कोई कहानी है। न तो यह किसी पश्चिमी देश की है और न ही इसमें ईसाई धर्म का कुछ है क्योंकि यह कथा ईसाई धर्म से बहुत पहले की है।

पर क्योंकि यह कथा ईसाइयों के पुरखों की है और इथियोपिया के ज्यूज़ से इसका गहरा सम्बन्ध है इसलिये इसे यहाँ दिया जा रहा है।

इथियोपिया में फालाशा या इथियोपियन ज्यूज़ का अपना एक अलग ही समुदाय है और यह समुदाय वहाँ बड़ा प्रसिद्ध है, इथियोपिया में भी और विदेशों में भी। इनका अपना एक अलग महत्व है और एक अलग कहानी है।

इथियोपिया के फालाशा लोग अपनी वंश रेखा उन इज़रायल वालों से मानते हैं जो आज से **3000** वर्ष पूर्व शेबा की रानी के पुत्र मिनीलिक को उसके पिता इज़रायल के राजा सोलोमन ने उसके राज्य कार्य में सहायता प्रदान करने के लिये भेजे थे।

यद्यपि इनके विषय में काफी जानकारी इधर उधर से प्राप्त की जा सकती है परन्तु स्काटलैन्ड के एक यात्री जेम्स ब्रूस[260] ने इनकी जीवन शैली के बारे में काफी विस्तार से लिखा है।

---

[259] Death of Moses in Falasha Literature. Falasha literature is from Ethiopia

[260] James Bruce of Scotland – Travels to Discover the Source of the Nile in the Years…

इथियोपिया में ये लोग ताना झील के उत्तर में रहते हैं और अगौ[261] भाषा बोलते हैं। ये लोग ज्यू, ईसाई और पागन धर्मों की मिली जुली बातों को मानते हैं। ये लोग बाइबिल की पहिली पॉच पुस्तकों[262] को मानते हैं और ज्यूज़ की मिशनाह[263] तथा टालमुड[264] पुस्तकों को बिल्कुल नहीं जानते।

ये लोग बाइबिल की इन पॉच पुस्तकों में लिखी हुई फ़ीस्ट को ही मानते हैं परन्तु इन लोगों के उसको मानने का तरीका संसार के दूसरे भागों में रहने वाले ज्यू लोगों से काफ़ी भिन्न है।

ये लोग मोनैस्टरी को तो मानते हैं पर मोनैस्टरी जीवन शैली पर जूडा धर्म से इनका काफी मतभेद है।

इनको हिब्रू भाषा[265] बिल्कुल भी नहीं आती और ये लोग इथियोपिया की गीज़ भाषा में ही अपनी पूजा करते हैं। इनकी पूजा का स्थान मस्जिद कहलाता है।

इथियोपिया में ये लोग फालाशा कहलाते हैं। फालाशा का अर्थ होता है विदेशी। क्योंकि ये लोग मूल रूप से इज़रायल से आये थे इसलिये ये इथियोपिया के लिये विदेशी थे और इसी लिये वहॉ आ कर ये फालाशा कहलाये।

---

[261] They live in the North of Tana Lake, in Tigray region, from which the Blue Nile comes out and speak Agaw language. They are commonly known as Beta Israel

[262] Pentateusch – the five Books of Moses or Law of Moses – Genesis, Exodus, Leviticus, Numbers and Deuteronomy.

[263] Mishnah

[264] Talmud – religious book of Jews

[265] They do not know Hebrew language and conduct their worship in Ethiopia’ Gees language.

इनका अपना साहित्य है जो फालाशा साहित्य के नाम से जाना जाता है। हालाँकि फालाशा साहित्य बहुत कम है फिर भी इसका इथियोपियन साहित्य में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।

इनका यह साहित्य गीज़ भाषा में है क्योंकि हिब्रू भाषा तो इनको आती नहीं और इनकी अपनी भाषा अगौ का साहित्यिक प्रयोग अभी आरम्भ नहीं हुआ है।

फालाशा साहित्य की एक कृति है मोटा म्यूज़[266]। यह कृति मोसेस की मृत्यु के विषय में है कि उसकी मृत्यु कैसे हुई। एडवर्ड उलैनडौर्फ[267] ने उसका अंग्रेजी अनुवाद किया है। यह कहानी उसी अंग्रेजी अनुवाद पर आधारित है।

मौसेस की भगवान से मुलाकात

एक बार मोसेस साइनाइ पर्वत[268] पर भगवान की पूजा करने गया। वहाँ उसने पूजा की और अपनी टोरा किताब[269] खोली और पढ़ने लगा। उसमें उसे पाँच बातें ऐसी लगीं जो वह समझ नहीं पा रहा था।

उस समय भगवान स्वयं मोसेस के पास आये और बोले — “मोसेस, मैंने स्वयं अपने हाथों से ये बातें लिखी हैं इसलिये मैं इन

[266] Mota Muse or Death of Moses
[267] Edward Ullendorf
[268] Sinai Mountain
[269] Book of Torah

बातों का अर्थ जानता हूॅ, इसलिये तुम मुझसे उन्हें सुनो और समझो।

पहली बात तो यह है कि अपने देश से बाहर रहने पर, भूख के समय, किसी भी वस्तु के बहुतायत में प्राप्ति के समय, हर्ष के समय, बीमारी के समय, गरीबी के समय और दुख के समय जो अपने हृदय में यह सोचता है कि कोई भगवान है जो मेरे साथ है तो उसको यह जानना चाहिये कि मैं उसका फैसला करूॅगा क्योंकि मैं भगवान हूॅ जिसका सिंहासन सबसे ऊॅचा है।

दूसरी बात यह है कि जो मुझमें विश्वास रखता है वह सुखी जीवन व्यतीत करता है तथा मेरी तुरत दया का पात्र है।

तीसरी बात यह है कि वह जो हॅसते हुए प्रसन्न हो कर सब प्रकार के पाप करता है मैं उसको रोता चिल्लाता गैहैन्ना नरक[270] की आग की ओर ले जाता हूॅ।

चौथी बात यह है कि वह मनुष्य जिसको बहुत सारी सम्पत्ति मिल जाती है और वह यह नहीं कहता कि यह सब मुझे भगवान ने दिया है बल्कि कहता है कि मैंने इसको स्वयं अपने सामर्थ्य से प्राप्त किया है मैं उसको प्रलय के समय गैहैन्ना की आग में डाल दूॅगा।

अब तुम पॉचवी बात सुनो। जिनको भी मैंने बनाया है यदि वे सच्चे हृदय से मेरी पूजा नहीं करते और यह नहीं कहते कि हे

---

[270] Gehenna Hell

भगवान तुम ही हमारे स्वामी हो तो मैं उन पर किसी भी प्रकार की दया नहीं कर सकता।

यदि वे यह विश्वास नहीं करते कि मैंने ही आकाश और धरती, स्वर्ग और नरक, रात और दिन तथा सूरज और चाँद बनाये हैं और वे यह भी विश्वास नहीं करते कि मैं ही आकाश के ऊपर अपने सिंहासन पर बैठता हूँ तो मैं उनको अपनी दया का पात्र नहीं बना सकता।"

इस सबको सुन कर मोसेस बोला — "हे भगवन, मैंने आपकी किताब में पढ़ा है कि आपने पृथ्वी और आकाश से यह पूछा था कि तुम मुझमें विश्वास करते हो कि नहीं?

तब धरती और आकाश ने कहा था — "हे स्वामी, हम आप में विश्वास करते हैं।" परन्तु अगर उन्होंने यह कहा होता कि हम आप में विश्वास नहीं करते तो आपने उनके साथ क्या किया होता?"

भगवान ने मोसेस से कहा — "तो मैंने संसार के जानवरों में से किसी सबसे छोटे जानवर को चुना होता, चाहे वह धरती का होता या समुद्र का, उसे कोई भी नहीं जानता कि वह कहाँ रहता है और जिसे केवल मैं अकेला ही ढूँढ सकता। और ऐसे जानवर को मैंने उनको नष्ट करने के लिये तुरन्त ही भेज दिया होता। फिर वे धरती पर गिरे हुए एक राई के दाने के बराबर भी नहीं लगते।"

मोसेस बोला — "हे स्वामी, अब मैं आपसे आपके उस नाम का वास्ता दे कर पूछता हूँ जो आपने मुझे बताया है और मेरे सिवा उसे और कोई नहीं जानता कि आप मुझे वह दिन बतायें जिस दिन आप मेरे प्राण लेंगे।"

भगवान बोले — "सुनो मोसेस जो मैं तुमसे कहता हूँ। अभी तक कोई ऐसा मनुष्य नहीं हुआ जिसको मैंने उसकी मृत्यु का दिन बताया हो।

न तो उन धर्मदूतों[271] को जो तुमसे पहले जन्मे और न ही उन देवदूतों[272] को जो मेरे साथ रहते हैं। लेकिन मोसेस, यह बात मैं तुमको अवश्य बताऊँगा। मैं तुम्हारे प्राण शुक्रवार को लूँगा।"

उस दिन के बाद से मोसेस हर शुक्रवार को अपने मृत्यु के कपड़े पहन कर मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहा कि शायद उस शुक्रवार को मृत्यु दूत आ जाये।

इस प्रकार उसको मृत्यु दूत की प्रतीक्षा करते करते काफी समय बीत गया पर उसकी मृत्यु नहीं आयी और एक दिन मोसेस अपनी मृत्यु की बात भी भूल गया।

---

271 Translated for the word "Prophets"

272 Translated for the word "Angels" who live with me (God)

मोसेस की मृत्यु दूत से मुलाकात

एक दिन मोसेस फिर साइनाइ पर्वत पर भगवान की प्रार्थना करने पहुँचा और वहाँ उसने भगवान की प्रार्थना की। मृत्यु दूत मोसेस के सामने इज़रायल के एक नवयुवक के रूप में प्रगट हुआ और बोला — "सुखी रहो मोसेस।"

जब मोसेस ने मृत्यु दूत की आवाज सुनी तो उसका गला रुँध गया। उसकी जिह्वा जैसे बँध गयी। उसके मुख से कोई शब्द न निकला। उसकी टाँगें काँपने लगीं और वह मुँह के बल गिर पड़ा।

फिर वह उठा और मृत्यु दूत से बोला — "तुम कौन हो जो मुझे सुखी रहने के लिये बोलते हो? मैंने ऐसी डरा देने वाली आवाज़ जैसी तुम्हारी है पहले कभी नहीं सुनी।"

मृत्यु दूत बोला — "क्या तुम मुझे नहीं जानते मोसेस? सुनो मोसेस, मैं वही हूँ जो हर एक को उसका परिवार छोड़ने पर विवश करता है, मैं वही हूँ जो प्रलय आने तक घरों को गिरा कर कब्रें बनाता है। मेरा नाम सूर्याल[273] है। मैं मृत्यु दूत[274] हूँ।"

मोसेस बोला — "पर यहाँ तुम क्या करने आये हो?"

मृत्यु दूत बोला — "मैं यहाँ तुम्हारे प्राण लेने के लिये आया हूँ मोसेस, जिसे मैं ले जा कर भगवान को दूँगा।"

---

[273] Sooryal – the Messenger of Death

[274] Messenger of Death

मोसेस बोला — "मैं तुमसे उसी भगवान का वास्ता दे कर प्रार्थना करता हूँ कि जिसने तुम्हें मेरे प्राण दिन के तीसरे घंटे तक — यानी सुबह 9 बजे तक, लाने के लिये कहा है कि मुझे तब तक अपनी पत्नी और बच्चों से मिल कर आने दो।"[275]

इस पर भगवान ने कहा — "जब तक इसका समय आता है तब तक के लिये उसे छोड़ दो।" और मृत्यु दूत ने उसको उसका समय आने तक वहीं छोड़ दिया और चला गया।

मोसेस की मृत्यु

मोसेस साइनाइ पर्वत से उतरा और एक तिराहे पर आ कर खड़ा हो गया जहाँ से एक रास्ता उसकी माँ के घर की ओर जाता था और दूसरा रास्ता उसकी पत्नी के घर की ओर।

वह दोनों रास्तों के बीच खड़ा सोचता था — "पहले मैं अपनी माँ के पास जाऊँ या पत्नी के पास?"

वह वहाँ खड़ा यह सोच ही रहा था कि उसको आकाशवाणी सुनायी दी कि पहले तुम अपनी माँ के पास जाओ और वह अपनी माँ के पास चल दिया।

दरवाज़े पर आ कर वह ज़ोर से बोला — "दरवाजा खोलो माँ।"

---

[275] Even today Ethiopians' day starts at 6.00 am in the morning. It seems that this effect is from the time of these Falasha people.

उसकी माँ आयी और उसने दरवाजा खोला। उसने देखा कि उसका पुत्र गम्भीर है और उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है।

वह बोली — “पुत्र, तुमको क्या हुआ है? क्या तुम्हारे चरवाहों ने तुमको यह कहा है कि तुम्हारे पशु खो गये हैं? तुमको हुआ क्या है? कुछ बोलो तो सही।”

मोसेस बोला — “मुझे भगवान के अलावा और कौन बुला सकता है माँ? और मृत्यु के अलावा मुझे और कौन डरा सकता है?”

माँ बोली — “क्या वह जो भगवान से आमने सामने हो कर बात करता है उसको भी मरना है?”

मोसेस बोला — “हाँ माँ, उसको भी मरना है। सारे धर्मदूत[276] मर चुके हैं। अब उठो और अपना बाँया पैर मेरे बाँयी ओर रखो और अपने दोनों हाथ फैला कर भगवान से प्रार्थना करो कि वह मुझे मृत्यु की कड़वाहट से बचाये।”

मोसेस ने अपनी माँ का चुम्बन लिया और चला गया।

मोसेस की माँ बहुत रोयी और रो कर कहने लगी — “हमको इस संसार में अपने अस्तित्व पर विश्वास नहीं करना चाहिये बल्कि स्वर्ग में ही अपने अस्तित्व की आशा करनी चाहिये।”

[276] Translated for the word “Prophet”

वहाँ से मोसेस अपनी पत्नी के पास पहुँचा तो उसका हृदय डूबने लगा और उसके चेहरे का रंग उड़ गया। उसको तो यह भी पता नहीं था कि वह जा कहाँ रहा था।

जब वह अपनी पत्नी के दरवाजे पर पहुँचा तो बोला — "मैं मोसेस हूँ, दरवाजा खोलो।"

मोसेस की पत्नी आयी और उसने दरवाजा खोला। मोसेस अन्दर आया। पत्नी ने देखा कि मोसेस के चेहरे का रंग उड़ा हुआ है और उसका हृदय डूबा जा रहा है।

वह बोली — "प्रिय, तुम्हें क्या हुआ है कि तुम्हारा हृदय डूब रहा है और तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ रहा है? क्या तुम्हारे ऊँट खो गये हैं या फिर और कोई वस्तु खो गयी है?"

मोसेस बोला — "मुझे भगवान के अलावा और कौन बुला सकता है और मृत्यु के अलावा और कौन डरा सकता है?"

पत्नी बोली — "क्या वह जो भगवान से आमने सामने हो कर बात करता है उसको भी मरना है?"

मोसेस बोला — "हाँ उसको भी मरना है। अब्राहम[277] भी मर गया है और दूसरे धर्मदूत भी मर चुके हैं।"

मोसेस फिर बोला — "मेरे बच्चे कहाँ हैं?"

पत्नी ने कहा — "वे तो सो रहे हैं।"

---

[277] Abraham, the Prophet

मोसेस बोला — "उन्हें मेरे पास लाओ।"

यह सुन कर मोसेस की पत्नी बहुत ज़ोर से रो पड़ी और रोते रोते बच्चों से बोली — "तुम अपने पिता से उनकी मृत्यु से पहिले ही मिल लो क्योंकि फिर तुम उनको नहीं देख पाओगे।"

ऐसा कहते हुए उसने दोनों बच्चों को सोते से जगाया और दोनों को अपने दॉये और बॉये हाथ का सहारा दिये बाहर ले आयी और बोली — "जाओ और अपने पिता के लिये रो लो क्योंकि वह अब हमसे बिछड़ रहे हैं।"

बच्चों ने पूछा — "हमारे पिता कहॉ हैं?"

वह उनको उनके पिता के पास ले आयी और बोली — "तुम अपने पिता को जी भर कर देख लो क्योंकि थोड़ी ही देर में तुम उनसे बिछड़ जाओगे।"

जब उन्होंने अपने पिता को देखा तो वे मुॅह के बल गिर पड़े और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। मोसेस भी उनके साथ रो पड़ा। फिर बोला — "हम इस धरती पर बिछड़ रहे हैं मेरे बच्चो।"

पत्नी बोली — "और फिर हम कभी एक दूसरे को नहीं देख पायेंगे।"

और मोसेस बोला — "हॉ।"

उसने अपने छोटे पुत्र ऐलाइज़र को अपने दॉये घुटने पर बिठाया और बड़े पुत्र जरशोम[278] को बॉये घुटने पर और उनको आशीर्वाद दिया।

छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा — "आज से, जबसे हम अपने पिता से बिछड़ जायेंगे तो जो हमें प्यार भी करता होगा वह हमें धोखा देगा और जो हमें घृणा करता होगा वह हमें देश निकाला दे देगा।"

मोसेस ने जब अपने बच्चों की यह बात सुनी तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा। उसके साथ धरती और आकाश भी रो पड़े।

भगवान ने मोसेस से पूछा — "मोसेस, तुम क्यों रोते हो? क्या इसलिये कि तुम पृथ्वी छोड़ कर जा रहे हो? या इसलिये कि तुम मृत्यु से डरते हो?"

मोसेस बोला — "ये मेरे दो बच्चे ओर पत्नी मुझे रुला रहे हैं भगवन। क्योंकि मेरी पत्नी के पिता जैथ्रो की मृत्यु हो चुकी है, मेरा भाई आरों भी मर चुका है, और मेरी बहिन मिरियम भी[279]। और अब यदि मैं भी मर गया तो इनको मैं किसके सहारे छोड़ कर जाऊँगा?"

भगवान बोले — "जब तुम पैदा हुए थे मोसेस और तुमको तुम्हारी माता ज़ोरोबैड ने तुमको समुद्र में फेंक दिया था तब क्या मैं

---

[278] Elizer and Jershom – two sons of Moses

[279] Jethro – the father of Moses' wife, Aaron was the brother of Moses and Miriam was Moses' sister

तुमको भूला था? मैंने ही मिश्र के राजा फैरो[280] का मुँह बन्द कर दिया था और ऐसा बन्द किया था कि वह कुछ बोल ही नहीं पाया था।

और मैंने तुमको ऐसा बना दिया था कि फैरो की बेटी टारमुट[281] ने तुमको बहुत प्यार किया और तुमको अपना बच्चा कह कर पुकारा और तुम वहाँ **40** वर्ष तक रहे। अब तुम उठो और इस लाल सागर में डंडा मारो।"

मोसेस उठा और उसने लाल सागर में डंडा मारा। डंडा मार कर जब वह उठा तो वहाँ उसे एक बड़ा सा गोल पत्थर दिखायी दिया।

भगवान ने कहा — "अब इस पत्थर में डंडा मारो।"

मोसेस ने उस पत्थर में डंडा मारा तो वह पत्थर टूट गया और उसने देखा कि उस पत्थर के अन्दर बैठा एक कीड़ा हरी घास खा रहा था।[282]

कीड़ा बोला — "उस भगवान की जय हो जो मुझे आज तक नहीं भूला है जबकि मैं समुद्र की गहराइयों में इस पत्थर के अन्दर पड़ा हुआ था।" मोसेस यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

---

[280] Pharaoh – title of the King of Egypt

[281] Tarmut – the daughter of Pharaoh who brought up Moses like her own child.

[282] After reading this incident I remembered a story of Shiv Paarvatee told in our houses – read this story at http://www.sushmajee.com/shiv/stories/4-feeds.htm

और भगवान बोले — "क्या तुम देख नहीं रहे हो कि मैं इस कीड़े तक को नहीं भूला जो इस गोल पत्थर के अन्दर छिपा हुआ इस समुद्र के अन्दर पड़ा हुआ था?

तो क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे बच्चों को भूल जाऊँगा? तुम्हारे ये बच्चे अब मेरी संरक्षता में हैं। अब तुम अपने बच्चों और पत्नी का चुम्बन लो क्योंकि वे जो तुम्हारे प्राण निकाल कर ले जायेंगे वे उन्हें फिर कभी वापस नहीं लायेंगे। वे बस पास ही खड़े हैं।"

मोसेस की पत्नी मोसेस के गले लग कर खूब रोयी और मोसेस भी उसके साथ खूब रोया।

फिर मोसेस अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ कर घर से चल दिया। उसका हृदय डूब रहा था, उसका चेहरा उतरा हुआ था और उसको रास्ते की भी कोई सुध नहीं थी।

चलते चलते उसे मार्ग में तीन सुन्दर नवयुवक मिले जो एक कब्र खोद रहे थे। वह उनसे बोला — "सुखी रहो और भगवान भी तुमको सुखी रखे। तुम लोग यह कब्र किसके लिए खोद रहे हो?"

वे युवक बोले — "हम यह कब्र भगवान के एक बड़े ही प्रिय व्यक्ति के लिए खोद रहे हैं।"

मोसेस बोला — "यदि तुम यह कब्र भगवान के किसी प्रिय व्यक्ति के लिए खोद रहे हो तो मैं भी तुम्हारी इस कब्र को खोदने में सहायता करता हूँ।"

जब वह कब्र खुद गयी तो मोसेस बोला — "वह शव कहाँ है जिसे तुमको इसमें गाड़ना है?"

उन युवकों ने कहा — "हमें डर है कि यह जगह उसके लिए कहीं छोटी न पड़ जाए जिसको हम गाड़ना चाहते हैं। वह लम्बाई में और आकार में तुम्हारे जैसा है इसलिए तुम इस कब्र में घुस कर हमारे लिये इसे नाप दो।"

और मोसेस उस कब्र में घुस गया। वहाँ उसको मृत्यु दूत मिला और वह उससे बोला — "ओ अमराम[283] के पुत्र सुखी रहो।"

मोसेस बोला — "भगवान करे तुम्हारा यह अभिवादन तुम्हीं को वापस मिले।"

और मोसेस मर गया। उन नवयुवक रूपी देवदूतों ने उसको वहीं गाड़ दिया।



[283] Amram – the father of Moses

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jun, 2022

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**